बख़्तरबन्द रेल 14—69

व्सेवोलोद इवानोव



परिकल्पना प्रकाशन

ISBN:81-87425-16-4
मूल्य: रु. 30.00

बख़्तरबन्द रेल 14–69

वसेवोलोद इवानोव



परिकल्पना प्रकाशन
लखनऊ

अनुवादक—विनय कुमार शुक्ल

ISBN: 81-87425-16-4

मूल्य : रु. 30.00

प्रथम संस्करण : **जनवरी 2006**

परिकल्पना प्रकाशन
द्वारा, जनचेतना, डी-68, निरालानगर,
लखनऊ—226 020 द्वारा प्रकाशित

क्रिएटिव प्रिन्टर्स 628/एस-8, शक्तिनगर, लखनऊ द्वारा मुद्रित

आवरण : **रामबाबू**

BAKHTARBAND RAIL 14-69 by Vsevolod Ivanov

पुस्तक के बारे में

प्रस्तुत लघु उपन्यास 'बख़्तरबन्द रेल 14-69' की गणना बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध की प्रतिनिधि क्लासिकी सोवियत कृतियों में की जाती है।

इसके लेखक व्सेवोलोद इवानोव (1895-1963) का जन्म साइबेरिया के दक्षिणी भाग मे एक छोटे-से गाँव में हुआ था। अक्टूबर क्रान्ति के दौरान इवानोव लाल सेना में भरती हो गये थे। गृहयुद्ध (1918-1920) के दौरान उन्होंने पार्टीज़न के रूप में प्रतिक्रान्तिकारी फ़ौजों से लोहा लिया। उनके ये अनुभव आगे चलकर उनके प्रसिद्ध लघु उपन्यासों के कच्चे माल के रूप में काम आये। गृहयुद्ध की पृष्ठभूमि पर इवानोव ने तीन लघु उपन्यास लिखे : 'पार्टीज़न्स' (1921), 'बख़्तरबन्द रेल 14-69' (1922) और 'रंगीन हवाएँ' (1922)। इसके अतिरिक्त 1927 में उनकी कहानियों का एक संग्रह *'रहस्यों का रहस्य'* भी प्रकाशित हुआ। अपना आत्मकथात्मक उपन्यास *'फ़क़ीर के साहसिक कारनामे'* इवानोव ने 1935 से 1960 के बीच की लम्बी अवधि के दौरान पूरा किया।

वैसे इवानोव की साहित्यिक रचनाएँ क्रान्ति के पहले, 1915 से ही प्रकाशित होने लगी थीं। मक्सिम गोर्की ने उनकी प्रारम्भिक कमज़ोर कहानियों को पढ़कर ही उनकी छुपी हुई प्रतिभा को पहचान लिया था और उसके विकास में सक्रिय भूमिका निभायी थी। 1917 में उन्होंने इवानोव की एक कहानी को एक कहानी-संग्रह में शामिल किया था। गोर्की के जीवनपर्यन्त इवानोव उनके प्रियपात्र बने रहे। गोर्की के बारे में उन्होंने बड़े आत्मीय और मर्मस्पर्शी संस्मरण भी लिखे हैं।

गृहयुद्ध-विषयक इवानोव के तीन लघु उपन्यासों में *'बख़्तरबन्द रेल 14-69'* को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। इसकी गणना गृहयुद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखी गयी फ़देयेव, लाव्रेन्योव, बाबेल आदि की प्रसिद्ध कृतियों के साथ की जाती है।

—कात्यायनी

पटरी के पास छापेमार!

1

आँखों के सामने अंक ही अंक चमक रहे थे : 85, 64 और बर्फ के मनकों की तरह... 0000 भी... कम्पार्टमेण्टों के दरवाज़ों पर, खिड़कियों की चौखटों पर, पेटी पर, रिवाल्वर के कबूर पर। सर्वत्र। कैप्टन नेजेलासोव का वारण्ट अफ़सर ओबाब पलंग पर पड़े 8 के विशाल मांसल अंक जैसा लगता था—स्तेपी की अनन्त सड़कों जैसे विराट कन्धों पर छोटे कटे बालों वाला सिर धँसा था।

उन सिगरेटों तक पर, जिन्हें कैप्टन एक के बाद एक करके राख में बदल रहा था और जिनकी राख ढलवाँ लोहे के बने चीनी देवता की फटी मूर्ति के पेट में झड़ती जा रही थी, अंक और बिस्कुटों जैसे सुडौल अंग्रेजी अक्षर बने थे।

"क्यों?.. फूट रहे हैं जैसे घाव के पीब... किनारे की ओर भाग रहे हैं... हम लोग! सब के सब—शरणार्थी भी और बर्फ में धँसी सरकारें भी... कहा न मैंने आपसे, वारण्ट अफ़सर। फिर कहाँ जायेंगे?... समुन्दर में कूद पड़ेंगे?"

ओबाब ने कैप्टन के चेहरे की टेढ़ी मांसपेशियों पर तिरछी नज़र डाली। रुखाई से उत्तर दिया :

"आपको अपना इलाज करवाना चाहिए। हाँ-हाँ।"

वारण्ट अफ़सर को कोल्चाक की सेना में ही कमीशन मिला था। सभी पुराने अफ़सरों के बारे में वह कहता था : 'बीमारी के सताये'।

कैप्टन नेज़ेलासोव का वह आदर करता था, इसलिए वह फिर से बोला :

"इलाज के बिना ठीक नहीं। आपके लिए।"

नेज़ेलासोव ने हड़बड़ी में सिगरेट निकाली :

"आपका छिलका मोटा है, ओबाब... आपके पल्ले कुछ नहीं पड़ेगा!.."

और जल्दी से राख झाड़कर वह रिरियाते स्वर में बोलने लगा।

"अपनी जगह से कुछ तो सरकें... हूक-सी होती है, ओबाब, दिल में हूक-सी होती है! मातृभूमि ने हमें... लात मार दी! सोच बैठे थे कि उसे हमारी ज़रूरत है, बहुत ज़रूरत है, बेहद ज़रूरत है और लो, अचानक कर दिया हिसाब चुकता हमारा... हिसाब क्या चूतड़ पर लात मार दी गयी!.. चूतड़ पर!!"

और कैप्टन खाँसता, थूक के छींटे और धुआँ फैलाता आवाज़ ऊँची कर रहा था :

"ओ, काहिल और जाहिल गुलामो!"

ओबाब ने झुकते कैप्टन की ओर लम्बा हाथ बढ़ाया मानो गिरते पेड़ को रोक

रहा हो और बल देकर बोला :

"नीच बगावत कर रहे हैं। उन्हें गोलियों से भून डालना चाहिए। और जो कुछ ज़्यादा बेवकूफ़ हैं उन्हें कसके कोड़े लगाने चाहिए।"

"नहीं, ओबाब, ऐसा नहीं किया जा सकता..."

"बीमारी की जड़ हममें है। अतामान* सेम्योनोव को देखो। वहदिमाग़ पर ज़ोर नहीं डालता। सीधे धुनाई करता है।"

"अन्दर सब सूख गया है... वोदका गले से नीचे नहीं उतरती, वहीं अटक जाती है। तम्बाकू से गन्दगी और बू फैली है... सिर में मानो मुर्ग़ी बैठी हो, तीन सौ अण्डे लेकर... उन्हें से रही है। उफ़!.. दिमाग़ में गर्म भाप भरी है!... गर्म, लसीला कुछ खदबदा रहा है, बस अभी खोपड़ी फोड़कर... निकल बहेगा। किसी चीज़ का सामना करना चाहिए पर किसका-न मैं जानता हूँ और न इस हालत में हूँ...

"आपको औरत की ज़रूरत है। औरत की संगत पाये बहुत दिन हो गये क्या?"

ओबाब ने कैप्टन को भावशून्य नज़र से देखा।

"औरत ही इलाज है। ऐसे काम में हर महीने ज़रूरत होती है। मैं तो स्वस्थ हूँ-हर दो हफ़्ते में सेवन करता हूँ। कुनैन की गोली से ज़्यादा फ़ायदा होता है।

"हो सकता है, हो सकता है... आज़माकर देखूँगा। क्यों न देख लूँ आज़माd j ---* *

"देर क्या हे, यहाँ शरणार्थियों में बहुत हैं... गुलाब के फूलों जैसी।"

नेज़लासोव ने खिड़की खोली।

पत्थर के कोयले और तपी ज़मीन की बू आने लगी। केंचुओं से भरे मर्तबान की तरह लोगों से खचाखच भरा स्टेशन पसीजा हुआ था। उसकी दीवारें और दरवाज़े के पास लटकी घण्टी नमी से ढकी चमक रही थीं। लोगों पर पलायन का ठप्पा लगा हुआ था।

नयीनिब की तरह साफ़-सुथरा स्कूल टीचर जा रहा था और उसके कन्धे पर पड़ा मैला कपड़ा फड़फड़ा रहा था। युवतियों के बाल बिखरे थे और एक गाल, गुलाबी-सलेटी-सी, पिचका था : शायद तकिये कड़े थे, क्या पता तकिये ही नहीं-बोरी पर सिर रखकर सोना पड़ता हो।

"लोग बिगड़ रहे हैं," ओबाब ने सोचा। उसका जी शादी करने को हुआ। "परिवार में बढ़िया रहेगा..."

वह रूमाल में थूककर बोला :

"बकवास!"

नेज़ेलासोव तार के धूसर, खुरदरे क़ागज़ को मरोड़ रहा था। तार पर भी वैसे ही अंक ही अंक थे जैसे सर्वत्र। हमेशा की तरह ओबाब की पुतलियाँ धुँधली-सी हो गयीं। फड़फड़ाते स्वर को थूक से गीला करके वह बोला :

* अतामान—कज़्ज़ाकों का प्रमुख।

"फिर से?"

"क्या फिर से?.. क्या बात है?"

ओबाब और नेजेलासोव खिड़की से झाँके।

शरणार्थी सहमे-सहमे डिब्बों के फौलादी बख़्तर को निहार रहे थे। लगता था कि माल के डिब्बों पर लगीं तोपें उसे घूरकर देख रही है और वह बिल्कुल नंगा है। नंगा नेजेलासोव हड़ीला, पिचके टिन के समान है : नुकीला और सलेटी मुलायम खाल।

ओबाब के कन्धे के ऊपर से वह व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोला :

"हमें अपना रक्षक मान बैठे हैं... हम भी महावीर हैं! तार में लिखा है : रेल की पटरी के पास वेर्शीनिन का दस्ता देखने में आया है... शहर में..."

ओबाब पैर घसीटकर खिड़की के पास से हटा :

"यहूदिये हैं, कैप्टन। शहर में भी यहूदिये भरे पड़े हैं और वेर्शीनिन के यहाँ भी। सिगरेट दीजिये।"

"जापानी आयेंगे। पानी भरने का हुक्म दे दीजिये... लाज़मी तौर पर... अभी।"

"और वे जो दिखायी दिये? फिर से! चैन नहीं आपको।"

ओबाब ने अपने लम्बे, रस्सी जैसे हाथों को जाँघ पर पटका।

"मुझे पसन्द है।"

अपने ऊपर नेजेलासोव की निस्तेज पुतली को टिका देखकर वारण्ट अफ़सर बोला :

"मेरा मतलब मौत से नहीं। बल्कि चलते रहने से है। खड़े-खड़े तो मांस को भी जंग लग जाता है..."

ओबाब ने गरिमा के साथ उसाँस छोड़ी। रई की सूखी रोटी के टुकड़ों जैसे नुकीले, पसीने से नम कपोल किसानों जैसी उसाँस के साथ हिले।

"हमारे यहाँ आजकल बरनाऊल जिलले में... फसल की कटाई चल रही है। हाथों में खुजली हो रही है, लगाम सँभालने को..."

नेजेलासोव ने उछलकर खड़े होते हुए हड़बड़ी में पूछा :

"वारण्ट अफ़सर... हमारा कमाण्डर कौन है?.. कौन है हमारा अफ़सर?"

"जनरल स्मिर्नोव।"

"अच्छा? तो वह कहाँ है?"

"छापेमारों ने उसे फ़ाँसी दे दी।"

"अच्छा?.. ठीक। मतलब अगला। कौन है?"

"अगला?"

"आपसे पूछा जा रहा है..."

"लेफ्टिनेण्ट जनरल साखरोव।"

"अच्छा?.. वह कहाँ है, कहाँ है वह?"

"मुझे नहीं पता।"

"अच्छा... आर्मी कमाण्डर कहाँ हैं?"

कैप्टन ने पेटी कसी और वह ज़ोर से चिल्लाना चाहता था : तो फिर बक-बक मत कीजिये–सीधे जाकर हुक्म पूरा कीजिये," पर इसके बजाय उसने मुँह फेर लिया और ऊब में उँगली से चौखटे के रंग से खरोचते हुए उसने धीरे से पूछा :

"वारण्ट अफ़सर, हमें किसका कहना मानना चाहिये?... क्यों? तार के अनुसार हमें किसका... रुकिये।"

ओबाब ने लोहे के देवता के पेट पर चट से नाखून बजाया, उसने दिमाग़ में किसी विचार को पकड़ने की कोशिश की पर वह हाथ से फिसल गया।

"मुझे नहीं पता... पानी भरवाना है तो पानी सही... फायर करना है तो फायर करेंगे–बात साफ़ है।"

और ऐसे हँस की तरह, जिसके डैने अभी उगे नहीं, ओबाब अपनी बिरजिस को फड़फड़ाता डिब्बे के गलियारे में बड़बड़ाता हुआ जा रहा था :

"मेरी ड्यूटी नहीं हैं... सोचने की... मैं क्या हूँ... कारतूस की पेटी, मैगजीन। मुझे क्या पड़ी है... कहाँ है, कहाँ है?"

2

नीले फ्रांसीसी गेटर और बड़े-बड़े बूटे पहने दुबले सिपाही ने हड़बड़ाकर सिलूट मारा।

नेजेलासोव का जी प्लेटफार्म पर धक्के खाने को नहीं कर रहा था इसलिये वह बख़्तरबन्द रेल के फौलाद की चादरों से ढके डिब्बों के पीछे से होता हुआ पलायन करते शरणार्थियों से भरे माल के डिब्बों के बीच टहल रहा था।

"रूस की किसी को ज़रूरत नहीं," उसने शर्म के साथ सोचा और यह याद करके उसके गाल लाल हो गये : "और तू इस रूस में है।"

भारी कूल्होंवाली औरत ने जिसके गालों पर लाली पुती थी उसके बदन में ओबाब के प्रस्ताव को सुगबुगा दिया। कैप्टन ज़ोर से बोला :

"बेवकूफ़!"

औरत ने मुड़कर देखा : आँखें उसकी धुँधली, दुख भरी थी और छोटा माथा गहरी झुर्रियों से ढका था।

नेजेलासोव ने मुँह फेर लिया।

माल के डिब्बों की बाहरी दीवारें कत्थई पड़ चुके तख़्तों की थीं। जोड़ों में बदरंग काई जमी हुई। हैंडलों की जगह पेटियोंवाले दरवाज़े धड़ाम से बन्द हो रहे थे। डिब्बों में दरवाज़ों के पास कीलों पर टँगी, जालों जैसी बोरियों में मांस, हलाल मुर्ग़े-मुर्ग़ियाँ, मछलियाँ भरी थीं। कुछ डिब्बों के दरवाज़ों के ऊपर फर वृक्ष की टहनियाँ लटकी थीं

और ऐसे डिब्बों से तरुण महिला स्वर सुनाई देते। और एक डिब्बे में तो कोई प्यानो बजा रहा था।

माल के डिब्बों से पसीने और पोतड़ों की बू आ रही थी। पटरी के पास कुचले मैले से अमोनिया की तीखी दुर्गन्ध उठ रही थी। एक और माल के डिब्बे के पास उकड़ूँ बैठा सिपाही काँप रहा था, उसके पीले दाँतों को भेदकर कराह फूट रही थी :

"ओह-ह-ह-ऊ-फ।"

"पेचिश है," कैप्टन ने सिगरेट सुलगाते हुए सोचा। "मतलब, टिकट कर गया इसका।"

शर्म और कहीं पाँवों में छिपे बैठे दूरस्थ आक्रोश की अनुभूति कम न हो रही थी।

चापड़ पीठवाला बूढ़ा कठिनाई के साथ भारी कुल्हाड़ा उठाता अधगले स्लीपर को फाड़ रहा था।

"दूर से आये हो?" नेजेलासोव ने पूछा।

बूढ़े ने उत्तर दिया :

"सीजरान से।"

"कहाँ जा रहे हो?"

उसने कुल्हाड़ा ज़मीन पर टिकाया और चटके सलेटी नाखूनोंवाले नंगे पाँव को ज़मीन पर रगड़ता मलिन स्वर में बोला :

"जहाँ ले जायेंगे।"

उसका, बच्चे की मुट्ठी जैसा बड़ा टेंटुआ लटकी झुर्रियों से ढका था जो बोलते समय तन जातीं और चमड़ी की साफ़, सफ़ेद धारियाँ दिखायी पड़ती।

"लगता है, बोलने का... कम ही मौका मिलता है," नेजेलासोव ने सोचा।

"सीजरान में मेरी तो ज़मीन है," स्नेहिल स्वर में बूढ़ा बोला, "उम्दा काली मिट्टीवाली। ज़मीन नहीं सोना है, सोना–चाहो तो सिक्के ढाल लो... और अब, देखो, छोड़ आया।"

"दुख होता है?"

"जाहिर है, दुख होता है। पर छोड़ आया। वापस जाना पड़ेगा।"

"वापस तो बहुत दूर जाना पड़ेगा..."

बूढ़े ने कुल्हाड़ा थामे हुए, हल्के-से सिर हिलाया। फिर उसने कन्धे उचकाकर सिसकार के साथ ज़ोर से उसाँस ली :

"हाँ, बहुत दूर... कहते हैं, जनाब पटरी के पास वेर्शीनिन आ धमका है।"

"झूठ है। कोई नहीं है।"

"अच्छा? मतलब, झूठ बोलते हैं!" बूढ़े ने सजीव होकर कुल्हाड़ा घुमाया। "कहते हैं कि रास्ते में मार-काट करता जाता है। बेरहमी से, ढोर-डंगरों तक को नहीं बख़्शता। कहते हैं कि बस बख़्तरबन्द रेलगाड़ी पर ही आस है। बस उसी पर। देखो तो...

मतलब, आप कहते हैं नहीं है?"

"कोई नहीं है..."

"यह तो बिल्कुल बढ़िया बात है, जनाब। ऐसे तो क्या पता व्लादीवोस्तोक तक ही पहुँच जायें... देख लेंगे। आप ही बतायें मैं उल्टा कहाँ लौटूँगा?"

"सफ़र नहीं झेल पाओगे... तुम फ़िक्र मत करो... हाँ-हाँ।"

"यही तो कहता हूँ—रास्ते में ही मर जाऊँगा।"

"यहाँ अच्छा नहीं लगता?"

"लोग पराये हैं। हमारे लोग तो प्यार से बात करते हैं पर यहाँ के तो बात ही नहीं करना जानते। चीनी जो हैं—वे तो रूसी भाषा ही नहीं समझते। और रहते ऐसे हैं कि भगवान ही जाने! खोटी ज़िन्दगी जीते हैं। यहाँ तो रहकर कीड़े पड़ जायेंगे। अगर बात यह तो वापस न चला जाऊँ? सब छोड़-छाड़कर लौट जाऊँ? क्या पता बोल्शेविक भी हमारे जैसे ही आदमी हों, क्यों?"

"मुझे नहीं पता..." कैप्टन ने उत्तर दिया।

3

शाम को स्टेशन पर धुआँ छा गया। जंगल चल रहा था।

धुआँ हल्का, उष्म था और चारों ओर राल की गन्ध भर गयी।

स्टेशन की ईंटोंवाली इमारतें, मिट्टी के मग्गे जैसी पानी की टंकी, चीनी झोंपड़ और सोरघम के पीले खेत नीले-से फेन में लिपट गये और लोगों के चेहरे पीले पड़ गये।

वारण्ट अफ़सर ओबाब उन्हें देख ठहाके मार रहा था :

"पदोड़े कहीं के!.. अबे, घबराओ मत!.."

और उसके लम्बे हाथ ज़ोर-ज़ोर से हवा में ऐसे उछल रहे थे मानो मुँह से निकलते ठहाकों को लपक रहे हों।

धूसर चेहरेवाली टी.बी. की मरीज जैसी शरणार्थिन, कत्थई मखमली लबादे पर मिसरी के कूंजे बाँधनेवाली डोर से फेंटा लगाये, छोटे-छोटे कदम रखती स्टेशन पर दौड़ रही थी और फुसफुसाकर बता रही थी :

"छापेमार आ गये... छापेमार... टैगा को आग लगा दी... और गोलियों से भून रहे हैं... वेर्शीनिन आ रहा है..."

एक साथ वह सभी बारह रेलगाड़ियों में दिखायी पड़ी। मखमली लबादा उसका राख से ढँक गया था, पिचकी कनपटियाँ पसीने से तर थीं। सभी को भूख जैसी उदास आकुलता महसूस हो रही थी।

बड़े सिर और बर्फ़ जैसी पारदर्शी सफ़ेद मूँछोंवाला स्टेशन कमांडेंट जिसे सिपाही 'चौमंजिला' कहते थे, लोगों को शान्त कर रहा था :

"और आप लोग मन की शुद्धता बनाये रखें। घबराइये मत।"

"चिता शहर पर कब्ज़ा हो गया!.. व्लादीवोस्तक में बोल्शेविक हैं!"

"ऐसी कोई बात नहीं है। आप लोगों के कान बेहद तेज हैं। चिता के साथ हमारा सम्पर्क है। अभी-अभी टेलीग्राफ से अंग्रेज जनरल नाक्स की आया को खोज रहे थे।"

और गले में हँसी के अशोभनीय फौव्वारे को दबाकर, वह शब्दों को तौल-तौलकर बोला :

"अंग्रेज जनरल नाक्स की आया खो गयी। ढूँढ़ रहा है। ईमान देने को कहा है। डिप्लोमैटिक आया कोई मज़ाक नहीं, कहीं कोई छापेमार बलात्कार न कर डाले।"

जामन की बौर जैसे घुँघराले सफ़ेद बालोंवाले लड़के ने डिब्बों पर पोस्टर और सुप्रीम हेडक्वार्टर की विज्ञप्तियाँ चिपका दीं। और हालाँकि किसी को यह नहीं पता था कि यह सुप्रीम हेडक्वार्टर है कहा और बोल्शेविकों से लड़ कौन रहा है पर फिर भी सब लोग उत्साहित हो गये।

पानी की कुनकुनी धाराएँ ज़मीन पर पड़ने लगीं। बिजली कड़की। टैगा वन ज़ोर-ज़ोर से सरसराने लगा।

धुआँ छँट गया। पर जब बारिश ख़त्म हुई और आकाश में इन्द्रधनुष तन गया, फिर से नीले धुएँ के बादल उमड़ आये, फिर से गर्मी और घुटन छा गयी। चिपचिपा कीचड़ पैरों को जकड़ रहा था।

नम जोतों की सौंध आ रही थी और चीनी झोंपड़ों के पीछे सोरघम की भीगी फसल मन्द-मन्द सरसरा रही थी।

अचानक पानी की टंकी के पीछे से दो कज़्ज़ाक सार्जेण्ट मेजर की लाश उठाकर प्लेटफार्म पर लाये। उसका माथा फटा था, उसकी नाक और ललौंही मूँछों पर खून के काले-लाल थक्कों के साथ भूरा भेजा जैली की तरह हिल रहा था।

"उसे छापेमारों ने मारा है..." डोर को फेंटा लगे लबादेवाली शरणार्थिन फुसफुसायी।

"वेर्शीनिन... उन्होंने..."

रेलगाड़ियों ने कत्थई डिब्बों में तहलका मच गया और कानाफूसी होने लगी :

"छापेमार... छापेमार..."

कैप्टन नेजेलासोव ने अपनी गाड़ी का मुआयना किया।

एक डिब्बे के पायदान के पास खड़ी कत्थई लबादेवाली शरणार्थिन हड़बड़ी में सिपाहियों से पूछ रही थी :

"आपकी गाड़ी हमें छोड़कर तो नहीं चली जायेगी?"

"परेशान मत कीजिये," अचानक इस तीखी नाकवाली औरत के प्रति घृणा से भरकर नेजेलासोव बोला। "बात करने की मनाही है!"

"कैप्टन, वे तो हमें मार डालेंगे!.. आप तो जानते ही हैं!.."

धड़ाम से दरवाज़ा बन्द करके कैप्टन नेजेलासोव चिल्ला पड़ा :

"जहन्नुम में जाओ!"

फिर से तार आ गया। उसमें किसी ने ऊटपटाँग, शब्दों के बीच ऊब के भी अंकों को ठूँस-ठूँसकर, आदेश दिया था वेर्शीनिन के गिरोहों को खदेड़ने का जो रेलवे लाइन के आस-पास जमा हो रहे हैं। और अन्त में किन्हीं जापानियों, इटालियनों का उल्लेख था...

"तार नम्बर बारह हज़ार पाँच सौ इकतालीस, देख रहे हैं!.. आदेश है, वारण्ट अफ़सर, मैं कहता हूँ आदेश है... पर कौन है वहाँ जो आदेश देने का साहस करता है? कौन है वह?"

गोल-मटोल भोला-भाला इंजन राहत की साँस लेकर प्लेटफार्म पर जापानी फौजियों के छः डिब्बे खींच लाया। उसके पीछे दूसरा था। पीले सिरों वाले पक्षियों की तरह साफ़-सुथरे नाटे लोग प्लेटफार्म पर फुदकने लगे।

जापानी अफ़सर को कैप्टन नेजेलासोव बख़्तरबन्द रेलगाड़ी के इंजन में मिला। रिवाल्वर के कबूर को सहलाते और कोहनियों को हौले-हौले हिलाते हुए जापानी, 'र' का सही उच्चारण करने का प्रयास करते हुए धीमे-धीमे रूसी में बोल रहा था :

"मैं... तानाको मूतत्सो है लेफ्टिनेण्ट... मेले को... मे-र-रे को तुमा-र-र-ले पास बेजा गया है।

और अचानक आवाज़ ऊँची करके, शायद उसने यह कण्ठस्थ कर रखा था, चिल्लाया :

"सफाया!.. सफाया!..."

वहीं पास ही में अमरीकी संवाददाता खड़ा था—वह चमकीले हरे बटनोंवाली मुफ्ती और धारीदार जुराबें पहना था। वह भी स्टेशन पर जल्दी-जल्दी नज़रें दौड़ा रहा था और फटाफट पेंसिल चलाते हुए रटे-रटाये सवाल पूछे जा रहा था :

"और ये?.. और ये?.. क-क-या?.."

ओबाब और एक अन्य अफ़सर पसीने से तर होते और खाँसते हुए उसे सब समझा रहे थे।

"ठीक है," नेलेजासोव बोला।

"ओबाब, डिब्बे जोड़ने का हुक्म दे दीजिये... जापानियोंवाले।"

उसने धड़ाम से फौलाद का भारी दरवाज़ा बन्द कर दिया।

"चल, चल!.." वह चीख-चीखकर माँ-बहन की गालियों के साथ आदेश दे रहा था। और उसके अन्तर्मन की गहराइयों में कहीं शरणार्थियों की गाड़ियों से बख़्तरबन्द रेलगाड़ी नम्बर 14-69 में घुसती पीड़ा को अपनी आँखों से देखने, अपने हाथों से छूने की इच्छा बढ़ती जा रही थी।

कैप्टन नेजेलासोव रिवाल्वर से लोगों को धमकाता रेलगाड़ी के अन्दर इधर-उधर दौड़ रहा था और उसे इतने ज़ोर से चिल्लाने की इच्छा हो रही थी कि उसकी चीख रेल के डिब्बों की नमदे और इस्पात से मढ़ी दीवारों को फोड़ दे... आगे वह यह नहीं समझ पा रहा था कि उसे ऐसी चीख की क्या आवश्यकता हो सकती है।

मैले-कुचैले सिपाही अपने चौकोर चेहरों को हिमखण्ड की तरह कड़ा करते और तनकर खड़े हो जाते। वर्दी के बेकार लत्ते आराम से चलने-फिरने में तकलीफ दे रहे थे। फौलाद की तोपों के पास सिपाहियों को कपड़े उतारे देखने की इच्छा होती थी और उनके मन में सुलगते भय को महसूस करने की इच्छा न होती।

वारण्ट अफ़सर ओबाब तेजी से चुपचाप कैप्टन के पीछे-पीछे चल रहा था।

बफर टकराये। गार्ड ने थोड़ी-सी सीटी बजायी, बेंच से लोहे की बाल्टी खड़खड़ाकर गिरी और पटरियों को अपने बोझ से ज़मीन पर दबाते हुए, स्टेशनों, कांटेवालों की गुमटियों, धुएँ से ढके वन और पहाड़ियों की नम और गर्म हवा से नहायी चट्टानों को पीछे छोड़ते हुए रेल के भारी फौलादी डिब्बे अपने उदर में उदासी और आक्रोश से भरी सैकड़ों मानव देहों को समाये हुए अंधकार में उड़े जा रहे थे।

4

और उसी समय चीनी सिन बिन-ऊ कार्क के पेड़ की छाया में घास पर लेटा अपनी चुंधी आँखों को मूँदे यह गीत गा रहा था कि कैसे लाल अजदाह ने चेन हुआ नाम की युवती को बन्दी बना लिया।

युवती का मुख था जिनसेंग के मूल जैसा चिट्टा और आहार था उसका उ-वेई-ची-, मुर्ग़ों की कलगियाँ, माझू, आँख की पुतलियों जैसी खुमियाँ, जेन-चाई-त्साई। यह सब था ढेरों और था सब बेहद स्वादिष्ट।

पर लाल अजदाह ने चेन हुआ के जीवन द्वार को जीत लिया और तब पैदा हुआ बागी रूसी।

छापेमार पास ही में बैठे थे और पेन्तेफ्ली ज्नोबोव हर्ष के साथ अपने फुदकते दाँतों के बीच से अडिग विश्वास भरे शब्दों को निकालता हुआ चिल्ला रहा था :

"भाग रहे हैं, भाइयों मेरे, भाग रहे हैं। दिल दहल गया, ज़मीन पर गिरकर छटपटा रहे हैं। और हमारा काम है—सो न जायें, अरे शहर को तो वह ले लेगी!.. ताकत है ताकत। सब ले लेगी!"

हवा में पत्थरों और समुद्र की गन्ध बसी थी।

दूर देश का परदेशी

5

"संयुक्त रूसी-जापानी टुकड़ी ने बख़्तरबन्द रेलगाड़ी नं. 14-69 के समर्थन से वेर्शीनिन के छापेमार गिरोह तितर-बितर कर दिये हैं।

हमारे 42 लोग मारे गये, 115 घायल हुए। मित्र राष्ट्र के सैनिकों का हौसला बेहद ऊँचा है। पहाड़ियों में दुश्मन का पीछा जारी है।

बख़्तरबन्द रेलगाड़ी नं. 14-69 का कमाण्डर कैप्टन नेज़ेलासोव

नं. 8701-7-19

6

और फिर :

छः दिन से काया गर्म पत्थरों, घुटन में तड़पते पेड़ों, चरमराती पकी घास और सुस्त हवा महसूस कर रही थी।

और काया उनकी पहाड़ियों की चट्टानों जैसी, पेड़ों जैसी और घास जैसी थी और यह गर्म, शुष्क काया सँकरी पहाड़ी पगडंडियों पर लुढ़क रही थी।

कन्धों पर लटकी भारी बन्दूकों से कमर में टीस हो रही थी।

पाँव ऐसे दुख रहे थे मानो बर्फ़ीले पानी में डूबे हों और सिर का हाल वही था जो सूखे गन्ने का—न रस, न गूदा—अन्दर से खोखला।

छः दिन से छापेमार पहाड़ियों में जा रहे थे।

कभी-कभी कज़्ज़ाक टोह दल सन्तरियों पर हमला कर देता। तब पकी फलियों के फटने की आवाज़ की तरह गोलियाँ चलती सुनाई पड़ती।

और पीछे—रेलवे लाइन के किनारे-किनारे और भीतरी इलाकों में : खेतों और जंगलों में—अतामानी, चेक, जापानी और कई अज्ञात देशों के लोग गाँव जला रहे थे और खेत रौंद रहे थे।

छः दिन से थोड़ी-थोड़ी देर के लिये, मानो प्रार्थना के लिये रुकते हुए, दो सौ छापेमार परिवारों और माल-असबाब के साथ आगे जाते कारवाओं को पीछे से ओट प्रदान करते हुए चोर पगडण्डियों पर थके-हारे चल रहे थे। वे पथ से इतना ऊब गये थे कि अकसर पगडण्डियों से उतरकर पत्थरों के बीच से, झाड़ियों को तोड़ते चींटियों के विराट बिलों जैसी लगनेवाली पहाड़ियों की ओर नाक की सीध में चलने लगते।

7

चट्टान से सटकर चीनी सिन बिन-ऊ अपने पास से दस्ते को आगे गुजरने दे रहा था और हर मर्द से वह गुस्से में कहता :

"जापान को पिटाना था... खूब ज़ोर से पिटाना था!"

और बाँहें फैला-फैलाकर दिखा रहा था कि जापानी को कैसे पीटना चाहिये।

वेर्शीनिन रुककर वास्का ओकोरोक से बोला :

"जापानी हमारे लिये शेर से भी बुराहै। शेर तो मान्जू* को खाने से पहले उसके लत्ते उतार देता है, उसे हवा खिलाने के लिये। पर जापानी यह सब नहीं देखेगा, वह तो चप्पलों समेत उसे हजम कर लेगा।"

चीनी अपने बारे में बात को सुनकर खुश हो गया और उनके साथ चल पड़ा।

छापेमारों के क्रान्तिकारी मुख्यालय का अध्यक्ष निकीता वेर्शीनिन खजांची वास्का ओकोरोक के साथ दस्ते के पीछे-पीछे चल रहा था। उसकी आटे की बोरी जैसी फली सूती मखमल की बिरजिस घोड़े के खुरों जैसे उसके विशाल घुटनों पर कसी हुई थी और उसका समुद्री हवा से फटा चेहरा मलिन था।

वास्का ओकोरोक वेर्शीनिन की दाढ़ी को थकी-थकी और स्वप्निल आँखों से ताकता ऐसे चस्के लेते हुए बोलने लगा मानो विश्राम की बात कर रहा हो :

"रूस में तो निकीता येगोरिच, ज़रूर बाबुल की मीनार बनाके रहेंगे। और हमको ऐसे बिखेर देंगे जैसे बाज चूजों को, देख लेना! ताकि एक दूसरे को न पहचान सकें। यह मैं कहे देता हूँ। निकीता येगोरिच, देसी शराब पियोगे? और तुझे थोथे चने जापानी की तरह ठेंगा मिलेगा! अरे, हमारा सिन बिन-ऊ तो तब रूसी में गाने लगेगा। क्यों?"

पहले वास्का सोने की खान में काम करता था और बोलता ऐसे है मानो उसे सोने का डला मिला हो और उसे न अपने पर विश्वास हो न दूसरों पर। सिर उसका ललौंहे, घुँघराले बालोंवाला है, जिसे वह आलस से मटकाता है। वह मानो समुद्र से आती गर्म, थकी हवा, मिट्टी और पेड़ों की तपी, उदासी भरी गन्धों में घुल रहा हो।

वेर्शीनिन ने रायफल उतारकर दायें कन्धे पर लटकायी और बोला :

"तुझे क्या चैन नहीं आता, वास्का? वैसे भी क्या कम मुसीबतें झेली हैं?"

ओकोरोक अचानक जल्दबाजी में, थकान को भुलाकर ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा :

"नहीं लगता अच्छा!"

"अपना ही माल बरबाद कर रहे हैं। खेत, फसलें, घर वगैरह। और सबकी कीमत

* मान्जू—चीनी (स्थानीय बोली में)।

चुकानी पड़ेगी। इसके लिये कष्ट झेलने पड़ेंगे।''

''जापानी के साथ, निकीता येगोरिच, सख्ती की ज़रूरत है। उनके पेटों में मिट्टी भर दी ओर डाल दिया समुन्दर में।''

''जापानी लोग छोटे हैं, और छोटों से क्या आशा की जा सकती है? ओछे लोग हैं। बस ऐसे ही, सिगरेट की तरह—कहने को पीने की चीज़ है, धुआँ भी देती है—पर बस नाम ही है। और पाइप को लो, यह बिल्कुल दूसरी बात है।''

जंगलों और पहाड़ियों में राहों और पगडण्डियों के पाटों में कलकल करती, मन्द-मन्द थकान भरे फूत्कारों के साथ लोगों, ढोरों, छकड़ों और लोहे की धाराएँ बह रही थीं। ऊपर चट्टानों के बीच देवदार के स्याह पेड़ मनहूस चमक के साथ दिखायी दे रहे थे। टूटी टहनियों जैसे दिलों को तपिश सुखा रही थी और दहकती ज़मीन पर पाँवों को टिकने की जगह न मिल रही थी।

पीछे फिर से गोलियाँ चलने की आवाज़ गूँजी।

कुछ छापेमार दस्ते से निकलकर जवाब देने के लिये तैयार हो गये।

ओकोरोक के चेहरे पर चौड़ी मुस्कान फैल गयी : ''आज कारवाँ देखने गया था। क्या मज़ा आया!..''

''सच?''

''मुर्ग़ा बाँग दे रहा है। मुर्ग़े-मुर्ग़ियों, हंसों-बत्तखों को पहाड़ियों में ले जा रहे हैं। मैं उनसे बोला—काटके खा लो नहीं तो बाद में छोड़कर भागना पड़ेगा।''

''नहीं, यह ठीक नहीं। ढोर-डंगर के बिना आदमी हरगिज नहीं रह सकता। ढोरों के बिना तो वह बोझ से छूट जायेगा। पर दिल का बोझ तो...''

सिन बिन-ऊ चीनी और टूटी-फूटी रूसी की खिचड़ी बनाकर ज़ोर से बोला :

''कज़्ज़ाक बुरे हैं! जापानी हरामजादे औरतों को उठा ले जाते हैं। कज़्ज़ाक बहुत ख़राब हैं! लाल रूसी...''

होंठ तिरछे करके वह दाँतों के बीच से थूका और उसका सुनहरी रेत के रंग का, खरबूजे की गिरियों जैसी छोटी चुंधी आँखोंवाला चेहरा हर्ष के साथ मुस्करा उठा...

''शांगों!...*''

सिन बिन-ऊ ने हाथ नचाकर अपना अनुमोदन व्यक्त किया।

पर हमेशा की तरह छापेमारों के ठहाकों को अनसुना करके चीनी निरानन्द स्वर में बोला :

''बुरी बात है।''

और उसने उदासी के साथ अपनी नज़रें घुमायीं।

छापेमार दवानल के कारण अपनी माँद छोड़कर भागते सकपकाये और क्रुद्ध जंगली सूअरों के झुण्ड की तरह पहाड़ियों की ओर जा रहे थे।

* शांगो—अच्छे (चीनी)

और जन्मभूमि अपने बेटों को आसक्ति के साथ खींच रही थी—पाँव उठ नहीं रहे थे। कारवाओं में घोड़े मुड़-मुड़कर पीछे देखते और पतली आवाज़ में क्रन्दन भरी हिनहिनाहट करते। भौंकना भूल चुके कुत्ते चुपचाप दौड़ते चल रहे थे। छकड़ों के पहियों से अपने घर की अन्तिम धूल और अन्तिम अलकतरे के कण झड़ रहे थे।

दायीं ओर खड्डों में काले-काले से बलूत और शुभ्र अंगू वृक्ष दिखायी दे रहे थे।

बायीं ओर शान्त, गहरा हरा, बालू और शैवाल की गन्ध उड़ाता सागर फैला था—किसी भी तरह उसका पीछा नहीं छूट रहा था।

वन सागर की तरह फैला था और सागर वन की तरह, बस फर्क इतना था कि वन का रंग कुछ अधिक गहरा, लगभग गहरा नीला था।

छापेमार पश्चिम की दिशा निरन्तर ताकते जा रहे थे और पश्चिम पहाड़ियों की गुलाबी-सी चट्टानों पर सुनहरी आभा छिटकी थी और लोग अपनी नज़रों की नाव पर सवार होकर पेड़ों की फुनगियों के बीच से उनकी ओर तैरते जाते और फिर आहें भरते, उनकी इन आहों से काफिलों के घोड़े कनौतियाँ बदलकर ऐसे सिहर जाते मानो उन्हें भेड़िये की गन्ध लगी हो।

और चीनी सिन बिन-ऊ को लग रहा था कि ये लोग पश्चिम में गुलाबी चट्टानों के पीछे कुछ भिन्न, मनोवांछित चीज़ देखना चाहते हैं।

चीनी को गाने की इच्छा हो रही थी।

निकीता वेर्शीनिन पुश्तैनी मछेरा था।

सागर के बिना वह उदास था, पानी ही उसका जीवन था और उसकी उँगलियाँ जाल की तरह थीं : कुछ न कुछ उनमें फँस ही जाता था।

बीवी उसे बर्बोट मछली की तरह मोटी और मुलायम मिली। बच्चे उसने पाँच जने—हर बार शरत के मौसम में जब हेरिंग का शिकार होता है, क्या पता इसीलिये बच्चे हेरिंग के रुपहले शल्कों की तरह रुपहले बालोंवाले थे।

मछलीमारी में भाग्य ने सदा उसका साथ दिया, पूरे इलाके में उसके, 'वेर्शीनिन' के भाग्य की धूम मची थी इसलिये जब जिले ने जापानियों और अतामान सेम्योनोव का मुकाबला करने का फ़ैसला किया तब निकीता येगोरिच वेर्शीनिन को ही क्रान्तिकारी मुख्यालय का अध्यक्ष चुना गया।

जिले के नाम पर बच्चों और लुगाइयों को पहाड़ियों में ले जानेवाले छकड़े ही बचे थे। पेर्म के गाँवों से यहाँ, इस जंगली धरती पर आये अपने दादे-परदादों की तरह ही फिर से जीवन को बसाना था—पता नहीं सफलता मिलेगी भी या नहीं।

बहुत कुछ समझ के परे था और बीवी जवानी की तरह बच्चे की चाह रखती थी।

सोचना दूभर हो रहा था, वापस लौटकर जापानियों, अतामानियों और इस तुष्ट सागर पर गोलियाँ चलाने की इच्छा होती जो अपने टापुओं से ऐसे लोगों को यहाँ

भेज रहा था जिन्हें सिर्फ़ हत्या करना ही आता है।

खड्ड के कगार पर गोला पत्थरों ने रास्ता रोक रखा था और चट्टान से बाँधकर रस्सियों से छज्जे जैसा झूला पुल बना गया। पहाड़ी नाले की धारा गोला पत्थरों से टकराती बह रही थी और नीचे पत्थरों के बीच जल-प्रपात की तरह फेन उमड़ रहा था।

झूला पुल को पार करके वेर्शीनिन ने पूछा :

"पड़ाव डालें, क्या?"

मर्दों ने रुककर सिगरेटें सुलगायीं।

पड़ाव न डालने का फ़ैसला किया गया। दाव्या गाँव को पार करके थोड़ी दूर पर ही पहाड़ियाँ हैं और पहाड़ियों में रात को आराम किया जा सकता था।

दाव्या गाँव की चरागाह के पास एक किसान गर्रे घोड़े को दौड़ाता आया, उसके पाँव नंगे थे और सिर पर कपड़े की पट्टी बँधी थी। वह बोला :

"निकीता येगोरिच, हमारे यहाँ लड़ाई हुई थी।"

"हुई किसके साथ?"

"गाँव में। जापानी हमारेवालों से लड़े। ढेरों लोग खेत रहे। जापानी तो चला गया—खदेड़ दिया उसे, पर आस है कि कल आ जायेगा। बस इसीलिये हम अपना बोरिया-बिस्तर बाँध रहे हैं और आपके साथ पहाड़ियों में जाने की सोच रहे हैं।"

"ये हमारेवाले हैं कौन?"

"भइया, मुझे नहीं पता। आपके जिले के नहीं होंगे। वे भी ईसाई भाई हैं। उनके पास मशीनगनें हैं, बढ़िया मशीनगनें। ऐसी बरसाती हैं गोलियाँ कि पूछो मत। वे भी पहाड़ियों से हैं।"

"देख लेंगे।"

गाँव की चौड़ी सड़क पर छकड़े, लोगों और ढोरों के शव पड़े थे।

एक जापानी जिसके गले में संगीन घुसी हुई थी एक रूसी के ऊपर पड़ा था। रूसी की लम्बी नीली आँख गाल पर निकली पड़ी थी। खून से लथपथ फ़ौजी क़मीज़ पर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं।

चार जापानी बाड़ के पास औंधे पड़े थे मानो शर्म के मारे उन्होंने मुँह छिपा रखा था। उनकी खोपड़ियाँ चकनाचूर थीं। उनकी साफ़-सुथरी वर्दियों की पीठ पर कड़े काले बालोंवाली चमड़ी के चिथड़े चिपके हुए थे और उनके पीले गेटर इतने करीने से साफ़ किये हुए थे मानो जापानी व्लादीवोस्तोक की सड़कों की सैर पर जानेवाले हों।

"इन्हें गड़वा देना चाहिये," ओकोरोक बोला, "बेहूदे लग रहे हैं।"

गाँववाले अपना माल-असबाब छकड़ों पर लाद रहे थे। बच्चे ढोर हाँककर निकाल रहे थे। उनके चेहरों पर सदा की तरह शान्त कामकाजी भाव था।

बस लाशों के बीच एक छोटा-सा सफ़ेद कुत्ता पागल होकर गोल-गोल चक्कर काट रहा था।

भेड़ की घिसी सलेटी खाल जैसे चेहरेवाला एक बूढ़ा छापेमारों के पास आया। जहाँ-जहाँ के बाल झड़े हुए थे वहाँ गालों और माथे की लाल त्वचा दिखायी पड़ रही थी।

"लड़ाई कर रहे हो?" उसने रुआँसे स्वर में वेर्शीनिन से पूछा।

"मजबूरी है, दादा जी।"

"मैं भी देखता हूँ कि लोगों को हो क्या गया। कभी भी ऐसी बेकार लड़ाई नहीं हुई। पहले जार लड़वाते थे और अब, शैतान की दुम, खुद आपस ही में लड़ बैठे।"

"वही बात हुई न दादा जी, जा रहे थे छकड़े पर और गया वह एक दिन टूट! पता लगा कि कब का गल चुका था, नया बनाना पड़ रहा है।"

"क्या?"

बूढ़े ने नीचे सिर झुकाया मानो पाँव के नीचे किसी शोर को सुनने की कोशिश कर रहा हो और उसने सवाल दोहराया :

"समझा नहीं मैं... क्या?"

"कह रहा हूँ छकड़ा टूट गया।"

बूढ़ा मानो गीले हाथों को झाड़ते हुए यह बड़बड़ाता पीछे हटा :

"छोड़ो, छोड़ो... कैसे छकड़े हो सकते हैं अब। अधर्मी के जमाने में अच्छे छकड़े कहाँ से आये।"

वेर्शीनिन ने अपनी दुखती कमर को रगड़ा और मुड़कर देखा।

कुत्ता अभी तक भूँके जा रहा था।

एक छापेमार ने कन्धे से रायफल उतारी और गोली दाग दी। कुत्ता गठरी बना और फिर उसने अपना शरीर ऐसे फैलाया मानो जागकर अँगड़ाई ले रहा हो। और मर गया।

बूढ़ा बेचैनी के साथ बोला :

"देखा, निकीता येगोरिच, कुत्ता भी दुख से मर गया। पर आदमी को सब सहना पड़ रहा है।"

"सहना पड़ रहा है?"

"झेलना पड़ रहा है, येगोरिच। बख़्तर रेलवाई तो लोग-बाग कह रहे हैं पहाड़ियों में जानेवाली है। सब तबाह कर देगी, सब जला डालेगी।"

"बेकार की बातें मत करो। पहाड़ों में पटरी कहाँ से आयी।"

बूढ़ा आवेश में थूककर बोला :

"बिना पटरी के जायेगी जब जापानियों से उनकी साँठ-गाँठ हो ही गयी। जापानी और अमरीकिया सब कर सकते हैं। येगोरिच, महाकाल आ गया। सच कहता हूँ,

महाकाल। जनता तो सड़ रही है जैसे बारिश से पकी फसल... और वह कप्तान बख़्तर रेलवाईवाला, क्या ज़ार का रिश्तेदार है?.."

"छोड़ो, बेकार की बातें..."

"बड़ा खूंख्वार है, लोग-बाग कहते हैं कि कद दो गज से ऊँचा है और दाढ़ी..."

8

सिर पर पट्टीवाला किसान अपने गर्रे घोड़े को गली से दौड़ाता लौटा।

उसका शरीर घोड़े की चपटी पीठ से चिपका था, चेहरा नाच रहा था, मुट्ठियां काँप रही थीं और गला हर्ष के साथ चीख रहा था :

"मरीकन को पकड़ लिया, भइयो-यो.."

ओकोरोक चिल्लाया :

"ओ-हो-हो!.."

गली में तीन रायफलधारी किसान नज़र आये। उनके बीच हल्का सा लँगड़ाता, गर्मियों की फुलालेन की वर्दी पहने अमरीकी सैनिक चल रहा था।

उसका सफाचट चेहरा जवान था। उसके उघड़े दाँत डर के मारे काँप रहे थे और दायें गाल पर कपोलास्थि के पास मांसपेशी फड़क रही थी।

लम्बी-लम्बी टाँगों और सफ़ेद बालोंवाले किसान ने जो अमरीकी को साथ लाया था, पूछा :

"आपका सरदार कौन है?"

"क्या काम है?" वेर्शीनिन ने पूछा।

"यही सरदार है, यही!" आकोरोक चिल्लाया। "निकीता येगोरिच वेर्शीनिन है! पर तुम बताओ तो पकड़ा कैसे?"

किसान ने थूककर अमरीकी सैनिक का कन्धा ऐसे थपथपाया मानो वह खुद वहाँ हाजिर हुआ हो और बूढ़ों के लिये लाक्षणिक तत्परता से बताने लगा :

"तुम्हारे पास ले आया इसे, निकीता येगोरिच। हम वोजनेसेन्स्की जिले के हैं। दस्ता हमारा जो है न, वह जापानियों के पीछे-पीछे बड़ी दूऽऽर चला गया!"

"किन गाँवों के हो?"

"एक ही गाँव के है, मिलकर लड़ रहे हैं। शायद पेनिनो गाँव का नाम सुना हो?"

"कहते हैं, उसे जला डाला गया?"

"हरामजादे हैं! पूरा का पूरा गाँव जला डाला, मेरे शहजादे, और हम चले गये पहाड़ियों में!"

उनके गिर्द जमा हुए छापेमार बोल पड़े :

"एक ही कष्ट झेल रहे हैं! समझते हैं हम भी!"

सफ़ेद बालोंवाला किसान आगे बोला :

"ये दो जने जा रहे थे, मतलब मरीकन! रेड़ी पर दूध के डिब्बे ले जा रहे थे! पगले लोग हैं : लड़ने के लिये आये हैं पर चाकलेट छकते हैं दूध के साथ। एक का तो हमने टिकट कटा दिया और इसने हाथ उठा दिये। बस ले आये पकड़के। गाँव के चौधरी के हवाले करना चाहते थे पर देखा यहाँ तो पूरी की पूरी फ़ौज मौजूद है!"

अमरीकी फ़ौजी अन्दाज़ में तनकर खड़ा था और वह वेर्शीनिन को अपने न्यायाधीश की तरह एकटक ताक रहा था।

मर्दों का जमघट लग गया।

अमरीकन की नाक में तम्बाकू और देहाती खाने की खट्टी डकारों की बू भर गयी।

सटकर खड़ी देहों से सिर चकरानेवाली गर्मी आ रही थी और सिर से पैर तक क्रोध की शुष्क कँपकँपी दौड़ रही थी।

मर्द शोर मचाने लगे :

"देखते क्या हो!"

"मार दो गोली हरामजादे को!"

"मारो स्सालों को!"

"कर दो खात्मा!.."

"सोचने की क्या बात है?!"

अमरीकी सैनिक थोड़ा-सा झुका और उसने कंधों में सिर दुबका लिया, यह देखकर क्रोध ने उन्हें झिंझोड़ दिया।

आग लगाते हैं, हरामजादे!"

"हुक्म चलाते हैं!"

"मानो अपने घर में हो!"

"देखो, कहाँ तक आ धमके!"

"किसने बुलाया था?!"

किसी का तीखा चीत्कार सुनाई पड़ा :

"माऽऽर!.."

तभी पेन्तेफली ज्नोबोव, जो पहले व्लादीवोस्तोक की गोदी में काम करता था, छकड़े पर चढ़ गया और ऐसे चिल्लाया मानो उसे कोई गुम चीज़ मिल गयी हो :

"ठहर-रो!.."

और यह जोड़ दिया :

"कामरेडो!"

छापेमारों में लोमड़ी की दुम जैसी उसकी झबरीली मँछों और आगे से खुली पतलून को देखा, वहाँ से शरीर का काला-काला सा अंश झाँक रहा था और वे चुप हो गये।

"मारना कोई मुश्किल काम नहीं है! सबसे आसान है। मारने में कुछ नहीं जाता। देखो सड़क पर कितने पड़े हैं। पर मेरा विचार, कामरेडों, यह है कि इसे प्रचार करके छोड़ दिया जाये। चख लें वो भी बोल्शेविकों की सच्चाई का स्वाद। मेरा कहना तो यही है!.."

अचानक मर्दों के मुँह से ठहाकों की ऐसी झड़ी लग गयी, जैसे बोरी से अनाज गिरता है :

"हा-हा-हा!.."

"हो-हो-हो-!.."

"ही-ही-ही-!.."

"अबे, दुकान तो बन्द कर ले अपनी!.."

"हो जा चालू, पेन्तेफ्ली, हिला जीभ अपनी!.."

"भर दे इसके भेजे में अकल!"

"आख़िर, यह भी आदमी ही है..."

"पत्थर पर भी लकीर खोदी जा सकती है।"

"बजा गाल!.."

हट्टी-कट्टी अव्दोत्या स्तेश्चेन्कोवा पुआल के रंग के अपने घघरे को समेटकर झुकी और कन्धे से अमरीकी को ठेलकर बोली :

"तू पगले सुन-सुन कान खोलके तेरा भला ही चाहवें हैं।"

अमरीकी सैनिक मर्दों के दढ़ियल ताँबई चेहरों, ज्नोबोव की आगे से खुली पतलून पर नज़रें दौड़ा रहा था, अबोधगम्य बोली को सुन रहा था और शिष्टता के साथ अपने सफाचट चेहरे को निचोड़कर होंठों पर मुस्कान निकाल रहा था।

उत्तेजित मर्द उसके इर्द-गिर्द धक्कामुक्की कर रहे थे और भीड़ में उसे ऐसे ही बहाये ले जा रहे थे जैसे पानी पेड़ के पत्ते को; वे ऐसे ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला रहे थे मानो वह बहरा हो।

अमरीकी सिर उठा-उठाकर अपनी आँखों को ऐसे मिचमिचा रहा था मानो उनमें धुआँ भर रहा हो, वह मुस्करा रहा था और उसके पल्ले कुछ भी न पड़ रहा था।

ओकोरोक पूरे ज़ोर से चिल्लाकर अमरीकी से बोला :

"तू वहाँ उनको समझा दे। विस्तार से कि यह अच्छी बात नहीं।"

"हमें क्यों परेशान करते हैं!"

"अपने भाइयों से लड़ने को मजबूर करते हैं!"

वेर्शीनिन गुरु स्वर में बोला :

"लोग आप भले हैं, समझना चाहिये आपको। वैसे ही किसान हो जैसे हम, हमारी तरह ही खेत वगैरह जोतते हो। जापानी क्या है। चावलखोर, उसके साथ तो दूसरी बोली में बोलने की ज़रूरत है!"

ज्नोबोव ने अमरीकी के सामने धम्म-धम्म पैर पटके और मूँछों को सहलाता हुआ बोला :

"हम डाका नहीं डालते, हम व्यवस्था कायम कर रहे हैं। आपके यहाँ, समुन्दर के पार यह नहीं पता लोगों को, बहुत दूर जो हैं और फिर तू है भी परदेशी..."

कोलाहल बढ़ता जा रहा था।

अमरीकी ने असहाय दृष्टि दौड़ायी और बोला :

"I don't understand."

लोग एकदम चुप हो गये।

वास्का ओकोरोक बोला :

"पल्ले नहीं पड़ रहा। बिचारा रूसी तो न जाने है!"

लोग अमरीकी के पास से हट गये।

वेर्शीनिन को झेंप-सी महसूस हुई।

"इसके साथ यहाँ क्या झक मारनी, भेज दो इस काफिले में," उसने ज्नोबोव से कहा।

ज्नोबोव राजी नहीं हो रहा था, वह अपनी हठ पर अड़ा था :

"वह समझ जायगा!.. बस कोशिश करने की ज़रूरत है!.. वह समझ जायेगा!.."

ज्नोबोव सोच रहा था।

अमरीकी अभी भी एक टाँग पर झुका, हौले-हौले झूलता खड़ा था। उसके चेहरे पर ऐसे ही हवाइयाँ उड़ रही थीं जैसे मन्द-मन्द हव पुआल की गाँज को सहलाती है।

सिन बिन-ऊ अमरीकी के पास ज़मीन पर लेट गया और आँखों को हथेली से ढंककर कर्णभेदी चीनी गति अलापने लगा।

"क्या मुसीबत है," वेर्शीनिन व्यथित होकर बोला।

वास्का ओकोरो ने यूँ ही सुझाव दिया :

"किसी किताब-विताब के सहारे नहीं चल सकता काम?"

जो पुस्तकें मिलीं वे सब रूसी में थी।

"ये तो फूँकने लायक ही हैं," ज्नोबोव बोला, "अगर तस्वीरोंवाली होतीं तो बात दूसरी थी।"

अव्दोत्या आगे चरागाह के पास खड़े छकड़ों की ओर गयी, बड़ी देर तक वह सन्दूकों को खोलकर उलट-पलट करती रही और अन्ततः फटे कोनोंवाली ग्रामीण स्कूलों के लिये धर्मशास्त्र की जर्जर पाठ्यपुस्तक उठा लायीं

"इससे काम नहीं चल सकता?" उसने पूछा।

ज्नोबोव ने किताब खोली और असमंजस में बोला :

"तस्वीरें तो धार्मिक है! हमें इसे ईसाई तो नहीं बनाना है। पादरी थोड़े ही हैं

हम।''

"पर तू कोशिश तो कर," वास्का ने सुझाव दिया।

"कैसे समझाऊँ। नहीं समझेगा।"

"क्या पता समझ जाये। चल!"

ज्नोबोव ने अमरीकी को बुलाया :

"ओ कामरेड, जरा इधर आ।"

अमरीकी उसके पास आया।

मर्द फिर से जमा हो गये, फिर से उस पर डकारों और तम्बाकू की बू छोड़ने लगे।

"लेनिन," ज्नोबोव दृढ़ता के साथ ज़ोर से बोला और अनायास ही, मानो लड़खड़ाकर मुस्करा दिया।

अमरीकी का रोम-रोम सिहर गया, उसकी आँखें चमकीं और वह हर्ष के साथ बोला :

"There's a chap!"

ज्नोबोव ने अपनी छाती पर मुक्का मारा और मर्दों के कन्धों और पीठों को थपथपाते हुए चिल्लाकर बोला :

"सोवियत रिपब्लिक!"

अमरीकी ने लोगों की ओर अपने हाथ बढ़ाये, गाल उसके फड़कने लगे और वह उत्तेजित होकर चिल्लाया :

"What is pretty indeed"

लोग खुशी के मारे हँसने लगे :

"स्साला समझता है।"

"देखो, हरामी को!"

"पेन्तेफ्ली को तो देखो, अमरीकी में धड़ल्ले से बोलता है पेन्तेफ्ली तो!"

"पेन्तेफ्ली, तू इनके बुर्जुओं को सुना दे कस-कस के गालियाँ!"

ज्नोबोव ने झटपट धर्मशास्त्र की पुस्तक खोली और उस तस्वीर पर उँगली मार-मारकर जिसमें अब्राहम इसाक की बलि दे रहा था और बादलों में ईश्वर लटका था, समझाने लगा :

"यह जो छुरा पकड़े है न—बुर्जुआ है। देखा कैसी तोंद निकाल रखी है, बस घड़ी की चेन की कमी है। और यहाँ लट्ठों पर प्रोलिटेरियट यानी सर्वहारा पड़ा है, समझा! प्रो-लि-टे-रि-य-ट।"

अमरीकी ने हाथ से अपनी छाती की ओर इशारा किया और शब्द खींच-खींचकर हर्ष के मारे हकलाते हुए गर्व के साथ कहा :

"Pro-le-ta-ri-at! We!"

लोग अमरीकी को गले लगाने लगे, उसके कपड़ों को उँगलियों से मसल-मसलकर देखने लगे और ज़ोर-ज़ोर से उससे हाथ मिलाने, कन्धे भींचने लगे।

वास्का ओकोरोक ने उसका सिर थाम लिया और आँखों में झाँकते हुए उल्लास के साथ चिल्लाकर बोला :

"यार, तू उन्हें वहाँ जाके बता दे। समुन्दर के पारवालों को..."

"अब बस भी कर, गपोड़े," वेर्शीनिन ने स्नेह के साथ कहा।

ज्नोबोव आगे बोला :

"पड़ा है सर्वहारा लट्ठों पर और बुर्जुआ—काट रहा है उसका गला। और बादलों में पता है कौन बैठा है—जापानी, अमरीकी, अंग्रेजी—सब साले साम्राज्यवादी, इंपीरियलिज़्म की नाजायज औलाद बैठी है।"

अमरीकी झट से टोपी उतारकर चिल्ला पड़ा :

"Imperialism! Away!.."

ज्नोबोव ने तैश में आकर टोपी ज़मीन पर पटक दी।

"साम्राज्यवादी और बुर्जुआ भाड़ में जायें!"

सिन बिन-ऊ लपककर अमरीकी के पास गया और अपनी ढीली पतलून को ऊपर खींचता हुआ जल्दी बोलने लगा :

"रूसी जन-तन्तर। चीनी जन-तन्तर। मेरीकनी जन-तन्तर—खिराब है। जापानी खिराब है, जन-तन्तर चाइये। चाइये लाल जन-तन्तर, चाइये..."

और इर्द-गिर्द नज़र डालकर पंजों के बल उचका और धीरे-धीरे अँगूठा उठाकर बोला :

"शाँगो!"

वेर्शीनिन ने आदेश दिया :

"इसे भरपेट खाने को दो। और फिर सड़क पर ले जाकर छोड़ दो।"

उसे लानेवाले बूढ़े ने पूछा :

"कैसे ले जायें, आँखें बाँध दें क्या? यहाँ कहीं अपने लोगों को न ले आयें?"

मर्दों का फ़ैसला था :

"कोई ज़रूरत नहीं। किसी को नहीं बतायेगा।"

9

छापेमारों ने ठहाके लगाकर हँसते हुए, सीटियाँ बजाते हुए बन्दूकें कन्धों पर लटकायीं।

ओकोरोक ने अपना घुँघराला ललौहा सिर हिलाया और अचानक उसन मकड़ी के तार की तरह महीन आवाज़ में तान छेड़ी :

बिखेर दूँ दुखड़े को अपने
हरे भरे मैदान में
उग मेरे दुखड़े बनके घास हरी,
न सूख तू, न मुरझा तू,
तू लद जा फूलों से...

और किसी के चपल और हँसमुख स्वर ने गूँजकर वास्का के गीत को जारी रखा :

बिखेर के गया मैं
हरे भरे बाग में
बाग में देखी मैंने ढेरों
चैरियाँ, अंगूर, नाशपातियाँ

और बस सागर के पवन की तरह लोगों के सैकड़ों भर्राये, टूटते स्वरों ने पगडण्डियों, जंगल और पहाड़ों को मुखरित कर दिया :

बिखेर के गया मैं
हरे भरे बाग में
—अरे गया मैं बाग में...
—आह-ओह-आह-आह...

छापेमार बरात की तरह गुल-गपाड़ा मचाते हुए पहाड़ियों की ओर जा रहे थे। छठा दिन डूब रहा था।

संध्याकालीन पेड़ मादक और हर्षदायी सुगन्ध फैला रहे थे।

शहर में

10

सोरघम की चौड़ी चटाइयों पर फ्लाउण्डर मछलियों, गीली रस्सियों जैसे सर्पमीनों के ढेर, नवागा, कार्प और लांसेट मछलियों की मोटी-मोटी परतें लगी थीं। मछलियों के शल्कों में आकाश और इमारतों के पत्थर प्रतिबिम्बित हो रहे थे। सुफनों में अभी तक सागर के नील-सुनहरे, चटक पीले और गहरे नारंगी रंगों की छटा रमी हुई थी।

चीनी उदासीन खड़े मांस के ढेर को मिट्टी की तरह निहारते ऐसे ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाते हुए मानो प्रसव-वेदना में तड़प रहे हों, ग्राहकों को बुला रहे थे :

''ताजी मछली!.. लूसी कप्तान लूसी! ले ले! खलीदोगे?.. आऽऽ?''

पेन्तेफ्ली ज्नोबोव गाद की बू वाले पीले कीचड़ से लथपथ घाट की पैड़ियों के पास नाव में बैठा असन्तोष के साथ बोल रहा था :

''चीनी बस गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहा है, पर मछली के सिवा कुछ बेच नहीं रहा।''

''छोरे, तू क्यों नहीं कुछ बेचता!''

''हमारा काम सब तबाह करना है! तबाही करते-करते जी उकता गया है। आख़िर कुछ बनायेंगे कब! अरे, कोई पढ़ा-लिखा जापानी मिल जायें।''

नौसैनिक ने टाँगें नीचे लटकायीं और तलवों से लहरों के शिखरों से खेलने लगा। उसने पूछा :

''जापानी की तुझे क्या पड़ी है?''

नौसैनिक का सिर अण्डे की तरह गोल-मटोल और चिकना था और चिक्कट खड़े कान थे। उसकी क़मीज़, पतलून के बेहद चौड़े पाँयचे, खुली आस्तीनें और वह पूरा का पूरा ही नाव के पास लहराते सागर की तरह लहरा रहा था। तट और पूरा का पूरा शहर ही लहराता, तिरता जा रहा था...

''मज़ेदार आदमी है,'' ज्नोबोव ने सोचा।

''जापानी को तो मैं ढूँढ लूँगा। जापानी यहाँ ढेरों हैं!''

ज्नोबेव नाव से उतरा, नौसैनिक की ओर झुककर और उसके कन्धे के ऊपर से चिंदियों की रजाई जैसी रंग-बिरंगी भीड़, टन-टन करती ट्रामों और चीनियों की नीलाभ-पीली कुरतों-कुर्तियों को देखता हुआ फुसफुसाकर बोला :

''खास जापानी की ज़रूरत है, यहाँ के नहीं। परचा फैलाने के लिये छापकर शहर भर में चिपकाने के लिये। ले! उनकी फ़ौज में भी फैलाया जा सकता है।''

उसने अजीब अक्षरोंवाले पीले छपे परचे की कल्पना की और उसके होंठों पर स्नेहपूर्ण मुस्कान फैल गयी।

''वे समझ जायेंगे! हमने, यार, एक अमरीकी को रुला दिया। मानो टंकी फूट गयी... ऐसे आँसू बहा रहा था...''

''कहीं डर के मारे तो नहीं रो रहा था?''

''बेकार की बात मत कर। सबसे बड़ी बात आदमी को ज़िन्दगी समझानी है। बिना समझाये उससे क्या मिलेगा, गोली ही न?''

''ऐसे जापानी को ढूँढना मुश्किल होगा।''

''मैं भी तो यही कह रहा हूँ। भाग्य से ही ऐसा मिले।''

नौसैनिक पंजों के बल उचका और भीड़ को गौर से देखकर बोला :

''देखो तो कितने लोग हैं! क्या पता भला जापानी भी यहीं कहीं हों पर वह मिले कैसे!''

ज्नोबोव ने उसाँस ली :

"ढूँढना मुश्किल है। खासकर मेरे लिये। मुझे तो लोग दिखायी ही नहीं देते। मैं तो अपने ही लोगों को ही पहचानता हूँ। आँखों पर पर्दा पड़ा है।"

"आजकल ऐसे ढेरों हैं।"

"दूसरा कोई चारा नहीं। पहाड़ी पगडण्डी पर चलते वक्त एक बिन्दु पर नज़र टिकाये रखनी चाहिये नहीं तो चक्कर आ जायेगा और खड्ड में जा पड़ोगे! वहाँ पड़े हड्डियाँ सुखाते रहो, भगवान का नाम जपते रहो।"

साफ़-सुथरे कैनेडियन हँसते-खिलखिलाते गुजर रहे थे। शलगम से बने खिलौनों की तरह जापानी चुपचाप जा रहे थे। रुपहले तसमोंवाले अतामानी मेहमेजें झंकार रहे थे।

तटबन्ध के पत्थरों से निढाल सागर टकरा रहा था। झाग की तरह नम, मछली की बू से रमी हवा बालों को बिखेर रही थी। खाड़ी में कपड़े पर कढ़े फूलों की तरह सलेटी-किरमिजी जहाज, सफ़ेद पालोंवाली चीनी जंगें, मछुवों की नावें झिलमिला रही थीं।

"रूस नहीं, चंडूखाना है!"

नौसैनिक लचककर फुदका और खिलखिलाकर बोला :

"देखते रहना, हम इन्हें छठी का दूध याद दिला देंगे।"

"चलें?"

"चल मेरी नैया!"

वे पीकिंग सड़क की चढ़ाई पर चढ़ रहे थे।

घरों के दरवाज़ों से भुने गोश्त, लहसुन और तेल की सुगन्ध आ रही थी। पेटियों से कसकर बँधे कपड़े के थानों को कन्धों पर ठीक से रखते हुए दो चीनी फेरीवाले रूसियों को देखकर ढिठाई के साथ ठहाके लगाने लगे।

ज्नोबोव बोला :

"हँस रहे हैं, स्साले! पर मेरे पेट में तो इससे नयी इमारत बन रही है। भाड़ में जाये वह! सीधे-सादे जड़ देता नाक पर घूँसा, हरामज़ादों की!.."

नौसैनिक ने क़मीज़ के खोल के अन्दर अपनी देह हिलायी और खाँसकर बोला :

"मर्जी अपनी-अपनी!"

लगता था कि विशाल तटवर्ती नगर अपना सामान्य जीवन जी रहा है।

पर पराजयों की क्लांतिकर खिन्नता ने लोगों के चेहरों, पशुओं, घरों पर अपनी छाप डाल दी थी। समुद्र तक पर।

रेस्तराँओं की चमचमाती खिड़कियों से फ़ौजी कोटों में लिपटे अफ़सर छोटी-छोटी मेजों पर बैठे जल्दी-जल्दी, मानों जामों को अपने गलों में भोंकते, ब्रांडी पीते दिखायी दे रहें थे। कन्धे उनके थकान के कारण टेढ़े लगते थे। आँखों पर पतली, मानो मुरझाती पलकें जल्दी-जल्दी गिर रही थीं।

सूखकर कांटा हुए, फ़ौज के पीछे हटने की कठिनाइयों से निढाल घोड़े, हौले-हौले लंगड़ाते गन्दे कपड़ों से लदे छकड़ों को खींच रहे थे। उन्हें ओम्स्क शहर छोड़ते समय गलती से गोलों और तोपों के स्थान पर ले आये थे। और सब सोचते थे कि ये लाशों से उतारे गये कपड़े हैं।

विद्रोह के समय क्षत हुई इमारतें साबुन की तरह आँखों में जलन पैदा करती थीं।

और सागर का भी रूप हमेशा जैसा नहीं था।

पतले फौलादी तार की तरह झंकार करते दूरस्थ क्षितिज के पार से आते हरित महासागरीय पवन के डैनों का स्पर्श अब नगर को पहले से भिन्न लगता था।

नौसैनिक आराम से और कुछ-कुछ बाँकेपन से अफ़सरों को सिल्यूट देता था।

"मुखबिरों से तो नहीं डरते?" उसने ज्नोबोव से पूछा।

ज्नोबोव जापानियों के बारे में सोच रहा था और अन्तर्मन की गहराइयों में पैठे विचारों को कुरेदते हुए कुछ हड़बड़ाकर बोला।

"अरे नहीं, मैं कुछ और ही सोच रहा था। शुरू-शुरू में डरता था फिर आदत पड़ गयी। अब बोल्शेविकों की बाट जोही जा रही है, बदले से डरते हैं, इसलिये जान-पहचान के लोग गद्दारी नहीं करते।" वह मुस्काया, "हमने लोगों को कित्ता डरा दिया है। दस साल में डर दूर न होगा।"

"खुद भी कम नहीं सहा!"

"हाँ-हाँ!.. तुम्हारे यहाँ गिरफ़्तारियाँ नहीं हुईं?!"

"तीन को पकड़ लिया है।"

"अ-अच्छा... हमारे यहाँ पहाड़ियों में चला जा।"

"पत्थर और जंगल ही हैं वहाँ। मुझे नहीं पसन्द... ऊब होती है।"

"हाँ, यह तो सही है। ऐसे पत्थरों से ढेरों बढ़िया मकान बनाये जा सकते हैं। अमरीका से उन्नीस नहीं। पड़े हैं बेकार, न खा सकते हो, न सिर टिका सकते हो उन पर। किसान को तो कोई फर्क नहीं पड़ता पर मेरा भी वहाँ नहीं लगता। हमें शहर पर चढ़ाई करनी ही पड़ेगी।"

"करो-करो। वेर्शीनिन का क्या इरादा है?"

"वेर्शीनिन का क्या, वह तो घटा की तरह—जिधर हवा बहेगी उधर ही वह बारिश ले जायेगा। जिधर देहातियों का रुख होगा—मतलब वेर्शीनिन भी उधर..."

11

भूमिगत क्रान्तिकारी समिति का अध्यक्ष पेकेलेवानोव, चित्तियों से ढके चेहरे और मोटे फ्रेम के चश्मेवाला नाटा व्यक्ति चाकू से पेंसिल छील रहा था। चश्मे के शीशों

पर ब्लेड की तरह पैना सूरज नाच रहा था और वह मानो आँखों को तराशकर नयी चमक दे रहा था।

"आप अकसर आने लगे हैं, कामरेड ज्नोबोव," पेकलेवानोव बोला।

ज्नोबोव ने हवा और पानी से फटी अपनी उँगलियों को मेज पर रखा और सख्त आवाज़ में कहा :

"जनता हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठना चाहती।"

"फिर?"

"पर काम नहीं देते। बेहद नाराज हैं। बस इसीलिये भेज देते हैं। मुझ तक अटपटा लगता है मानो अमीर दुल्हन को मना रहा हूँ।"

"जब ज़रूरत होगी हम आपको ख़बर कर देंगे"

"इन्तजार करते-करते जी उकता गया। मतली आती है। रेलों पर गोली चलाओ, आग लगाओ, कज़्ज़ाकों की धुनाई करो... ऊपर से बख़्तरबन्द रेल भी है। जापानी तो आग हैं आग—कुछ नहीं देखते।"

"सब ठीक हो जायेगा।"

"पता है। अगर ठीक न होना होता तो मरने में क्या तुक थी? पुल उड़ाना चाहते हैं।"

"बहुत बढ़िया। पहल की ज़रूरत है, पहल की। बहुत अच्छे..."

"गोलों की ज़रूरत है और गोलों के साथ आदमी की भी। डायनामाइटवाले की ज़रूरत है।"

"भिजवा देंगे। डायनामाइट भी और आदमी को भी। करो यह काम।"

वे कुछ देर मौन रहे। पेकलेवानोव ज़ोर-ज़ोर से हाँफता हुआ-सा साँस ले रहा था।

"आपमें अनुशासन नहीं है।"

"आपस में?"

"नहीं, अपने अन्दर।"

"हूँऽऽ, ऐसा अनुशासन अब किसी में नहीं है..."

अध्यक्ष ने अपनी खुजलाती नुकीली कोहनी खुरची। उसके गालों की त्वचा कुम्हलायी थी मानों ज़िन्दगी भर उसे सोना नसीब न हुआ पर कहीं गहराई में हर्ष उमड़ रहा था और जिस तरह माँ के गर्भ में बच्चा हाथ-पाँव मारता है वैसे ही उसके धक्के गालों पर लाली के धब्बे उभार रहे थे।

नौसैनिक ने हाथ बढ़ाया और ऐसे ज़ोर से मिलाया मानो रस निचोड़ रहा हो और चला गया।

ज्नोबोव ने और पास आकर धीरे से पूछा :

"लोग पूछते रहते हैं कि विद्रोह के क्या आसार हैं?.. अगर हुआ तो देहात से तीनेक हज़ार यहाँ भेज देंगे। जर्मनी की लड़ाई के पुराने फ़ौजी। कोई योजना-वोजना है?"

उसने ऐसे बाँहें फैलायीं मानो मेज का आलिंगन करना चाहता हो और क्लान्त फुसफुसाहट में बोला :

"आप जो हैं न, जापानी के बीच परचा फैला दें। ताकि उसका दिल दहक उठे... हमने एक अमरीकी की आँखों में आँसू ला दिये..."

पेकलेवानोव की छाती पिचकी थी, वह क्षीण स्वर में बोल रहा था, शान्त आँखें चश्मे के शीशों से झाँक रही थीं।

"क्यों नहीं, सोच रहे हैं... उपाय कर रहे है।"

ज्नोबोव को अचानक उस पर दया आ गयी।

"आदमी तू भला है पर नेता... बस ऐसा ही..." उसने सोचा और उसे नेता के रूप में हट्टे-कट्टे सफाचट, और न जाने क्यों बिल्कुल गंजे आदमी को देखने की इच्छा हुई। मेज पर बड़ा अखबार पड़ा था और उस पर रई की रूखी रोटी, बारीक कतलों में कटी सासेज, पास ही में नीली प्लेट में दो उबले आलू और प्लेट के पास चीनी की डली रखी थी।

"चिड़ियों का चुग्गा है," ज्नोबोव ने असन्तोष के साथ सोचा।

पेकलेवानोव कन्धे पर अपने बढ़ी दाढ़ीवाले गाल को नीचे से ऊपर की ओर रगड़ते हुए बोल रहा था :

"विद्रोह के लिये नियत समय पर शहर के कोने-कोने से मज़दूर और उनका साथ देनेवाले फ़ौजी ट्रामों पर बैठकर आयेंगे। टेलीग्राफ के तार काट देंगे और दफ्तरों पर कब्जा कर लेंगे।"

पेकलेवानोव ऐसे बोल रहा था मानो तार सन्देश पढ़ रहा हो और ज्नोबोव उसे सुनकर उत्फुल हो रहा था। मूँछों पर हाथ फेरकर वह पेकलेवानोव को उकसाने लगा :

"आगे, आगे बोलो!.. इस बार फिर विफल नहीं हो जायेगा! आपको पक्का विश्वास है..."

"बाकी सब क्रान्तिकारी समिति कर देगी। आगे वही कार्यवाहियों का संचालन करेगी।"

ज्नोबोव ने शक्ति से फड़कते हाथों को मेज पर टिकाया और पूछा :

"बस इतना ही?"

"अभी इतना ही।"

"कामरेड, यह तो कम है... कसम से, बहुत कम है... भई, उन्हें भी..."

पेकलेवानोव की उँगलियाँ कोट के बटनों से खेलने लगीं, उसका चितकबरा चेहरा धब्बों से भर गया। वह मानो बुरा मान गया था।

'ज्नोबोव बुदबुदा रहा था :

"किसानों को भी तो ऐसे नहीं भूलना चाहिये। बुलाना चाहिये उन्हें। मतलब तो

यही निकला कि हम पहाड़ों में बेकार ही छिपे बैठे रहे, ऐसे ही जैसे मुर्गी सड़े अण्डों को सेती रही। कामरेड, हमारी संख्या बहुत बड़ी है... हज़ारों हैं...''

''चालीस हैं जापानी, चालीस हज़ार।''

''यह सही है, जूँ की तरह कुचल सकते हैं। पर रुकने वाले नहीं हैं।''

''कौन?''

''समाज। किसान उतावला है।''

''आपमें, कामरेड ज्नोबोव, समाजवादी-क्रान्तिकारियों की मानसिकता भरी पड़ी है। आपसे मिट्टी की बू आती है।''

''और आपसे सासेज की।''

पेकलेवानोव सतरंगी हँसी हँस पड़ा।

''वोदका पिलवा सकता हूँ, इच्छा है?'' उसने सुझाव दिया। ''बस देर तक मत बैठे रहियेगा और सरकार को गालियाँ भी मत दीजियेगा। नज़र रखी जा रही है।''

''हम चुपके से देंगे गालियाँ।''

वोदका का गिलास पीकर ज्नोबाव को पसीना आ गया और तौलिये से चेहरा पोंछते हुए वह हिचकियाँ लेता बोला :

''यार, तू बुरा मत मान—शान्त हो जा। जो चाहे सोच पर शुरू में तू मुझे पसन्द नहीं आया।''

''और अब?''

''अब ठीक है। हम, भइया, पुल उड़ा देंगे और फिर, वहाँ एक बख़्तरबन्द गाड़ी है।''

''कहाँ?''

ज्नोबोव हाथ फैलाकर बोला :

''पटरी पर... दौड़ती है। चौदह और आगे कोई और नम्बर लिखा है। बहुत लोगों का पत्ता काट चुकी है। हो सकता हो, लाखों का काट चुकी हो। तो हम उसे...''

''पानी में डुबो दोगे?''

''पानी में क्यों? हम इंसाफ़ करेंगे। चीज़ सरकारी है, ऐसे ही ले लेंगे।''

''उस पर तो तोपें लगी हैं।''

''कोई फ़र्क नहीं पड़ता। चित्त भी हम जीते, पट भी हम जीते, बात एक ही है...''

ज्नोबोव ने सुस्ती से सिर हिलाया :

''तेरी वोदका बड़ी तेज़ है। मेरा बदन मिट्टी जैसा हो गया, आदमी की बोली नहीं समझता। अपनी ही मर्जी की करता है।''

उसने दहलीज पर पाँव रखा और बोला :

''अलविदा। बीते कल का आदमी है तू, कसम से।''

पेकलेवानोव ने सासेज का एक टुकड़ा काटा, वोदका पी और मक्खियों से गन्दी दीवार को ताकता हुआ बोला :

''हाँऽऽ... कल का।''

उसने हँसमुख होकर क़ागज़ निकाला और ज़ोर-ज़ोर से निब चरमराता हुआ विद्रोही सैनिक टुकड़ियों को निर्देश लिखने लगा।

12

सड़क पर फुलवारी के पास ज्नोबोव को एक जापानी सिपाही दिखायी पड़ा। लाल किनारी वाली छज्जेदार टोपी पहने जापानी पीले दस्तानों से पकड़कर तामचीनी की लम्बोतरी चिलमची लिये जा रहा था। जापानी का छोटा-सा सख्त मुँह था और मूँछें व्याध-पतंग के पंखों जैसी छितरीं।

''ज़रा रुक!'' उसकी आस्तीन पकड़कर ज्नोबोव बोला।

जापानी ने झटके से हाथ छुड़ाया और सख़्ती से चिल्लाया :

''हत! किया चाइये?''

ज्नोबोव ने मुँह बनाकर उसे चिढ़ाया :

''खर्र! सुअर है तू। तेरे साथ भले आदमी की तरह बात कर रहे हैं और तू खर्र-खर्र कर रहा है! ईश्वर में विश्वास करता है?''

जापानी ने आँखें तरेरीं और पगोड़ा की छत के मुड़े कोने जैसी बरौनियों के नीचे से ज्नोबोव पर चौड़ाई में—एक कन्धे से दूसरे तक नज़र दौड़ायी और फिर उसके बूटों पर नज़र डाली, उन पर सूखे पीले कीचड़ को देखकर उसने मुँह बिचकाया और कर्कश स्वर में बोला :

''लूसी हलामजादे। हत!..''

और चिलमची को पसलियों पर टिकाकर धीरे-धीरे चला गया।

ज्नोबोव ने पीछे से उसकी पेटी के चंचल चमक से चमचमाते बकसुओं पर नज़र डाली और खेद के साथ बोला :

''बेवकूफ़ है तू, मैं तो यही कहूँगा!..''

चीनी सिन बिन-ऊ

13

तीन दिन बाद बेंत की रेड़ी को अपने बदन के बोझ से तोड़ता नौसैनिक अनीसिमोव तूफ़ान की तरह आया।

उसके माथे पर फफोले पड़े थे, एक गाल खरोंच से विभक्त था और छाती पर लाल फीता लहरा रहा था।

नौसैनिक रेड़ी से ही चिल्लाया :

"साथियो, शहर में विद्रोह हो गया!.. दिखा दो... कप्तान नेजेलासोन को झटपट वहाँ बख़्तरबन्द रेल लाने का हुक्म दिया गया है... फौरन लाने को। मज़दूर हड़ताल कर रहे हैं, कहने का मतलब है दिखा दो उन्हें!.. हाँ तो, बख़्तरबन्द रेल आपके जिम्मे सौंप रहे हैं... और मैं मिलीशिया बना रहा हूँ।"

और पहाड़ियों में ओझल हो गया यह मजेदार नौसैनिक।

पहाड़ियों के ऊपर बादल लाल फीते की तरह लटका था...

14

सिन बिन-ऊ का जापानियों से बैर कैसे हुआ, यह किस्सा बड़ा लम्बा है। सिन बिन-ऊ के पास 'ये' खानदान की बीवी, मजबूत मन्जा*, मन्जा में रोगनदार 'कान'** और मन्जा के पिछवाड़े में सोरघम और चौलाई के पीले खेत थे।

और एक ही दिन में, जब हंस उड़कर दक्षिणी देशों में चले गये, यह सब न रहा।

बस संगीन से बिंधा गाल ही रह गया उसके पास।

सिन बिन-ऊ शी-जीन*** का पाठ करता था, शहर में बेचने के लिये चटाइयाँ बुनता था, पर उसने शी-जीन कुएँ में डाल दी, चटाइयों के बारे में भूल गया और रूसियों के साथ खुन-त्सी-जे**** की राह पर चल दिया।

सिन बिन-ऊ सागर तट की रेती पर लेटा सुस्ता रहा था। नीचे से गर्मी आ रही थी, ऊपर से गर्मी थी, सूरज मानो शरीर को भेदकर नीचे की रेत को तपा रहा था।

पाँवों को समुद्र धो रहा था और जब थन से निकले दूध की तरह ऊष्म लहर कुर्ते और पतलून के अन्दर घुसती सिन बिन-ऊ टाँगें उठाकर कोसता।

"त्साखाउ-निआ!.."

सिन बिन-ऊ घनी मूँछों और ऊँची नाक वाले रूसी की बातों को नहीं सुन रहा था। सिन बिन-ऊ ने तीन जापानियों को मार डाला था और फिलहाल चीनी को कुछ नहीं चाहिये था, वह सन्तुष्ट था।

---

* मन्जा–झोंपड़ी (चीनी)

** कान–सोने के काम आनेवाला तख़्त (चीनी)।

*** शी-जीन–चीनी कविता-संग्रह जिसको पढ़ने की क्षमता अच्छी तरह पढ़ा-लिखा होने की पहचान मानी जाती है।

**** खुन-त्सी-जे–लाल पताका, विद्रोह का मार्ग।

धूप और सीली हवा ने लोगों की दाढ़ियों को उलझाकर दलदली कीचड़ जैसा पीला-हरा बना दिया था। लोगों के बदन से ढोरों और तरह-तरह की घास की बू आती थी।

छकड़ों के पास हरी तश्तरियों जैसी शील्डोंवाली मशीनगनें, मशीनगन की गोलियों के पट्टे, रायफलें आदि थे।

नीचे बमवाले छकड़े पर फटी तिरपाल से ढका घायल छटपटा रहा था। अव्दोत्या स्तेश्चेन्कोवा उसे काठ के प्याले से पानी पिला रही थी और उसे सान्त्वना दे रही थी :

"तू कराह मत, सब ठीक हो जायेगा!"

छकड़ों के बीच पसीने से तर लोगों की घनी भीड़ जमा थी। और लगता था कि उमड़ती मानव देहों से भिंचकर छकड़ों को भी पसीना आ रहा था। दाढ़ियों के बीच उभरे होठों की थूक से नम धुँधली धारियाँ धूप में चमक रही थीं।

"ओ-हो-हो-हो-हो ऽऽ!..

इस पुकार से वेर्शीनिन को अपने पूरे बदन में ऐसा दर्द महसूस हो रहा था मानो उसे संगीनों पर उछाला जा रहा हो और उसे दबाने के लिये वह पूरे ज़ोर से, गला फाड़-फाड़ कर चिल्ला रहा था :

"नहीं दे ज़मीन जापानी को ऽऽ!.. सब छीन लें ऽऽ गे ऽऽ! नहीं दे!"

वह किसी भी तरह अपना मुँह नहीं बन्द कर पा रहा था। उसे यह सब कम लग रहा था। दिमाग़ में कोई दूसरे शब्द आ नहीं रहे थे।

"नहीं दे ऽऽ!.."

भीड़ उसका साथ दे रही थी :

"ऐ-ऐ-ऐ ऽऽ!"

और फिर वह क्षण भर को चुप हो गयी। उसने उसाँस ली।

हवा पसीने की बू उड़ा रही थी।

छापेमार सभा कर रहे थे।

वास्का ओकोरोक का सूरजमुखी जैसा ललौंहा चेहरा भीड़ में तेजी से इधर-उधर दौड़ता दिखायी दे रहा था और उसके गर्मी से फटे होंठ बुदबुदा रहे थे :

"लो ऽऽ ग कितने सारे हैं... लाखों हैं, लाखों, साथियो!.."

कद्दावर, मांसल, सीखपा घोड़े की तरह ठूँठ पर खड़ा निकीता वेर्शीनिन चिल्ला रहा था :

"सबसे बड़ी बात है : नहीं दे ऽऽ!.. जल्दी ही यहाँ फ़ौज आयेगी... सोवियत, और तुम्हारा काम, नहीं देना है!.."

जिस तरह जाल में फँसी मछली उसके कोने पर टूट पड़ती है उसी तरह सब एक ही बोल पर टूट पड़े :

"नहीं दे ऽऽ!!"

लगता था कि बस अभी यह बोल गिरकर फूट जायेगा और उसमें वे कुछ अज्ञात, तूफान की तरह भीषण चीज़ निकलेगी।

तभी किरमिजी रंग की रेशमी क़मीज़ पहने एक चेचकरू देहाती हाथों से पेट दबाते हुए तीखे स्वर में बोल पड़ा :

"मुझे यकीन है, आख़िर यह सच है!.."

"क्योंकि पीटर*... इण्टर... नेस... नल सब हमारी तरफ़दारी करते हैं!.. और सब परदेस भी! डरने की क्या बात है... जापानी की औकात क्या... फूँक मारो उड़ जायेगा!.."

"ठीक कहता है, यार, बिलकुल ठीक!" देहाती चीख रहा था।

पसीने से तर हज़ारों की घनी भीड़ उसकी चीख को रौंद रही थी।

"सही ऽऽ है..."

"नहीं दे ऽऽ!.."

"ना ऽऽ!"

"ओ-हो-हो ऽऽ!!"

15

सभा के बाद निकीता वेर्शीनिन ने देसी वोदका का एक मग्गा खाली किया और समुद्र तट पर चला गया। वह चीनी के पास पत्थर पर बैठकर बोला :

"पैर हटा ले, पतलून भीग जायेगी। सेन्का, तू सभा में क्यों नहीं आया?"

"कुस नहीं," चीनी बेला, "मुझे ज़रूरत नहीं चइये... मेरा ऐसे बी जानता है—सप जानता है... शांगो।"

"पैर तो हटा ले!"

"कुस नहीं, शूलज गलम-गलम होता है। कुस नहीं, सप टीक है!.."

वेर्शीनिन सख़्ती से बोला :

"गड़बड़ बहुत है। लोग बहुत मारे जा रहे हैं पर सब बेकार... सेन्का, मेरे मन का वही हाल है जो ठण्ड में ठिठुरते बिल्ली के बच्चे का होता है... उसकी तरह चीं-चीं करता है... हाँ-हाँ... पुल उड़ा देंगे, उसे फिर से बनाना पड़ेगा।"

वेर्शीनिन ने पेट को अन्दर खींचा और क़मीज़ के नीचे से पसलियाँ ऐसे उभर आयीं जैसे सूखे कीचड़ में पड़ी बेंद की टहनियाँ और चीनी की ओर अपना तमतमाया चेहरा झुकाकर उसने उसके मन की बात उगलवाने के अन्दाज़ में पूछा :

"और तेरा... तेरा क्या ख़्याल है... हूँ? इसके बारे में, हूँ?"

* देहाती का तात्पर्य पीटर्सबर्ग और इण्टरनेशनल से है।

सिन बिन-ऊ हड़बड़ाकर जाकेट के लकड़ी के बटन बन्द करते हुए सहमा-सहमा पीछे सरक गया।

"मेरा नहीं जानता, इकीता। मेरा जलता है, जलता! मेरा नहीं मालूम!.."

वेर्शीनिन बुत की तरह रेत में भारी बूट धँसाये पीछे सरकते चीनी के ऊपर झुका, विषाद के साथ, उत्तर की आशा के बिना पूछ रहा था :

"जान-बूझकर नहीं बता रहा क्या?.. क्यों?.."

चीनी को लगा कि खड़ा हरगिज न होना चाहिये, वह बुदबुदाने लगा :

"कुस नहीं!.. मेला कुस नहीं मालूम!.."

वेर्शीनिन को अपने बदन में कमज़ोरी महसूस हुई और वह पत्थर पर बैठ गया।

"भाड़ में जाओ तुम सब!.. किसी को कुछ पता नहीं, कोई कुछ समझता नहीं... जगा दिया, भाग पड़े पर आगे क्या?.."

और वनदेव की तरह पत्थर पर डटकर बैठे उसने पास आते वास्का ओकोरोक से क्लान्त स्वर में कहा :

"या तो लोगों की मति मारी गयी या मेरी..."

"क्या?" उसने पूछा।

"लोग मौत के मुँह में जा रहे हैं।"

"कहाँ?"

"बख़्तरबन्द रेल पर कब्ज़ा करने। ढेरों मारे जायेंगे। पर फिर भी लोग मोमबत्ती पर पतंगों की तरह उड़ते जा रहे हैं।"

ओकोरोक ने मुँह से सीटी बजाकर नीचे का होंठ खींचा।

"तुम्हें दया आ रही है?"

ज्नोबोव उनके पास आया, उसकी बगल में क़ागज़ों की फाइल दबी थी।

"आदेशों पर दस्तखत कर दो!"

वेर्शीनिन ने क़ागज़ पर बड़ा-सा अक्षर 'व' बना दिया और उसके पास मोटी लम्बी रेखा खींच दी।

"पहले तो नाम लिखते-लिखते पसीने छूट जाते थे, खुदा का शुक्र है कि अकल आ गयी, अक्षर लिख दिया डण्डी के साथ और बस हो गया... वैसे भी सब को पता है।"

ओकोरोक ने सवाल दोहराया :

"तुम्हें दया आती है?"

"किस पर?" ज्नोबोव ने पूछा।

"लोग मर रहे हैं।"

ज्नोबोव ने क़ागज़ फाइल में ठूँसा और बोला :

"बेकार की बातें करते हो। जनता पर दया की क्या बात? नयी पैदा हो जायेगी।"

वेर्शीनिन ने फटे-फटे स्वर में उत्तर दिया :

"अगर कुंजियाँ सही होती। क्या पता दरवाज़ा खोलने के लिये किन्हीं दूसरी कुंजियों की ज़रूरत हो।"

"तो घर से क्यों निकले?"

"ज़मीन पर तरस आता है। जापानी छीन लेगा।"

ओकोरोक भद्दी हँसी हँसने लगा :

"अरे देखो तो अपना मुँह, ज़मीन के रक्षकों! ही-ही-ही!.."

"क्यों हिनहिना रहा है घोड़े की तरह?" वेर्शीनिन सख्त चिढ़ के साथ बोला। "किसी का जी समुन्दर में रमे, किसी का ज़मीन पर। लौंडे, ज़मीन तो ज़्यादा सख्त होती है। मैं खुद पुश्तैनी मछेरा हूँ..."

"आगे क्या?"

"अब मछलीमारी छोड़ दूँगा।"

"किसलिये?"

"बेकार ही मैं फिर से समुन्दर में जाने को तड़पता था। खेतीबाड़ी करूँगा। शहर तो धोखा देता है, साबुन का बुलबुला जेब में तो रखा न जा सके।"

ज्नोबोव को शहर, क्रान्तिकारी समिति के अध्यक्ष, घाट पर भीड़, ट्रामों, घरों के रंग-बिरंगे दृश्य की याद आ गयी और वह कुढ़कर बोला :

"हमें तुम्हारी ज़मीन की कोई ज़रूरत नहीं। हम, बादशाहो, सारे ग्रहों की ज़मीन लेकर मेहनतकश जनता को बाँट देंगे—दस्तखत करो और ले जाओ!.."

ओकोरोक चीनी के पास रेत पर पसर गया और पैरों से रेत कुरेदते हुए बोला :

"जब जापनिया मिकाडा को गोली से उड़ायेंगे, स्साला सूअर की तरह चूं-चूं करेगा। बड़ा मजा आयेगा!.. उसे शायद इसका गुमान तक न होगा, क्यों सेन्का? तुम्हारा क्या ख़्याल है, येगोरिच?"

"वो जाने, उनका काम जाने," अनिच्छा के साथ वेर्शीनिन ने उत्तर दिया।

बालुई तट पर चट्टानें थीं और आगे दूरी पर पहाड़, बलूत और देवदारू के वन। ऊँचाई पर, चीड़ के तने पर राल की बूँद की तरह, पीले कपड़ों में सन्तरी चट्टान पर खड़ा था।

वेर्शीनिन कदम पटकते हुए छकड़ों के बीच चला गया।

सिन बिन-ऊ बोला :

"दील धीले-धीले कशक रिया है... हूँ?"

"ठीक हो जायेगा," ओकोरोक ने सिगरेट सुलगाते हुए उसे दिलासा दिया।

सिन बिन-ऊ सहमत था :

"कुस नहीं, सप टीक होगा।"

किरमिजी क़मीज़ पहने, चेचकरू चेहरेवाले आदमी ने वेर्शीनिन के कोट का किनारा पकड़ा और उसे एक तरफ़ ले जाकर रहस्यमय ढंग से फुसफुसाते हुए कहने लगा :

"मैं तुम्हें समझता हूँ। तुम सोचते हो कि मैं निरा उल्लू हूँ। तुम उनके दिमाग़ में भर दो, यकीन करके सब कुछ कर डालेंगे!.. सबसे बड़ी बात आदमी में यकीन की है... और इण्टरनेशनल की बात कैसी रही?"

वह आँख मारकर और भी धीमे स्वर में बोला :

"मैं तो जानता हूँ कि वहाँ कुछ नहीं है। ऐसे ऊँचे शब्दों के पीछे कभी कोई काम की बात नहीं होती। शब्द सीधा-सादा होना चाहिये, जैसे खेत... अच्छा शब्द है।"

"अच्छे शब्दों से मेरा जी भर चुका है।"

"छोड़ो भी। ये ही कहते आये हो और कहते रहोगे। तुम उनके दिमाग़ में ठूँस दो। बाद में फालतू बातें छिपा सकते हो... हमेशा ही यही किया जाता है। आख़िर किसी-किसी आदमी को ऊँची-ऊँची बातों की ज़रूरत होती है, यह जात ही ऐसी है... वह तुमसे धेले की बात नहीं करेगा पर लाखों की करवा लो उससे, करन दो, करन दो... तुम्हारा क्या जाता है, तुम्हें तो यह मालूम है कि कितने पानी में हो... ही-ही-ही!.."

देहाती ने अपनेपन के साथ वेर्शीनिन का कन्धा थपथपाया।

वेर्शीनिन को अपना बदन सिकुड़ता, दहकता लग रहा था। उसने छकड़े के नीचे लेटकर सोने का प्रयास किया पर नींद नहीं आयी।

वह उछलकर खड़ा हुआ, जोर से पेटी कसी, लोहे की चिलमची में भरे गर्म पानी से हाथ-मुँह धोया और जवान लड़कों को जमा करने चल दिया।

"चलो ट्रेनिंग के लिये। जल्दी-जल्दी!.."

जैली जैसे थुलथुल और धुँधले चेहरोंवाले लड़के तत्परता के साथ जमा हो रहे थे।

वेर्शीनिन ने उन्हें एक कतार में खड़ा किया और आदेश दिया :

"सा ऽऽ वधान!.."

और इस चिल्लाहट से उसने अपने को सैनिक महसूस किया :

"दाहिने ऽऽ देख!"

वेर्शीनिन शाम होने के बाद भी काफ़ी देर तक लड़कों को प्रशिक्षण देता रहा। लड़कों का पसीना बह रहा था, वे कुढ़कर सूरज की ओर ताकते कवायद कर रहे थे।

"आधा बायें घूम!.. देख के। जापानी के घर जायेंगे!"

एक लड़का करुण मुस्कान के साथ बोला :

"आप भी क्या कहते हैं?"

लड़का, समुद्र के नमक से बदरंग पलकें झपकता, सहमा-सहमा बोला :

"जापानी की क्या बात कर रहे हो? कहीं अपना ही हाथ से न निकल जाये। कहते हैं जापानी के पास समुन्दर है... और पानी उनका गरम है, ईसाई उसे नहीं पी सकता।"

"अरे ठूँठ, हमारे जैसे ही लोग हैं!"

"पर वे पीले क्यों हैं? गरम पानी की वजह से, कहते तो यही हैं।"

लड़के हँस पड़े।

वेर्शीनिन ने पाँत का शुरू से लेकर आखिर तक निरीक्षण किया और सख़्ती से आदेश दिया :

"कम्पनी, फायर!.."

लड़कों ने अपनी रायफलों के घोड़े दागे।

छकड़े के नीचे लेटे किसान ने सिर उठाया और बोला :

"सिखा रहा है। बड़ा पाबन्द है आदमी है ये वेर्शीनिन..."

दूसरे ने उनींद में उत्तर दिया :

"पत्थर नहीं चट्टान है... बड़ा कोमिसार बनेगा।"

"वह? ज़रूर।"

वारण्ट अफ़सर ओबाब

17

कज़्ज़ाक ने क्लान्त स्वर में उत्तर दिया :

"जी हाँ... दस्तावेजों के साथ..."

देहाती धड़ झुकाये खड़ा था और ललौंहे रूमाल जैसी उसकी दाढ़ी छाती से कसकर चिपकी थी।

कज़्ज़ाक ने लिफाफा देते हुए कहा :

"बूटों में छिपा रखा था!"

बड़ी-बड़ी आँखोंवाला जवान स्टेशन कमांडेंट, नीची मेज पर थकान के मारे टिककर, छापेमार से पूछताछ करने लगा :

"तू... किस गिरोह का है... वेर्शीनिन का?.."

कैप्टन नेज़ेलासोव अपनी झुँझलाहट को दबाते हुए सिपाही के पायताबे की तरह बदबू छोड़ती कमाण्डेण्ट के कमरे में पड़ी बेंच को हथेली से सहलाता, ठिठुरन से काँप रहा था। वह जाना चाहता था पर बगल के कमरे में ठकठक करती टेलीग्राफ मशीन उसे नहीं जाने दे रही थी :

"शायद... आदेश हो... शायद..."

कमाण्डेण्ट ने मन्द-मन्द चमकते चौकोर क़ागज़ों को सरकाते हुए क्लान्त स्वर में पूछा :

"कितने हैं?.. क्या?.. कहाँ?.."

जब प्रवेश द्वार को ज़ोर से बन्द किया जाता तो दीवार से पलस्तर झाड़ता। नेज़ेलासोव को लगा कि कमाण्डेण्ट शान्त होने का दिखावा कर रहा है।

"खुश करना चाहता... बख़्तरबन्द रेल खड़ी है... देख लो, हमारे लोग हैं यहाँ..."

और खुद का वही हाल हो रहा था जो उस भालू का होता है जो बर्फ के टुकड़े में जमी ह्वेल की कमानीदार हड्डी को निगल जाता है। बर्फ पिघल जाती है, कमानी खुल जाती है, पहले एक आँत को फाड़ती है फिर दूसरी को...

देहाती सहमा हुआ गँवारू बोली में बोल रहा था और बस ये शब्द कहते समय : "शहर तो, कहे हैं, हमारे लोगन के हाथ आय गयो है," उसने सख़्त नज़र से देखा और फिर नज़रें छिपा लीं।

खिड़की में लाल-लाल गालोंवाला जनना चेहरा दिखायी पड़ा :

"कमाण्डेण्ट साहब, शहर से जवाब नहीं दे रहे।"

कमाण्डेण्ट बोला :

"कहते हैं गोली नहीं मारते, डण्डों से..."

"क्यों?..." लाल-लाल गालों वाले चेहरे ने पूछा।

"जाकर काम कीजिये, आपको क्या पड़ी है! सुना आपने, कैप्टन?"

"हो सकता है... सब हो सकता है... पर मैं तो सोचता हूँ..."

"क्या?"

"छापेमारों ने तार काट दिये। हाँ-हाँ, बस तार ही काट दिये हैं..."

"नहीं, मेरा यह ख़्याल नहीं है। हालाँकि..."

जब कैप्टन प्लेटफार्म पर निकला कमाण्डेण्ट खिड़की के दासे पर अपने बदन को थकान के साथ लिटाकर ज़ोर से बोला :

"कैप्टन, क़ैदी को लेते जाइये।"

ललौहीं दाढ़ीवाला देहाती बख़्तरबन्द रेल में निश्चल बैठा था। उसे काटो तो खून नहीं। चेहरा और हाथ गीली धूसर मिट्टी की तरह लिपलिपे थे।

जब उसे गोली मारी जा रही थी तो सिपाहियों को लगा कि वे लाश को गोली मार रहे हैं। इसीलिये शायद एक सिपाही ने गोली चलाने से पहले आदेश दिया :

"अरे, तू बूट तो उतार दे नहीं तो बाद में झंझट होगा।"

देहाती ने सहज चेष्टा से बूट उतार डाले।

बाद में उसके घावों से फूटती खून की घनी धारा को देखकर घिन आ रही थी।

ओबाब अपने कम्पाटमेण्ट में नन्हे से गठरी बने क्षीण पिल्ले को लाया। नन्ही-सी

गठरी झिझककर वारण्ट अफ़सर की चौड़ी हथेली से रेंगकर पलंग पर चली गयी और पिनपिनाने लगी।

"आपको क्या ज़रूरत है?" नेजेलासोव ने पूछा।

ओबाब ने अपने खास अन्दाज़ में खींसे काढ़ीं :

"जानवर है। गाँव में हमारे ढोर हैं। मैं बरनाउल जिले का हूँ।"

"बेकार ही... हाँ, वारण्ट अफ़सर व्यर्थ है।"

"क्या?"

"यहाँ आपके जिले की किसको ज़रूरत? आप... देखो... वारण्ट अफ़सर ओबाब हैं, ऊपर से सुनहरे फीतोंवाले फ़ौजी अफ़सर और... क्रान्ति के शत्रु। और कुछ नहीं"

"तो?" ओबाब रुखाई से बोला।

और अगोचर-से आनन्द को छलकाते हुए कैप्टन बोला :

"मतलब तो यही निकलता है कि... क्रान्ति के शत्रु के रूप में आपको नष्ट किया जाना है। नष्ट किया जाना है!"

ओबाब ने अपने घुटनों और हाथों की सूखी जड़ों जैसी मोटी उँगलियों पर खोयी-खोयी नज़र डाली और अस्फुट स्वर में शब्दों को खींच-खींचकर बोला :

"बकवास। हम उनका कीमा बना देंगे!"

चलती बख़्तरबन्द रेल में बेहद घुटन थी। शरीर पिघलकर पसीना बन रहा था, हाथ दीवारों और बेंचों से चिपक रहे थे।

बस, जब ललौंही दाढ़ीवाले देहाती को बाहर ले जाकर गोली मारी जा रही थी डिब्बे में हल्की-सी क्षीण, रुग्ण हवा ने प्रवेश किया और चेहरे को थोड़ी सी ताजगी दी। इस्पात जैसे आकाश का टुकड़ा और मैपलों की कुम्हलायी पत्तियों के चिथड़े पल भर को दृष्टिगोचर हुए थे।

पिल्ला मनहूस पिनपिनाहट कर रहा था।

कैप्टन नेजेलासोव जल्दी-जल्दी डिब्बों के चक्कर लगा रहा था और औरतों की तरह चीखकर गालियाँ दे रहा था। सिपाहियों के मौन चेहरे लटके थे और कैप्टन इन शब्दों की बौछार कर रहा था :

"चुप, हरामजादो! बकबक मत करो, चुप!.."

सिपाहियों के जबड़े और भी लटक जाते और उन्हें अपने मनहूस विचारों से डर लगने लगता। जब कैप्टर चिल्लाता तो उन्हें लगता कि कोई अवज्ञाकारी मशीनगनों और तोपों के पास बैठा धीमे-धीमे स्वर में चें-चें कर रहा हो।

और वे झट से मुड़कर उधर देखते।

नाजुक तख़्तों को ढँकनेवाली फौलादी चादरें दियासलाई की तीलियों की तरह समतल पटरियों पर पूर्व की ओर, शहर की ओर, सागर की ओर उड़ी चली जा रही थी।

18

सिन बिन-ऊ को जासूसी के लिये भेजा गया था।

टोकरी में उसने सूरजमुखी के भुने बीज भरे और पेंदी में रिवाल्वर छिपा दी। वह बीज बेच रहा था और होंठों पर उसके नटखट मुस्कान थी।

चाँदी की दोहरी गोट लगी काली बिरजिसवाले फ़ौजी अफ़सर ने चीनी का मस्त चेहरा देखकर झुककर उससे हड़बड़ी कर पूछा :

"कोकेन है?"

सिन बिन-ऊ ने अपनी दरारों जैसी आँखों को कसकर मूँदा और मानो खेद के साथ बोला :

"ना!"

फ़ौजी अफ़सर सख़्ती से तनकर खड़ा हुआ

"क्या है?"

"शूलजमुखी का बीज।"

"यहूदियों के हाथ बिक गये," जाते-जाते फ़ौजी अफ़सर बोला। "फ़ाँसी का फन्दा तुम सबकी बाट जोह रहा है!"

नीले गेटरों और गन्दे अस्पताली चोगे जैसा बरानकोट पहने पिचकी छातीवाली ठिगना सिपाही चीनी के पास बैठा बता रहा था :

"हमारे यहाँ सेमीपलातिन्स्की प्रान्त में, चीनी भैया, तरबूज बिल्कुल खास होता है–चीनी तरबूज की क्या औकात उसके सामने।"

"शान्गो," चीनी उससे सहमत हो गया

"घर जाने का मन करता है, पर मुझे, देखो, समुन्दर की तरफ़ खींच रहे हैं।"

"जा।"

"कहाँ?"

"घर।"

"थक गया। ले जायेंगे–चला जाऊँगा, पर खुद जाने की हिम्मत नहीं।"

"बीज बरे हैं।"

"क्या?"

चीनी ने टोकरी हिलायी। सूखे बीज सरसराये, उनसे राख की गन्ध उड़ी।

"रूसी खोपरी में बीज बरे हैं। भौत-भौत... खरखर करते हैं..."

"क्या सरसराता?"

"बीज..."

"तू क्या चाहता है कि खोपड़ी में पत्थर भरे हों?"

चीनी ने होंठ हिलाकर अनुमोदन किया और सामने से गुजरते चापड़ अफ़सर की सलेटी ट्यूनिक की ओर इशारा करके पूछा :

"कौन?"

"कैप्टन नेजेलासोव, अबे चीनी, यह बख़्तरबन्द रेल का सबसे बड़ा अफ़सर है। रेल को शहर में बुला रहे हैं, यहाँ से जा रही है। यहाँ तो छापेमार हम सबको मार डालेंगे, क्यों?"

"शान्गो... पू शान्गो..."

"तेरे लिये तो सब शान्गो है, पर भुगताना तो हमें पड़ेगा!"

चीनी के सामने भूरी आँखोंवाला एक युवक रुका, उसके कन्धे पर लदी बोरी से पंखों का रोयाँ झाँक रहा था। युवक ने हँसमुख स्वर में चिल्लाकर पूछा :

"हो गयी बिक्री?"

चीनी झटपट उठा और युवक के पीछे-पीछे चल पड़ा।

बख़्तरबन्द रेल मेन लाइन पर आ गयी। प्लेटफार्म से शरणार्थियों ने कौतुक और उदासी के साथ उसकी ओर देखा और डरकर कानाफूसी करने लगे। थके-माँदे कज़्ज़ाक वहाँ से गुजरे। लम्बी दाढ़ीवाला बूढ़ा उबले पानी की की टोंटी के पास खड़ा रो रहा था और जब वह आँसू पोंछता तो उसके छोटे-छोटे साफ़ हाथ दिखायी पड़ते।

कौतूहल और अगोचर हर्ष के साथ नज़रें दौड़ाता ठिगना सिपाही पास से गुजरा, उसने हरी परत से ढके सड़ांध के बदबूवाले पानी से भरी टंकी में झाँककर देखा।

"ज़िन्दगी का यही हाल है," वह प्यार के साथ बोला।

सोरघम के खेत में चीनी भूरी आँखोंवाले युवक को फुसफुसाते हुए कुछ बता रहा था।

19

रात को बेहद घुटन हो गयी। घुटन मनहूस लोहे की तरह काले खेतों, जंगलों से मतवाली लहरों की तरह आ रही थी और होंठों को वह कुनकुने पानी जैसी लगती और हर साँस के साथ छाती में भारी, गीली मिट्टी की तरह विषाद भरता जा रहा था।

यहाँ दिन और रात का मिलन बहुत छोटा होता, पगले की अक्ल की तरह। एकदम अँधेरा छा जाता। आकाश चिन्गारियों से पटा था। चिंगारियाँ इंजन के पीछे-पीछे दौड़ रही थीं, इंजन पटरियों, अंधकार को चीरता और असहाय क्रन्दन करता जा रहा था।

और पीछे से पर्वत और वन दौड़ते आ रहे थे। लगता था कि बस अभी आकार वे कुचल देंगे जैसे भेड़ गुबरैले को कुचल देती है।

ऐसे क्षणों में वारण्ट अफ़सर ओबाब हमेशा कुछ न कुछ खाता रहता था। वह

किरमिज के थैले से जल्दी-जल्दी अण्डे निकालता, उनके छिलके उतार डालता, मुँह में रोटी, मक्खन, मांस ठूँसता। मांस उसे अधपका पसन्द था, वह उसे आगे के दाँतों से चबाता और कम्बल पर शहद की तरह चिपचिपी लार टपकाता। पर पेट में पहले की तरह ही गर्मी और भूख महसूस होती।

उसका अर्दली स्पिरिट में चाय घोलता, गाड़ी रुकने और खाने-पीने के सामान की टोकरियाँ लाता और असमंजस में उसे रिपोर्ट देता :

"शहर के साथ सम्पर्क नहीं है, साहब।"

ओबाब बिना कुछ बोले टोकरी झपट लेता और अपनी गठीली उँगलियों से डबलरोटी नोच-नोचकर खाने लगता और जब पेट भर जाता तो वह बची डबलरोटी का मजा लेते हुए मसलता, गूँधता और फिर फेंक देता।

पिल्ले को फ़र्श पर छोड़कर ओबाब निश्चल लेटा उसे अपनी धुँधली नज़र से ताक रहा था। शरीर स्वेद से ढक रहा था। जब बाल पसीने से तर हो गये तो विशेषकर अप्रिय लगने लगा।

पिल्ला भी पसीने से तर पिनपिना रहा था। धुरियों के बियरिंग चीत्कार कर रहे थे। फौलाद ऐसे गर्जन कर रहा था मानो रिवेट ठोके जा रहे हों..."

अपने कम्पार्टमेण्ट में नेजेलासोव तेज़ हवा में सुलगायी गयी दियासलाई की तरह भभककर कातर स्वर में बुदबुदा रहा था :

"निकल जायेंगे... भाड़ में जाये!.. हमें किन्हीं आदेशों की ज़रूरत नहीं!.. हम थूकते हैं!.."

पर कल की तरह आज भी बख़्तरबन्द रेल वैसे ही जल्दी-जल्दी एक के बाद एक मील भकोसती जा रही थी जैसे ओबाब खाना। उसी तरह काँटेवालों की गुमटियाँ झिलमिलातीं और वैसे ही खेतों-मैदानों, हवा और सागर की मार सहता पटरी के उस सिरे पर अबोधगम्य और भयंकर चुप्पी साधे शहर अपनी ज़िन्दगी जी रहा था।

"निकल जायेंगे," कैप्टन खँखारता और इंजन ड्राइवर के पास दौड़ा जाता।

साँवले चेहरेवाला, आवेगी इंजन ड्राइवर अपने अंग-प्रत्यंग को हिलाता नेजेलासोव से चिल्लाकर कहता :

"चले जाइये!.. चले जाइये यहाँ से!.."

कैप्टन चुपके से मुँह बनाता इंजन ड्राइवर पर शब्द-जाल डालने लगता :

"आप घबराइये मत... छापेमार नहीं हैं यहाँ... अरे हम निकल जायेंगे, हाँ-हाँ, ज़रूर... पर आप थोड़ी रफ़्तार बढ़ाइये... क्यों... हम फिर भी..."

इंजन ड्राइवर उफा शहर का वालंटियर था और उसे अपनी कायरता पर शर्म आती थी।

खलासी अँधेरे में उँगली से इशारा करके कहता :

"लाल लाइन पर है... देख रहे हैं?"

कैप्टन इंजन ड्राइवर की काली आँख की ओर देखता और उत्तेजना के साथ 'लाल लाइन' के बारे में सोचने लगता। उसको पार करके भाप का इंजन फट जायेगा, पागल हो जायेगा।

"हम सब... हाँ... इंजन बन गये हैं..."

कोयले और तेल की बदबू आ रही थी।

बागी मज़दूरों की याद आ जाती।

नेजेलासोव अचानक झपटकर इंजन से निकलता और रेल में दौड़ता चिल्लाता :

"गोली चलाओ!.."

न जाने क्यों सिपाही पेटियाँ कसकर मशीनगनों के पास खड़े होकर अँधेरे में गोलियाँ छोड़ने लगते। मशीनों के सुपरिचित काम को देखकर मतली आती।

ओबाब आता। चिकने होंठ और पसीने से तर माथा चमकता। वह एक ही बात पूछता :

"हम पर गोलियाँ चलायी जा रही हैं? हम पर गोलियाँ चलायी जा रही हैं?"

कैप्टन आदेश देता :

"बस करो!"

"जाकर सो लीजिये, कैप्टन!"

रेल में चीज़ें और लोग–सब कुछ दौड़ और चीख रहा था। वारण्ट अफ़सर ओबाब के कम्पार्टमेण्ट में सलेटी पिल्ला भी चीं-चीं कर रहा था।

कैप्टन जल्दी-जल्दी सिगरेट सुलगाने लगा :

"जाइये... भाड़ में! भकोसिये... जो जी चाहे... आपके बिना काम चला लेंगे।"

और चीखकर कहता :

"वारण्ट अफ़सर!.."

"जी, मैं सुन रहा हूँ," वारण्ट अफ़सर बोला, "आप क्या ढूँढ रहे हैं?"

"निकल जायेंगे... मैं कहता हूँ–निकल जायेंगे!.."

"जाहिर है। हमारे पास सब कुछ काफ़ी है।"

कैप्टन ने स्वर धीमा करके कहा :

"कुछ नहीं है। खो डाला!.. डण्डी है... न पलड़े हैं... न बाट... किसे और कैसे हम तौलेंगे!.."

"अरे मैं तो उन सबको..."

कैप्टन अपने कम्पार्टमेण्ट की ओर बड़बड़ाता हुआ चल पड़ा :

"हैं... ज़मीन यहाँ... खिड़की के बाहर... आप की तरह... अभी तो वह... आपको वह... लानत देती है, क्यों?.."

"आप क्या बकबक कर रहे हैं? मुझे पसन्द नहीं। संक्षेप में कहिए।"

"वारण्ट अफ़सर, हम हैं न... लाशें हैं... आनेवाले कल की। मैं भी, आप भी

और रेल में सब लोग–मिट्टी हैं मिट्टी... आज हमने एक आदमी को गाड़ दिया और कल... हमारी क़ब्र खोदने को तैयार है फावड़ा... हाँ।"

"इलाज करना चाहिये आपको।"

कैप्टन ओबाब के बिल्कुल पास आकर तेज़ी से फेफड़ों में साँस खींचकर फुसफुसाया :

"फौलाद का इलाज नहीं किया जाता, उसे पिघलाकर फिर से ढाला जाता है... यह भी उसके साथ किया जाता है... जो चलता है... काम करता है... और अगर जंग लग गया... मैं ज़िन्दगी भर किसी चीज़ में यक़ीन करता रहा, पर... निकला यह कि मैं गलती कर रहा था... यह अच्छी बात है कि मरते वक्त गलती को... मैं तो सिर्फ़ तीस का हूँ, ओबाब। तीस का, और मेरा बच्चा है–वा-ल्का ऽऽ नाम है उसका... और नाखून उसके गुलाबी हैं, ओबाब..."

ओबाब के अमरीकी बूट की नोक की तरह भोथरे विचार छिन्न-भिन्न हो गये। वह अपने कम्पाटमेण्ट में लौट आया, सिगरेट निकाली और उसे सुलगाये बिना ही थूकने लगा–शुरू में फ़र्श पर, फिर बन्द खिड़की, दीवारों और कम्बल पर और जब मुँह सूख गया वह पलंग पर बैठ गया और फ़र्श पर चीं-चीं करती नन्हीं सी गीली, सजीव गठरी को शून्य भाव से ताकने लगा।

"कीड़ा कहीं का!.."

20

प्रातः कैप्टन दौड़ा-दौड़ा ओबाब के कम्पार्टमेण्ट में आया।

ओबाब औंधा पड़ा था, उसने कन्धे ऐसे उचका रखे थे मानो उनसे सिर ढँक रहा हो।

"सुनिये," ओबाब की आस्तीन खींचकर कैप्टन झिझक के साथ बोला।

ओबाब उसकी ओर मुड़ा, उसने अपनी पीठ हड़बड़ाकर वैसे ही छिपायी जैसे कोई कोट का फटा अस्तर छिपाता है।

"गोली चल रही है? छापेमार हैं क्या?"

"अरे, नहीं... सुनिये तो मेरी बात!.."

ओबाब की पलकें घुटन के कारण सूजी और नम थीं और कपड़े में छेद की तरह आँखें धुँधली और खोयी-खोयी नज़र से देख रही थी।

"क्या लोगों के बीच... मेरे लिये कोई स्थान नहीं, ओबाब?.. समझिये तो सही... मैं... चिट्ठी पाना चाहता हूँ। घर से, हाँ!.."

ओबाब ने फटे स्वर में कहा :

"नींद आ रही है, परेशान न करें!"

"मुझे चाह है... घर से चिट्ठी पाने की... पर कोई मुझे लिखता नहीं!.. मुझे कुछ पता नहीं। आप ही मुझे लिख दें, वारण्ट अफ़सर!.." कैप्टन लजाकर ही-ही हँसा : "क्यों... बस चुपके से लिखकर डाल दें, क्यों..."

ओबाब उछलकर खड़ा हुआ, उसने काँपते हाथों से ऊँचे बूट चढ़ाये और फिर कर्कश स्वर में चिल्ला पड़ा :

"आप सिर्फ़ फ़ौजी मामलों में मेरे अफ़सर हैं, हाँ! और मुझसे ऐसी बातें करने की हिम्मत न कर! खुद मेरा भी... बरनाऊल जिले में..."

वारण्ट अफ़सर ऐसे तनकर खड़ा हो गया मानो परेड कर रहा हो।

"क्या पता तोपें साफ़ न हों? जाकर दे दूँ हुक्म? सिपाही नशे में धुत्त पड़े हैं और तू है कि... तुझे कोई हक नहीं..."

वह हाथ हिलाने लगा और पेट खींचकर बोले जा रहा था :

"मुझे तेरी क्या पड़ी है? मैं तुझ पर तरस नहीं खाना चाहता, नहीं चाहता!"

"उदासी छायी है, वारण्ट अफ़सर... और आप... आख़िर आप तो... आदमी ही हैं!"

"तेरी ज़िन्दगानी सड़ियल है। तू खुद सड़ियल है... बचपन में मूठ मारता होगा, क्यों... देखो तो, इसे, प्यार की इच्छा हो रही है..."

आप समझिये भी... ओबाब।"

"फ़ौज के कायदे में ऐसा कुछ नहीं कहा गया है।"

"मैं अनुरोध करता हूँ..."

वारण्ट अफ़सर चिल्ला पड़ा :

"मैं नहीं चा-ह-ता!"

और उसने कई बार ये शब्द दोहराये और हर बार वे अधिकाधिक अस्पष्ट होते जा रहे थे। गले से सिर्फ़ किसी भागती फ़ौज के कोहराम की तरह अपार आतंक भरा भयंकर नाद ही निकल रहा था।

वे एक-दूसरे को सुने बिना गला फाड़-फाड़कर चिल्ला रहे थे और जब तक उनके गले न बैठ गये, मुँह न सूख गय वे यही करते रहे।

कैप्टन थककर पलंग पर बैठ गया और पिल्ले को घुटनों पर बिठाकर विषाद के साथ बोला :

"मैं सोचता था... पत्थर है। आपके बारे में... पर निकला बर्फ़ का टुकड़ा... गर्मी से पिघल गया!"

ओबाब ने खिड़की खोल डाली, लपककर कैप्टन के पास आया और पिल्ले की गुद्दी दबोच ली।

कैप्टन उसके हाथ से लटक गया और चिल्लाया :

"इसकी जुर्रत न करना!.. फेंकने की हिम्मत न करना!"

पिल्ला चीं-चीं करने लगा।

"छो ऽऽ!.." घने, कातर स्वर में ओबाब कराहा। "छो-ड़ दे..."

"नहीं छोड़ूँगा, कहे देता हूँ, नहीं छोड़ूँगा!.."

"छो ऽऽ ड़!"

"हट!.. मैं!.."

ओबाब ने हाथ हटाया और मानो जानबूझकर पाँव पटकता बाहर चला गया।

पिल्ला धीमे-धीमे पिनपिना रहा था। वह फ़र्श पर, कम्बल पर अपने सलेटी पंजों से डगमगाता चल रहा था। वह गीले रेंगते धब्बे की तरह लग रहा था।

"देखो, बेचारे को," नेजेलासोव बोला और अचानक उसका गला रुँध गया, नाक में चिपचिपी नमी महसूस हुई। वह रो पड़ा।

21

कम्पार्टमेण्ट में घण्टी बज रही थी—बख़्तरबन्द रेल का इंजन ड्राइवर बुला रहा था।

नेजेलासोव ने क्लान्त स्वर में आवाज़ दी :

"ओबाब!"

ओबाब पीछे-पीछे चल रहा था और वह कैप्टन के छोटे-छोटे कदमों से झुँझला रहा था।

ओबाब बोला :

"यहाँ टूटे पुल तो है नहीं। क्या हो गया है? पटरी टूटी है... छापेमार... और शहर से कोई खबर नहीं। सब यूँ ही है!"

नेजेलासोव दोषी की तरह बोला :

"हम भी बड़े... अजीब ढंग से रहते हैं, हैं ना?.. अब तक... मैं नहीं जानता.. आपका पूरा नाम... बस, ओबाब ही ओबाब पुकारता रहता हूँ, क्यों हैं न मजे की बात?.. माफ़ कीजिये, बस, किसी कुत्ते के नाम की तरह..."

"नाम मेरा—सेम्योन अवदेइच है। अच्छा-खासा नाम है।"

इंजन ड्राइवर हमेशा की तरह लीवरों के पास खड़ा था। छरहरा बदन, नसें उभरीं, मूँछें ताँबें जैसी और आँखें उसकी मानो कालिख से ढकी थी।

आगे की ओर इशारा करके वह बोला :

"आदमी पड़ा है।"

नेजेलासोव उसकी बात का मतलब नहीं समझा। इंजन ड्राइवर फिर से बोला :

"पटरी पर आदमी लेटा है!"

ओबाब ने सिर बाहर निकाला। इंजन ड्राइवर ने झटपट कुछ लीवर सरकाये।

हवा ने ओबाब के बालों को फड़फड़ाया।

"कैप्टन साहब, लाइन पर कोई आदमी है!"

नेजेलासोव को वारण्ट अफ़सर के शान्त स्वर पर झुँझलाहट हो रही थी और वह तीक्ष्ण स्वर में बोला :

"गाड़ी रोको!"

"नहीं रोक सकता," इंजन ड्राइवर बोला।

"मैं हुक्म देता हूँ! मैं..."

"नहीं रोकी जा सकती," इंजन ड्राइवर ने फिर से कहा। "आप देर से आये हैं। कुचलकर रुक जायेंगे।"

"आख़िर आदमी पड़ा है! क्या?"

"नियम के अनुसार नहीं रोक सकता। नहीं तो गाड़ी पटरी से उतर जायेगी।"

ओबाब ने अट्टहास किया :

"रुकने की कोई भी ज़रूरत नहीं है। क्या हमने कम लोगों को मारा है? अगर हरेक के लिये रुकते तो हम नोवो-निकोलायेव्स्क शहर से आगे गये ही न होते।"

कैप्टन झुँझलाकर बोला :

कृपया मुझे न सिखायें! काटने के बाद रोक दीजिये! अनुरोध करता हूँ!.."

"जो हुक्म, कैप्टन साहब," ओबाब ने उत्तर दिया।

जल्दबाजी और रुखाई से दिये गये इस उत्तर ने कैप्टन को और चिढ़ा दिया और वह बोला :

"और आप, वारण्ट अफ़सर ओबाब, फौरन जाकर देखिये और आकर मुझे रिपोर्ट दीजिये कि पटरी पर किसकी लाश है।"

"जो हुक्म," ओबाब ने उत्तर दिया।

इंजन ड्राइवर ने रफ़्तार और तेज़ कर दी।

डिब्बे खिंचकर काँपे। तीखी सीटी गूँजने लगी।

पटरियों पर आदमी निश्चल पड़ा था। पीले स्लीपरों पर उसकी क़मीज़ नीले धब्बे की तरह दिखायी पड़ रही थी।

"बात खत्म," इंजन ड्राइवर बोला। "अभी रोककर देख लेते हैं।"

ओबाब क़मीज़ के कालर के बटन खोलते हुए ताकि पसीनी से तर बदन को हवा से ताजगी मिले, ऊपरवाली पैड़ी से सीधे ज़मीन पर कूद पड़ा। इंजन ड्राइवर भी उसके पीछे-पीछे कूद पड़ा।

दरवाज़ों में सिपाही प्रकट हुए। नेजेलासोव ने टोपी पहनी और वह भी दरवाज़े की ओर चल पड़ा। पर उसी क्षण जंगल से बख़्तरबन्द रेल पर गरजकर गोलियों की बौछार पड़ी। और कुछ समय बाद एक और भटकी-सी धाँय हुई।

वारण्ट अफ़सर ओबाब ने ऐसे आगे को बाँहें तानीं मानो पानी में गोता लगानेजा

रहा हो और अचानक पटरी के तटबन्ध पर ढहकर नीचे लुढ़क गया।

इंजन ड्राइवर सकपका गया और छकड़े से गिरी बोरी की तरह डिब्बे के पहियों के पास धम्म से गिर पड़ा। उसकी गर्दन पर खून निकल आया और उसकी ताँबई मूँछें मानो फौरन सफ़ेद हो गयीं।

"वापस लौटो!.. वापस!.." नेजेलासोव ज़ोर से चीखा।

डिब्बों के दरवाज़े गोलियों की धाँय-धाँय को दबाते धड़ाके से बन्द हो गये। हड़बड़ी में बाहर छूटा सिपाही डिब्बों के पास दौड़ रहा था। चौथे डिब्बे के पास वह मारा गया।

मशीनगनें ठक-ठक चलने लगीं।

रेल की पटरी

22

लगता था कि उसे अपने नाप के जूते नहीं मिले इसीलिये नंगे पाँव दौड़ रहा था। लोमड़मुखी के पाँव स्की की तरह बड़े-बड़े थे, पर शरीर भेड़ की तरह छोटा और क्षीण।

लोमड़मुखी अपने पाँवों तले देखता मानो चूज़ों को हाँक रहा हो जल्दी-जल्दी दौड़ता चिल्ला रहा था :

"जरा तेज़ चलो। जल्दी चलो। इन्तज़ार हो रहा है..."

और न जाने क्यों आँख मींचकर गुजरते दस्तों से पूछता :

"कितने लोग हैं?"

आँखें खोलकर टीले पर खड़े वेर्शीनिन को बाँकी अदा में चिल्लाकर बताता :

"ग्रीशातिन्स्की के हैं, निकीता येगोरिच!"

पहाड़ी की तलहटी पर जंगल छँट गया था और आँचल पर काई से ढके पत्थर ही पत्थर थे। पत्थरों से आगे पूर्व में आधे मील की दूरी पर छितरी झाड़ियाँ थीं और उनके आगे बिना सलीबोंवाली अनन्त क़ब्र की तरह रेलवे लाइन का पीला तटबन्ध उभरा हुआ था।

"मुत्योकावाले हैं, निकीता येगोरिच!" लोमड़मुखी चिल्ला रहा था।

कुचली सूखकर पीली पड़ती घास पर वेर्शीनिन की काली आकृति खड़ी थी। उसका बालों से ढका झबरीला चेहरा किसी पशु जैसा लग रहा था, नज़र लम्बी कूच की थकान से कुम्हलायी थी और हाथ क्लान्त थे। मशीनों का आदी पेन्तेफ्ली ज्नोबोव उसके पास खड़ा निश्चिन्तता और उल्लास का अनुभव कर रहा था। ज्नोबोव बोला :

"बहुत लोग आ रहे हैं।"

और उसने ऐसे हाथ आगे बढ़ाया मानो किसी चुस्त-दुरुस्त मशीन का लीवर थाम रहा हो।

"अनीसीमोव्कावाले, सोस्नोव्कावाले भी आ गये!"

ललौंहे सिरवाला वास्का ओकोरेक सुनहरी अयालवाले नाटे रहवाल घोड़े को दौड़ाता टीले के पास आया और बूटों से घोड़े की गर्दन गुदगुदाते हुए चिल्लाया :

"आ रहे हैं! पाँचेक हज़ार होंगे!"

"ज़्यादा होंगे," पत्थरों के पास से लोमड़मुखी विश्वास के साथ बोला। "अगर मैं पढ़ा-लिखा होता तो मैं तुझे पूरी फेहरिस्त बनाकर दिखा देता। लाखों होंगे!"

उसने गुजरते लोगों से ज़ोर से चिल्लाकर पूछा :

"कहाँ के हो?!"

मंगोल नस्ल के नाटे घोड़ों और लोगों के कन्धों पर रस्कों से भरी देहाती खुरजियाँ लदी थीं। घोड़ों की अयालों और लोगों के बालों में पकी शरत्कालीन घास के तिनके भरे थे और स्वर विलम्बित पर शरतकालीन प्रव्राजी पक्षियों की तरह कर्कश थे।

"शुरू करें, क्या?" लोमड़मुखी चिल्लाकर बोला। "बाट जोह रहे हैं..."

हालाँकि सबको पता था कि शहर में विद्रोह हो गया है और श्वेतगार्डवालों की सहायता को बख़्तरबन्द रेल नं. 14-69 जा रही है और अगर उसे न रोका गया तो जापानी विद्रोह को कुचल देंगे, पर फिर भी जमा होने की आवश्यकता थी ताकि एक कहे और सब पुष्टि करें :

"चलो... सबको बताओ और सब सुनें।"

"जापानी अब और नहीं लड़ना चाहते," छकड़े से उतरते हुए वेर्शीनिन ने जोड़ दिया।

सिन बिन-ऊ छकड़े पर चढ़ गया और बड़ी देर तक, मानो मुँह से रंगीन क़ागज़ का अजीब-सी खड़खड़ाहट करता फीता निकालते हुए इसके बारे में बोलता रहा कि क्यों आज बख़्तरबन्द रेल को रोकने की ज़रूरत है।

शरतकालीन पेड़ों के सोने-ताँबे के बीच देहातियों के शरीरों से बुना मैला, मिट्टी की गन्ध छोड़ता कालीन बिछा था। कालीन कोलाहल कर रहा था। और यह समझ न आ रहा था कि वह छकड़े पर चढ़कर बोलनेवाले आदमियों के शब्दों से क्रोधित होकर गुँजार कर रहा है या खुश होकर।

"मतदान करें क्या?" मुख़्यालय के मोटे सचिव ने पूछा।

वेर्शीनिन ने उत्तर दिया :

"ठहर। अभी सबने नहीं गला फाड़ा।"

हरी-सी दाढ़ी, बदरंग, सूजी-सी आँखोंवाला बूढ़ा पेट पर क़मीज़ ठीक करते हुए मानो कोई उसके पेट पर कान टिकाना चाहता हो आवेश में फुफकारता वेर्शीनिन से कह रहा था :

"तू भगवान से मुँह मोड़कर कहाँ जा रहा है?"

"बस भी कर, बाबा!"

"तू भगवान की तौहीन कर रहा है। मुझे पता है! सन्त निकोलस प्रकट हुए थे—कह रहे थे कि समुन्दर में अब मछली नहीं रहेगी। वह नहीं देंगे। तू क्यों लोगों को उकसा रहा है?.. मुझे मकान बनवाना है और तू मेरे सारे मज़दूरों को ले गया।"

"मकान को तो तेरे, जापानी आग लगा देंगे!

"जापानी को मैं जानता हूँ," बूढ़ा जल्दी-जल्दी दाढ़ी पर थूक टपकाते बड़बड़ा रहा था, "जापानी चाहता है कि हम उसका धरम स्वीकार कर लें। अरे, लोग तो ठूँठ हैं ठूँठ, कुछ नहीं समझते। अरे हमें मान लेना चाहिये, मुसीबत से दूर रहने के लिये, भाड़ में जायें तो—चुपके-चुपके अपने भगवान की... पूजा की जा सकती है... सन्त निकोलास अपनों को तो माफ़ नहीं करेंगे पर जापानी की आँख में तो हमेशा धूल झोंकी जा सकती है..."

बूढ़ा ऐसे सिर हिला रहा था मानो किसी काली दीवार को फोड़ रहा हो और स्पष्ट था कि जो शब्द वह कह रहा था वे सच्चे दिल से कहे जा रहे थे पर वेर्शीनिन को उनकी कोई ज़रूरत न थी।

पर वह जंग लगी बाल्टी से रिसते पानी की तरह अपने क्षीण होंठों से मन की बात निकालता बड़बड़ाने लगा।

"जा यहाँ से!" वेर्शीनिन रूखाई के साथ बोला। "क्यों अपने भगवानों को लेकर हमारी नाक में दम कर रहा है? क्या हो गया... ज़िन्दगी रही तो भगवान भी पैदा कर लेंगे..."

"तू अधर्मी, पाप की बातें मत कर!"

ओकोरोक गुस्से में बोला :

"येगोरिच, मार स्साले के मुँह पर घूँसा! भड़काऊ कहीं का!"

उछलकर छकड़े पर चढ़कर ओकोरोक शब्दों को तौल-तौलकर चिल्लाया :

"हाँ, तो, साथियो, आपका क्या ख़्याल है?.. वोट डलवा लें?"

"डलवा लो!" भीड़ से कोई सहमा स्वर बोला।

लोग शोर मचाने लगे :

"चलो!.."

"सोचने की क्या बात है!.."

"कर शुरू, वास्का!"

जब वे मतदान करके बख़्तरबन्द रेल पर चढ़ाई करने का फ़ैसला कर चुके थे, बायीं ओर से, जंगल के ऊपर कहीं दूरी पर खड्ड से लुढ़की चट्टान की तरह गड़गड़ाहट हुई। विराट झबरीली झाड़ू की तरह आकाश में धुआँ उठा।

मोटे सचिव ने टोपी उतारी और क़ागज़ी जबान में लोगों से बोला :

"यह मुख्यालय का निर्णय था—हमारे लोगों ने मुकलेन्का नदी के पुल को उड़ा दिया। रेलगाड़ी अब हर हालत में शहर नहीं पहुँच सकेगी। हमारे तो पाँच जने शायद शहीद हो गये..."

लोगों ने टोपियाँ उतार लीं और मृतकों की आत्मा की शान्ति के लिये सलीब का निशान बनाया। जंगल के बीच से वे रेल की पटरी के तटबन्ध की ओर मोर्चा जमाने के लिये चल पड़े।

वेर्शीनिन झाड़ियों के बीच से होता हुआ तटबन्ध की ओर गया और उसके ऊपर चढ़ गया। स्लीपरों के बीच ज़मीन पर अपने पैर मानो गाड़कर बड़ी देर तक पश्चिम की ओर देखता रहा जहाँ दूरी पर चमकती फौलादी पटरियाँ विलीन होती थीं।

"क्या बात है?" ज्नोबोव ने पूछा।

वेर्शीनिन ने मुड़कर तटबन्ध से उतरते हुए कहा :

"हमारे बाद के लोग बेहतर ज़िन्दगी जियेंगे भी?"

"तो?"

"बस यही।"

ज्नोबोव मूँछों पर हाथ फेरकर आनन्द के साथ बोला :

"यह उनका मामला है। मेरा ख़्याल है कि यह उन स्सालों का कर्तव्य है!"

23

सफाचट चेहरे और छोटी-छोटी टाँगोंवाला व्यक्ति मेज पर छाती टिकाकर बोल रहा था, लगता था कि उसकी टाँगें बदन का बोझ न सह पा रही थीं :

"ऐसे नहीं करना चाहिये, कामरेड पेकलेवानोव : आपकी क्रान्तिकारी समिति संघों की परिषद के मत को बिल्कुल भी ध्यान में नहीं रखती। विद्रोह का समय अभी नहीं आया।"

कोने में कुर्सी पर बैठे मज़दूरों में से एक चिढ़कर बोला :

"जापानियों ने अपनी तटस्थता की घोषणा कर दी है। हम बैठे इसकी बाट तो देख नहीं सकते कि कब वे अपने टापुओं पर लौटेंगे। सत्ता हमारे हाथों में होनी चाहिये, तब वे जल्दी चले जायेंगे यहाँ से।"

छोटी-छोटी टाँगोंवाला दलील दे रहा था :

"संघों की परिषद भी, कामरेडो, बुरा नहीं चाहती, कुछ देख सकते हैं..."

"जब जापानी किसी और के हाथ बागडोर थमा दें।"

"फिर से जनता की नकेल खींचने लगे?"

"बहुत हो गया इन्तज़ार!"

सभा में शोर मचने लगा। पेकलेवानोव चाय के घूँट भरता हुआ लोगों को शान्त

करा रहा था :

"कामरेडो, आप कृपया शान्त रहें।"

संघों की परिषद का प्रतिनिधि विरोध कर रहा था :

"आप स्थिति को समझते नहीं। हाँ, यह सच है कि किसान बड़े जोश में हैं, पर... आप प्रचारकों को जिलों में भेज चुके हैं, किसान शहर की ओर आ रहे हैं, जापानी तटस्थ बैठे हैं... यह सच है!.. वेर्शीनिन चाहे बख़्तरबन्द रेल को रोक ले, पर फिर भी हम विद्रोह नहीं करेंगे।"

"दिखा दो इसे!"

"लफ्फाजी है यह सब!.."

"मुझे बोलने का मौका दीजिये!"

"कामरेडो, साथियो!"

पेकलेवानोव उठा, उसने बैग से क़ागज़ निकाला और पढ़ने लगा, उसका चेहरा लाल हो गया था :

"कृपया यह पढ़कर सुनाने की अनुमति दीजिये : 'साइबेरिया के जन कोमिसारों की सोवियत के प्रस्ताव के अनुसार विद्रोह का प्रारम्भ सोलह सितम्बर उन्नीस सौ उन्नीस को दोपहर बारह बजे के लिये नियत किया गया है। विद्रोह तोपखाना बटालियन की बैरकों से... के संकेत पर शुरू होगा... जन कोमिसारों की सोवियत..."

जाते-जाते छोटी टाँगोंवाला पेकलेवानोव से बोला :

"हम पर नज़र रखी जा रही है! आप सावधानी बरतें... और नौसैनिक को आपने बेकार ही देहात भेज दिया।"

"क्या हुआ?"

"ढीला आदमी है : कोई भरोसा नहीं, न जाने कब क्या कह डाले! आजकल लोगों को बड़ा जाँच-परख कर चुनना चाहिये।"

"किसानों को वह अच्छी तरह जानता है," पेकलेवानोव बोला।

"किसानों को कोई नहीं जानता। दिमाग़ में उसके हवा भरी है, यह सच है कि किसान ऐसे लोगों से प्रभावित होते हैं। फिर भी... सभा में चलेंगे?"

"कहाँ?"

"जहाज बनाने के कारखाने में। मज़दूर आपको देखना चाहते हैं।"

पेकलेवानोव का चेहरा लाल हो गया।

छोटी-छोटी टाँगोंवाला उसके पास आया और चेहरे से चेहरा सटाकर दबे स्वर में बोला :

"मुझे आप पर तरस आता है। पर आपके बिना वे कुछ नहीं करना चाहते। बातों में उन्हें विश्वास नहीं, वे तो आदमी को देखना चाहते हैं। कड़ी निगरानी है.. . जासूस फैले हैं... पकड़े गये तो गोली मार देंगे पर वे देखना चाहते हैं कि आप

साथ हैं या नहीं? बेकार का झंझट मोल ले रहे हैं।''

पेकलेवानोव ने पसीने से ढका चित्तीदार माथा पोंछा, अपने छोटे-छोटे हाथों को ऊँचे कोट की जेबों में ठूँसा और कमरे में चहलकदमी करने लगा। छोटी-छोटी टाँगोंवाला चश्मे के मोटे-मोटे शीशों से उसे ताक रहा था :

''निरी भावुकता है,'' पेकलेवानोव बोला, ''कुछ नहीं होगा!''

छोटी-छोटी टाँगोंवाले ने उसाँस ली :

''मर्जी आपकी है। मतलब आऊँ लिवाने आपको?''

''कब?''

पेकलेवानोव का चेहरा और लाल हो गया और उसने सोचा : ''अरे इसे तो अपनी चमड़ी का डर है।''

और इस विचार से वह बिल्कुल सकपका गया, हाथ तक काँपने लगे।

''मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। जब चाहें!''

शाम को छोटी-छोटी टाँगोंवाला घोड़ागाड़ी में आया और फुलवारी के पास इन्तजार करने लगा। झाड़ियों के बीच से उसके तिनको की टोपी और दंत ब्रुश जैसी पीली-पीली छँटी मूँछें दिखायी दे रही थीं। घोड़ा फूत्कार रहा था।

पेकलेवानोव की पत्नी रो रही थी। उसके दाँत पैने और चेहरा घनी लाली लिये था। उस पर आँसुओं का कोई काम न था, गुलाबी गालों और कोमल ठोड़ी पर वे नहीं सुहाते थे।

''तुमने मेरी जान चूस ली। हर दिन यही इन्तजार रहता है कि गिरफ़्तार हो जाओगे... भगवान जाने आगे क्या होगा... कुछ तो निश्चितता हो!.. मत जाओ!..''

वह कमरे में दौड़ रही थी, फिर दरवाज़े की ओर लपककर उसने हैंडल पकड़ लिया और अनुनय-विनय करने लगी।

''नहीं जाने दूँगी... कौन मुझे तुम्हें लौटायेगा, जब गोली मार देंगे तुम्हें? क्रान्तिकारी समिति? मैं थूकती हूँ उन सब पर, बेवकूफ़ों पर।''

''मान्या! आख़िर सेम्योनोव मेरा इन्तजार कर रहा है।''

''कमीना है वह, इसके सिवा और कुछ नहीं। नहीं जाने दूँगी, कह तो दिया, नहीं चाहती कि तुम जाओ! क्यों खड़े हो?..''

पेकलेवानोव बगलें ताककर दरवाज़े के पास आया। पत्नी का धड़ तेज़ हवा में तिनके की तरह झुक गया। मुड़े हाथ की नम त्वचा के नीचे नसें तन गयीं। पेकलेवानोव झेंपकर खिड़की के पास चला गया।

''मैं आपको नहीं समझ पाता!..''

''तुम किसी से भी प्यार नहीं करते... न मुझसे, न अपने से! मत जाओ!..''

छोटी-छोटी टाँगोंवाले ने दबे स्वर में घोड़ागाड़ी से पूछा :

''वसीली मक्सीमिच, कितनी देर लगेगी? नहीं तो अँधेरा होने के बाद दुकानें

बन्द हो जायेंगी।''

पेकलेवानोव धीमे से बोला :

शर्म आनी चाहिये, मान्या! क्या मैं पोदकोलेसिन* की तरह खिड़की से कूद जाऊँ? मैं मना तो कर नहीं सकता, कहेंगे, डर गया।''

''आख़िर मौत के मुँह में जा रहे हो। नहीं जाने दूँगी।''

पेकलेवानोव ने अपने छोटे, छँटे बालों पर हाथ फेरा।

''मजबूरी है।''

अपने ऊँचे कोट की जेबें टटोलकर और होंठों पर टेढ़ी मुस्कान के साथ वह खिड़की के दासे पर चढ़ने लगा।

''कितना बेतुका है... भला ऐसा करते हैं...''

पत्नी ने हाथों से चेहरा ढाँप लिया और ज़ोर से, मानो बनावटी ढंग से रोती हुई कमरे से बाहर भाग गयी।

''चलें?'' छोटी-छोटी टाँगोंवाले ने पूछा और उसाँस ली।

पेकलेवानोव को लगा कि उसे घर के अन्दर से रोने की आवाज़ सुनाई दी। उसने फूहड़ ढंग से जेब में हाथ डाला पर सिगरेट केस न मिला। घर लौटते हुए शर्म आ रही थी।

''आपके पास सिगरेट नहीं है?'' उसने पूछा।

24

निकीता वेर्शीनिन मोटे पेट और स्पेनियल कुत्ते जैसे झबरीले बालोंवाले घोड़े पर सवार होकर रेलवे लाइन के तटबन्ध के पास उगी झाड़ियों का निरीक्षण कर रहा था।

लोग झाड़ियों में लेटे सिगरेट पी रहे थे, लम्बी घात की तैयारियाँ कर रहे थे। दो स्टेशनों के बीच लगभग दस मील की लम्बाई पर तटबन्ध के दोनों ओर क़मीज़ों के दजनों, सैकड़ों रंग-बिरंगे धब्बे फैले थे।

घोड़ा सुस्त था, जीन की जगह बोरी थी। वेर्शीनिन के पैर झूल रहे थे, पायताबा ठीक से न लिपटा होने के कारण बूट एड़ी को बुरी तरह काट रहा था।

''देखना, लुगाइयाँ न हों,'' वह कह रहा था।

दस्तों के सरदार तनकर, मानो सैनिक मुस्तैदी से अपने को सान्त्वना दे रहे हों, उत्साह के साथ पूछ रहे थे :

''शहर की कोई ख़बर है, निकीता येगोरिच?''

''वहाँ विद्रोह हो गया है।''

---

* गोगोल की रचना 'विवाह' का नायक जो शादी के डर से खिड़की से कूदकर दुल्हन के यहाँ से भाग जाता है।

"सफलता कितनी मिली? फ़ौजी सफलता?"

वेर्शीनिन घोड़े के पेट पर एड़ी मारता और शरीर में उनींद तथा थकान को महसूस करता हुआ घोड़े को आगे बढ़ा देता।

"सफलताएँ, यार, अच्छी हैं। बस हम न बिगाड़ दें!"

लोग तटबन्ध के किनारे-किनारे ऐसे खड़े हो गये मानो फसल काटनेवाले हों। वे बाट जोह रहे थे।

पटरी का खाली तटबन्ध अजीब-सा लग रहा था। पिछले दिनों शरणार्थियों, जापानी, अमरीकी और रूसी सिपाहियों से भरी रेलगाड़ियाँ एक के बाद एक पूर्व की दिशा में जा रही थीं। कहीं लाइन कट गयी थी और लोग उल्टी दिशा में उमड़ पड़े। कहा जा रहा था कि पहाड़ियों से आये छापेमार शरणार्थियों को लूट रहे हैं और यह सुनकर ईर्ष्या होती। अकेली बख़्तरबन्द रेल नं. 14-69 ही स्टेशनों के बीच इधर-उधर दौड़ रही थी और सिपाहियों को सब कुछ छोड़-छाड़कर भागने नहीं दे रही थी।

छापेमारों का मुख्यालय काँटेवाले की गुमटी में था। काँटेवाला मुँह लटकाये टेलीफ़ोन के चोंगे के पास खड़ा था और स्टेशन से पूछ रहा था :

"बख़्तरबन्द रेल जल्दी आ रही है?"

उसके पास शान्त चेहरेवाला छापेमार रिवाल्वर निकाले बैठा था और काँटेवाले का मुँह ताक रहा था।

वास्का ओकोरोक काँटे वाले की हँसी उड़ा रहा था :

"हम तुझे बावर्ची बना देंगे। तू घबरा नहीं!"

और टेलीफ़ोन की ओर इशारा करके बोला :

"कहते हैं, पेत्रोग्राद में बोल्शेविकों के विज्ञानी तो चाँद से बातें करते हैं?"

"सच तो सच ही होता है।"

लोगों ने उसाँस लेकर तटबन्ध पर नज़र डाली।

"सच तो चीज़ ही ऐसी है, तारों तक को छू सकता है।"

मुख्यालय बख़्तरबन्द रेल का इन्तजार कर रहा था। पुल की ओर पाँच सौ लोगों को भेजा गया, तटबन्ध के पास लम्बे रूसी ठेलों पर लादकर लट्ठे लाये गये ताकि बख़्तरबन्द रेल वापस न लौट जाये। स्लीपरों के पास सब्बल पड़े थे—पटरी उखाड़ने के लिये।

ज्नोबोव झुँझलाकर बोला :

"सच ही सच की बातें हो रही हैं! अंजाम क्या होगा, हम खुद नहीं जानते। वास्का तुझे चाँद से बात करने की क्यों ज़रूरत पड़ गयी?"

"कुछ भी कहो, बात विचित्र है! क्या पता किसानों को चाँद पर बसाने की नौबत आ जाये।"

लोग हँस पड़े।

"गालू।"

"गपोड़शंख!"

"सोचना यह चाहिये कि फालतू लोग न मारे जायें पर इसे चाँद की पड़ी है। शैतान की दुम, बख़्तरबन्द रेल पर कब्जा कैसे करेंगे?"

"अरे, कर लेंगे!"

"यह गिलहरी का शिकार नहीं है!"

तभी वेर्शीनिन आ गया। उसने हाँफते हुए प्रवेश किया और धीरे से मेज पर टोपी रखी और ज्नोबोव से पूछा :

"जल्दी आ रही है?"

टेलीफ़ोन के पास खड़ा काँटेवाला बोला :

"जवाब नहीं दे रहे।"

लोग चुपचाप बैठे थे। एक शिकार के किस्से सुनाने लगा। ज्नोबोव ने शहर की क्रान्तिकारी समिति के अध्यक्ष का जिक्र किया।

"वह, सुनहरे बालोंवाला?" शिकार के किस्से सुनानेवाले देहाती ने पूछा और झट से पेकलेवानोव के बारे में गप्पें हाँकने लगा कि उसका चेहरा मैदा से भी चिट्टा है, कि लुगाइयाँ उसके पीछे-पीछे, ऐसे दौड़ती हैं जैसे मेंढ़क दलदल के पीछे; कि अमरीकी मिनिस्टर ने पेकलेवानोव को सात सौ अरब देने की पेशकश की थी अगर वह अमरीकी धर्म स्वीकार कर ले पर पेकलेवानोव ने गर्व के साथ उत्तर दिया : "हम तुम्हें मुफ़्त में भी अपने धर्म में नहीं लेंगे।"

बड़ा काइयाँ निकला!" लोग आनन्दविभोर होकर बोले।

न जाने क्यों ज्नोबोव को इन गप्पों को सुनकर मजा आ रहा था और खुद भी कुछ सुनाने की चाह हो रही थी। वेर्शीनिन ने बूट उतारे और पायताबे ठीक करने लगा। काँटेवाले ने अचानक सहमकर टेलीफ़ोन पर पूछा :

"कितने बजे? पाँच बीस पर?"

लोगों की ओर मुड़कर वह बोला :

"आ रही है!"

सब बन्दूकों को तानकर ऐसे बाहर दौड़े मानो रेल गुमटी के पास आ गयी हो और छकड़ों पर सवार होकर पूर्व की दिशा में ध्वस्त पुल की ओर रवाना हो गये।

"वक्त पर पहुँच जायेंगे!" ओकोरोक कह रहा था।

उन्होंने सन्देशवाहक को आगे भेज दिया।

वे पेड़ों के बीच मन्द-मन्द चमकती पटरियों को देख रहे थे।

'बस तोड़ देना चाहिये पटरी को, और कुछ नहीं"

पासवाले छकड़े से उत्तर मिला :

"नहीं। जोड़ेगा कौन बाद में?"

"हम तो, भइया, सीधे रेल में सवार होकर जायेंगे!"

"शहर जा धमकेंगे!"

"और तुम जोड़-तोड़ करने को कह रहे हो।"

ओकोरोक चिल्लाकर बोला :

"भइया, वहाँ लोग भी तो हैं!"

"कहाँ?"

"नेजेलासोववालों के पास। जो पटरी की मरम्मत करते हैं–हैं न ऐसे लोग?"

"वास्का, तू भी पगला है, अगर हमने सबको डाला तब? सबको?"

और कुछ कर डालने की इच्छा से वे सब सहमत हो गये :

"यह करना मुश्किल नहीं... सबका सफाया कर देंगे!.."

"नहीं, स्लीपर लगानेवाला कोई नहीं बचेगा।"

वे रुक-रुककर पीछे मुड़कर देखते हैं कि कहीं बख़्तरबन्द रेल तो नहीं आ रही। जंगल में छिपते चल रहे थे क्योंकि रेलवे लाइन के पास लोग अब आम बात नहीं थी–बख़्तरबन्द दौड़ती हुई गोलीबारी करती जाती है।

सहमे-सहमे दिल धुकधुक कर रहे थे। लोग घोड़ों को पीट-पीटकर दौड़ा रहे थे मानो पुल के पास उनको शरण मिलने वाली हो।

काँटेवाले की कुटिया से कोई दो मील की दूरी पर उन्हें तटबन्ध पर कोई घुड़सवार दिखायी दिया।

"अपना है!" ज्नोबोव चिल्लाया।

वास्का ने उसका निशाना साधा।

"काट दूँ पत्ता उसका। अपना है?"

"अपना कहाँ से आया, अपना होता तो बन्दूक नहीं तानता!"

वास्का के पास बैठे सिन बिन-ऊ ने उसे रोका :

"वासिका, ठैर!.."

"रुक!" ज्नोबोव चिल्लाया।

घुड़सवार पास आया। यह वही पट्टीवाला किसान था जो अमरीकी को पकड़कर लाया था।

"निकीता येगोरिच यहीं हैं?"

"बोल क्या बात है?"

किसान खुशी के मारे चिल्ला पड़ा :

"हम उधर पहुँचे पर वहाँ कज़्ज़ाक थे। पुल के पास! हम उन पर गोली चलाकर उल्टे लौट गये।"

"कहाँ से?"

वेर्शीनिन अपने घोड़े को किसान के पास लाया और उसके निहारते हुए पूछा :

"सब मारे गये?"

"सब के सब, निकीता येगोरिच। पाँचों–भगवान उनकी आत्मा को शान्ति देवें!"

"पर कज़्ज़ाक आये कहाँ से?"

किसान ने घोड़े की अयाल पर हाथ मारा।

"अरे पुल तो, निकीता येगोरिच, नहीं उड़ाया। साबुत खड़ा है।"

लोग शोर मचाने लगे :

"क्या हुआ?"

"मुखबिर!"

"फोड़ इसकी थूथनी!"

किसान हड़बड़ाकर जल्दी-जल्दी सलीब का निशान बनाने लगा।

"भगवान की सौगन्ध–नहीं उड़ाया। पत्थर के पास कोई तीन सौ गज की दूरी पर खुद को उड़ा दिया। शायद, डाइनामाइट की जाँच करने की सोची हो। बस मांस के साथ एक पाँयचा मिला और बाकी सब... नदारद है..."

लोग चुप थे। वे आगे चल पड़े। पर अचानक रुक गये। वास्का का चेहरा विकृत हो उठा और वह ज़ोर से चिल्लाया :

"भाइयो, पर बख़्तरबन्द रेल तो चली जायेगी! शहर पहुँच जायेगी! भाइयो!"

जंगल से आगे भेजे गये लोगों की भीड़ निकली। उनमें से एक बोला :

"निकीता येगोरिच, पुल के पास तटबन्ध पर लट्ठे पड़े हैं। कज़्ज़ाकों के साथ गोलीगारी हो रही है। पर वे ज़्यादा नहीं हैं।"

"उधर, पुल के पास जायें? ज्नोबोव ने पूछा।

पर न जाने क्यों तभी सबने एक साथ पीछे मुड़कर देखा। जंगल के ऊपर हल्का-हल्का धुआँ फैल रहा था।

"आ रही है!" ओकोरोक बोला।

ज्नोबोव ने घोड़े को ज़ोर से चाबुक मारकर कहा :

"आ रही है!"

लोग बोले :

"आ रही है!"

"साथियो!" ओकोरोक का स्वर गूँजा। "रोकना चाहिये!.."

लोग झट से छकड़ों से उतरे और रायफलें उठाकर तटबन्ध की ओर दौड़ पड़े। घोड़े घास में चले गये और लगामों को झुलाते हुए घास नोचने लगे।

लोग दौड़ते हुए तटबन्ध पर पहुँचे और स्लीपरों पर लेट गये। मैगजीनों में गोलियाँ भरीं और तैयार हो गये।

पटरियाँ धीरे-धीरे कराह रही थीं–बख़्तरबन्द रेल उनकी छाती को रौंद रही थी।

ज्नोबोव धीरे से बोला :

"बस, कुचल डालेगी। गोलियाँ बरबाद नहीं करेगी!"

और अचानक यह महसूस करके, सब तटबन्ध को फिर से खाली छोड़ चुपचाप रेंगकर झाड़ियों में आ गये।

धुआँ घना होता जा रहा था, उसे हवा बिखेर रही थी पर वह हठ के साथ जंगल के ऊपर रेंगता जा रहा था।

"आ रही है!.. आ रही है.." लोग चिल्लाकर दौड़ते हुए वेर्शीनिन के पास आ रहे थे।

वेर्शीनिन और उसके सभी सहायक पसीने से तर, शर्म के मारे झाड़ियों में लेटे थे। वास्का ओकोरोक गुस्से में ज़मीन पर घूँसे पटक रहा था। चीनी उकड़ूँ बैठा घास के तिनके नोच रहा था।

ज्नोबोव डरा-डरा सा जल्दी में बोला :

"काश कोई मुर्दा होता!"

"किसलिये?"

"देखो, कानून के मुताबिक किसी को कुचलकर गाड़ी रुक जाती है। रपट बनाने... गवाहों वगैरह से पूछताछ के लिये!.."

"तो?"

"अगर कोई मुर्दा होता तो उसे पटरी पर डाल देते। कुचलकर गाड़ी रुक जाती और हम इंजन ड्राइवर को गोली मार देते, जब वह उतरता। तब गाड़ी पर कब्जा कर सकते।"

धुआँ घना होता जा रहा था। इंजन की सीटी सुनाई पड़ी।

वेर्शीनिन उछलकर खड़ा हुआ और चिल्लाया :

"कौन चाहता है, साथियो... पटरी पर लेटना ताकि कुचल दे रेल!.. मरना तो वैसे भी है। क्यों?.. और हम रेल के इंजन ड्राइवर का काम तमाम कर देंगे! वैसे यह बात पक्की है कि रेल आदमी पर चढ़ेगी नहीं, पहले ही रुक जायेगी।"

लोगों ने सिर उठाकर क़ब्र के टीले जैसे तटबन्ध पर नज़र डाली।

"साथियो!" वेर्शीनिन चिल्लाया।

लोग चुप थे।

वास्का ने बन्दूक पटकी और तटबन्ध पर चढ़ने लगा।

"किधर चला?" ज्नोबोव चिल्लाया।

वास्का गुस्से में बोला :

"भाड़ में जाओ! हरामजादो..."

और बगलों से हाथ सटाकर पटरी पर आड़ा लेट गया।

वृक्ष हुँकार करते सरसराने लगे थे और फेन की तरह उनके शिखरों के ऊपर पीत-किरमिजी धुआँ उमड़ रहा था।

वास्का औंधा लेट गया। स्लीपरों से राल की गन्ध आ रही थी। वास्का ने स्लीपर पर मुट्ठी भर रेत डाली और उस पर गाल रख दिया। रेत के कण गर्म और मोटे थे। झाड़ियों में छिपे लोगों की बातें पत्तों की सरसराहट की तरह सुनाई दे रही थीं। जंगल में रेल की पटरियाँ गुंजार रही थीं...

वास्का ने सिर उठाया और झाड़ियों की ओर मुड़कर धीरे से बोला :

"ठर्रा नहीं है?.. अंग-अंग जल रहा है!.."

पुआल जैसी दाढ़ीवाला किसान हाथ-पाँव के बल रेंगता ठर्रे के मग्गे के साथ आया। वास्का ने पीकर मग्गा अपने पास रख लिया।

फिर उसने सिर उठाया और गालों से रेत झाड़कर देखा : नील वृक्ष हुंकार रहे थे, नील पटरियाँ गुंजार रही थीं।

वह कोहनियों के बल उठा। चेहरा एक पीली झुर्री बनकर रह गया था, आँखें दो लाल आँसुओं की तरह दहक रही थीं।

"नहीं, मुझसे नहीं हो सकता!.. आत्मा तड़प रही है!.."

लोग चुप थे।

चीनी ने रायफल पटक दी और तटबन्ध के ऊपर रेंगने लगा।

"किधर चला?" ज्नोबोव ने पूछा।

सिन बिन-ऊ ने बिना मुड़कर देखे उत्तर दिया :

"वासीका का, मन नई लगे!"

और वह वास्का की बगल में लेट गया।

पतझड़ की पत्ती की तरह पीला चेहरा सिकुड़कर काला-सा पड़ रहा था। पटरी रो रही थी। आदमी ढलान पर रेंगकर नीचे जा रहा था या झाड़ियाँ किसी को अपनी बाँहों में खींच रही थी—सिन बिन-ऊ को न यह पता था न उसने यह देखा...

"मेरे बस का न-ही है!.. बिरादर-ओ!" नीचे की ओर रेंगता हुआ वास्का चीख रहा था।

घास लार से भीग रही थी, आकाश लार से गीला हो रहा था...

सिन बिन-ऊ अकेला था।

उसके चपटे, नाग जैसी मरकती आँखोंवाले सिर ने स्लीपरों को छुआ, फिर हटकर झूमता हुआ पटरी के ऊपर उठा... पीछे मुड़कर देखा।

झाड़ियों में से देहाती लोगों के मौन, आतुर और भूखी आँखोंवाले सिर बाहर निकले।

सिन बिन-ऊ लेट गया।

मरकती आँखोंवाला नाग फिर से ऊपर को उठा, और सैकड़ों सिरों ने झाड़ियों को हिलाकर उस पर नज़र डाली।

चीनी फिर से लेट गया।

पुआल जैसी दाढ़ीवाला चेचकरू देहाती उससे चिल्लाकर बोला :

"चिनिया, वह मग्गा फेंक दे इधर!.. लिवारवर भी छोड़ देना। तुझे उसकी क्या ज़रूरत?.. कसम से!.. मेरे वह काम आयेगा!.."

सिन बिन-ऊ ने रिवाल्वर निकाली, सिर उठाये बिना उसने हाथ घुमाया मानों झाड़ी में फेंकना चाहता हो और अचानक अपनी गुद्दी में गोली मार ली।

चीनी का शरीर पटरी से कसकर चिपक गया।

चीड़ के पेड़ों ने बख़्तरबन्द रेल को उगल दिया। वह सलेटी, चौकोर थी और इंजन की पुतलियों में क्रुद्ध लाली दहक रही थी। आकाश पर धूसर फंफूद छा गयी; पेड नीले ऊनी कपड़े जैसे थे...

और चीनी सिन बिन-ऊ का शव कसकर ज़मीन से लिपटा, पटरियों की तीखी झंकार सुन रहा था...

कैप्टन नेजेलासोव की मौत

25

वारण्ट अफ़सर ओबाब तटबन्ध के पास घास में पड़ा रह गया।

कैप्टन नेजेलासोव कम्पार्टमेण्ट में, इंजन में, डिब्बों में—सर्वत्र था। और सबको लगता था कि वह जल्दी नहीं कर रहा हालाँकि शब्दों को निगलते हुए कह रहा था :

"जल्दी करो!... जल्दी करो !.."

इंजन ड्राइवर का सहायक दौड़ा-दौड़ा ड्राइवर का स्थान ग्रहण करने आया। लीवरों में उलझते हुए, तेल से चीकट जाकट से हाथ पोंछते हुए वह बोला :

"आजकल... ऐसे नहीं... देखना चाहिये!.."

पानी की टोंटियाँ खौल उठीं।

इंजन के टूलबाक्स में छेनी ढूँढते हुए पतली गर्दनवाले सहायक का सिर टकरा गया और अचानक दर्द से वह चीख पड़ा।

नेजेलासो झुककर वहाँ से भाग पड़ा।

"अरे, तुम सब भाड़ में जाओ... भाड़ में..."

रेल तेज़ी से पुल की ओर जा रही थी पर पुल से कोई तीनेक मील पहले पटरी पर लट्ठे और एक विशाल देवदार पड़ा था। और न जाने क्यों पुल धमाके से उड़ा लग रहा था।

बख़्तरबन्द रेल बफरों को टंकारकर पीछे हटी और चीखती हुई स्टेशन की ओर दौड़ने लगी। पर जंगल के मोड़ पर, जहाँ ओबाब मारा गया था, पटरी उखड़ी हुई थी...

और पुल व काँटेवाले की गुमटी के बीच की छः मील की सीधी लाइन पर कैप्टन

नेजेलासोव विराट लोलक की तरह तेज़ी से आगे-पीछे डोल रहा था।

मशीनगनें मार कर रही थीं, डिब्बे मशीनगनों से मार कर रहे थे, मशीनगनें खून की तरह खौल रही थीं...

झाड़ियों के बीच घातक रूप से घायल छापेमार दिखायी दे रहे थे। अब उन्हें अपना मुँह दिखाने का डर न रहा था।

पर वे जो ज़िन्दा थे नहीं दिखायी दे रहे थे, सुनहरी-धूसर झाड़ियाँ वैसे ही झुकी थीं और गहराई में देवदार के पेड़ काले-काले दिखायी पड़ रहे थे। कभी-कभी लगता कि बख़्तरबन्द रेल ही अकेली गोलियाँ बरसा रही हैं।

नेजलासोव को रेल में सिपाहियों के चेहरे नहीं दिखायी दे रहे थे। रोशनियाँ बुझ रही थीं और चेहरे पीली बत्तियों से भी पीले लग रहे थे।

नेजेलासोव का शरीर चुपचाप उसका कहना मान रहा था, गला ज़ोर-ज़ोर से, कुछ-कुछ तीखेपन के साथ चिल्ला रहा था और बायाँ हाथ हवा में कुछ भींचे हुए था।

वह चिल्लाकर सिपाहियों को कुछ दिलासा देना चाहता था पर उसने सोचा : "खुद ही जानते हैं!"

और उसे फिर से वारण्ट अफ़सर ओबाब के प्रति चिढ़ महसूस हुई।

रात को छापेमारों ने अलाव जला दिये। वे विशाल दूधिया-पीली लपटों के साथ जल रहे थे, चूँकि अलाव के पास जाकर उसमें लकड़ी डालना ख़तरे से खाली न था, तो वे दूर से ही फेंककर डाल देते थे और अलाव मानो किसानों के झोंपड़ों जितने बड़े लगते थे। बख़्तरबन्द रेल इन अलावों के बीच दौड़ रही थी और लपटों पर मशीनगनों और तोपों से प्रचण्ड आग बरसा रही थी और लपटों पर मशीनगनों और तोपों से प्रचण्ड आग बरसा रही थी। इस प्रकार, रेलवे लाइन के दोनों ओर अलाव जल रहे थे, लोग नहीं दिखायी दे रहे थे और जंगल से गोलीबारी जलती हुई गीली लकड़ी की चट-चट जैसी लग रही थी। कैप्टन को लग रहा था कि उसके शरीर का बोझ रेल के एक सिरे को झुका रहा है और वह भागकर बीच में चला जाता और सोचने लगता कि इंजन ड्राइवर छापेमारों से जा मिलेगा और ड्राइवर के केबिन में, जो पीछे हैं, सिपाही चलती गाड़ी के डिब्बे काट रहे हैं।

कैप्टन सख़्त दिखने का प्रयास करते हुए कह रहा था :

"देखो... गोलियों की कंजूसी मत करना!.."

और स्वयं अपने को दिलासा देता हुआ वह इंजन ड्राइवर से चिल्लाकर कहने लगा :

"मैं कह रहा हूँ... सुनते नहीं, आपसे कहा जा रहा है!..

गोलियों की कंजूसी मत करो!"

और मुँह फेरकर वह दरवाज़े के पीछे चुपके से हँसने और बायें हाथ को हिलाने लगा :

"कैप्टन, सबसे बड़ी बात... रटी-रटायी बातें दोहराते रहो... 'गोलियों की कंजूसी मत करो।'"

कैप्टन ने रायफल उठायी और खुद अँधेरे में गोली चलाने की कोशिश की पर उसे याद आया कि अफ़सर का काम हुक्म देना है न कि लड़ना। उसने अपनी सफाचट ठोड़ी पर हाथ फेरा और हड़बड़ाकर सोचा : "पर मेरी क्या ज़रूरत है?"

पर तभी विचार कौंधा : "कैप्टन को किसी से प्रेम कर लेना चाहिये, कितना अच्छा होता... आधे गज की दाढ़ी बढ़ा लेता!.. जनरल की बेटी से... तरक्की करता जाता... इसकी हिम्मत न कर!.."

कैप्टन भागकर रेल के बीचवाले हिस्से में चला गया।

"बिना हुक्म के कुछ मत करना!"

बख़्तरबन्द रेल कैप्टन के हुक्म के बिना पुल–छोटी सी नदिया पर बनी लकड़ी की पुलिया, जिसे न जाने क्यों छापेमार न उड़ा सके–और काँटेवाले की गुमट के बीच बेतहाशा इधर-उधर दौड़ रही थी पर दोनों ओर से पटरी पर कसते शिकंजे की तरह लट्ठे पास सरकते आ रहे थे और उनकी ओट में किसान थे।

गोलियाँ लट्ठों पर बरस रही थीं और जवाब में लोग गोलीबारी कर रहे थे।

बख़्तरबन्द रेल, अन्धे की तरह ठोकर खाकर गिरने के डर से छाती तानकर गोलियों की बौछार की ओर जा रही थी और इस्पात की दीवारों के पीछे सिपाही दौड़कर एक डिब्बे से दूसरे में जा रहे थे, जगहें बदल रहे थे, पसीने से तर छातियों को पोंछते पराये अस्त्र चला रहे थे और कह रहे थे :

"हे प्रभु, हमें क्षमा करो!"

नेजेलासोव को इंजन ड्राइवर की नज़र में पड़ने का डर था। और इस्पात की दीवारों के पीछे की तरह विचार भी इधर-उधर दौड़ रहे थे और जब कुछ काम की बात कहनी होती तो कैप्टन चिल्लाता :

"हरामजादे!.."

और ज़रूरी शब्द बड़ी देर तक टाँगों और कोहनियों में छटपटाता रहता जिनकी खाल के रोंगटे खड़े थे।

कैप्टन दौड़ा-दौड़ा अपने कम्पार्टमेण्ट में आया। पिल्ला कुण्डली मारकर पलंग पर सोया पड़ा था।

कैप्टन हाथ हिला-हिलाकर बड़बड़ाने लगा :

"कहा था मैंने... न गोले हैं... न दया!.. और यहाँ हरामजादे हैं... हरामजादे!..."

उसने खड़े-खड़े पाँव पटके, तकिये पर हाथ मारा, पिल्ला चौंककर खड़ा हुआ और मुँह खोलकर धीरे-धीरे पिनपिनाने लगा।

कैप्टन ने उसकी ओर झुककर सुना।

"ई-ई-ई!.." पिल्ला पिनपिना रहा था।

कैप्टन ने उसे उठाया और उसे बगल में दबाकर डिब्बों में दौड़-धूप करने लगा।

सिपाही कैप्टन की ओर मुड़कर नहीं देखते थे, उसकी परिचित चौड़ी पर चापड़ आकृति, जो अब घटिया सिगरेट के क़ागज़ की तरह पारदर्शी-सी लगती थी, पिनपिनाती हुई पास से दौड़ती हुई गुजरती। और सिपाहियों को लग रहा था कि यह पिल्ला नहीं बल्कि कैप्टन चीं-चीं कर रहा है। और उन्हें इस पर आश्चर्य न होता कि कैप्टन चीं-चीं कर रहा है।

पर वास्तव में पिल्ला ही अपने कोमल पंजों से कैप्टन की ट्यूनिक को हल्के-से खरोंचता पिनपिना रहा था।

उसी तरह, छः घण्टे से ऊपर मशीनगनें निरन्तर घास, पेड़ों, अंधकार, अलावों के पास आलोकित पत्थरों पर गोलियों की वर्षा कर रही थी और यह समझ न आ रहा था कि छापेमार डिब्बों के फौलादी बख़्तर पर क्यों गोलियाँ चला रहे हैं, उन्हें तो पता है कि गोली से वे उसे नहीं भेद सकते।

कैप्टन जब सिर को छूता तो उसे थकान महसूस होती। मानो लकड़ी की तरह कड़े बूट पैरों को जकड़कर भींच रहे थे।

छत घूम रही थी, दीवारें कमान की तरह झुक रही थीं, जले मांस की बू आ रही थी–कहाँ से, क्यों? और इंजन निरन्तर सीटी बजाये जा रहा था :

"आ-आ-ओ-ई-ई-ई!"

26

देहाती उमड़कर आये जा रहे थे। वे बीवियों के साथ अपने छकड़े जंगल में छोड़ते और कन्धों पर बन्दूकें लटकाये पगडण्डियों से वनांचल पर निकलते और वहाँ से रेंगकर तटबन्ध के पास जाकर मोर्चा तान लेते।

रोती-पीटती लुगाइयाँ घायलों को लेती और उन्हें घर ले जातीं। वे घायल जिनमें अभी ताकत बची थी लुगाइयों को माँ-बहन की गालियाँ देते और गम्भीर रूप से घायल पेड़ों की जड़ों पर हिचकोले खाते, हवा और झड़ती पत्तियों को अपने मांस की खोखली बोटियाँ दिखाते। खून से लथपथ छकड़ों से पेड़ों के पत्ते चिपक जाते।

नाटी चेचकरू बुढ़िया पवित्र जल का लोटा लिये वनांचल पर घूम रही थी और वहाँ से जानेवालों पर उसे छिड़क रही थी। वे रेंगते हुए उसकी ओर मुड़ते और चुपचाप आगे रेंग जाते। वे चरागाह से भर पेट चरकर लौटती भेड़ों के रेवड़ जैसे लग रहे थे।

काँटेवाले की गुमटी के पीछे छकड़े पर बैठा वेर्शीनिन रिपोर्टें सुन रहा था जो उसे मोटा सचिव पढ़कर सुना रहा था।

वास्का ओकोरोक ने डरते हुए फुसफुसाकर कहा :

"डर लग रहा है, निकीता येगोरिच?"

"क्यों?" फटे स्वर में वेर्शीनिन ने पूछा।
"लोग तो देखो कितने हैं!"
"तुझे क्या फर्क पड़ता है—तू घोड़े चुराने तो आया नहीं। जाहिर है, समाज उठ खड़ा हुआ!.."
चीनी की मौत के बाद से वास्का सहमा-सहमा घूम रहा था और सबकी ओर मलिन, अपराधी की मुस्कान के साथ देखता।
"निकीता येगोरिच, चुपके से आ रहे हैं; मेरा मन कचोट रहा है।"
"तू चुप रह, और सब ठीक हो जायेगा!"
ज्नोबोव बोला :
"कितनी रातों से नहीं सोये हैं, और तू तो, वास्का ललौंहे बालोंवाला है, कहते हैं कि उनकी किस्मत बड़ी तेज़ होती है।"
वास्का ने धीमे से उसाँस ली :
"कहते हैं एक देश में लाल बालवालों को फ़ौज में नहीं लेते। पर मैं तो, समझ लो, जार की फ़ौज में सात साल सेवा कर चुका : चार साल की सामान्य और तीन साल जर्मनी की लड़ाई में।"
"अच्छा हुआ कि पुल नहीं उड़ाया..." ज्नोबोव बोला।
"क्यों?"
"बख़्तरबन्द रेल को तब शहर कैसे ले जाते? पटरी तक नहीं उखाड़ना चाहते थे, पर पुल की सोची नहीं। मत मारी गयी थी!.."
वास्का ने अपने घुँघराले सिर को कन्धों में छिपाया और कालर उठा लिया।
"ज्नोबोव, मुझे चीनी पर दया आ रही है! पर मैं सोचता हूँ कि वह सीधा स्वर्ग में जायेगा, आख़िर किसानों के लिये उसने जान दी।"
"तू तो बेवकूफ़ है, वास्का।"
"क्यों?"
"भगवान में विश्वास करता है।"
"क्या तू नहीं करता?"
"हरगिज नहीं!.."
"कमीना है तू, ज्नोबोव। वैसे मामला तेरा अपना है, भइया। अब तो आजादी है—जिसे चाहो उसे चाटो। पर मैं धर्म के बिना नहीं रह सकता—मेरा सारा खानदान सदियों से पुरातनपंथी रहा है।"
"आस्तिक कहीं के!.."
ज्नोबोव खिलखिलाकर हँस पड़ा। वास्का उदासी के साथ उसाँस लेकर बोला :
"निकीता येगोरिच, मुझे जाने दो, कुछ गोली-वोली चला लूँ!"
"नहीं। चूँकि तू अफ़सर है इसलिये चुपचाप हेडक्वार्टर में बैठा रहा।"

"इस छकड़े पर!"
गुमटी में खिड़की का काँच काँपा और मृदु झंकार के साथ गिर पड़ा। गोला पास ही में गिरा।
अचानक वेर्शीनिन को ताव आ गया और उसेन सचिव पर हाथ जड़कर कहा :
"यहीं बैठिये। रात होते ही अलाव जलवा देना। नहीं तो, गाड़ी से उतरकर जंगल में भाग जायेंगे, या शैतान जाने उनके दिमाग़ पर कुछ और फितूर सवार हो जाये।"
वेर्शीनिन ने जाती बख़्तरबन्द रेल के पीछे रेलवे लाइन के सहारे-सहारे घोड़े को दौड़ा दिया :
"बचकर नहीं जा सकती।"
कुत्ते जैसा झबरीला घोड़ा ड्रम जैसे बड़े पेट को झुलाता दौड़ रहा था। छकड़ा उछल रहा था। वेर्शीनिन ने खड़े होकर लगाम तानी और घोड़े को उकसाया।
घोड़े ने टाँगें तानी, दुम घुमायी और हवा से बातें करने लगा। ज्नोबोव का भारी बदन उछल रहा था, छकड़े के डण्डे को कसकर पकड़े वह वेर्शीनिन को मना रहा था।
"तू दौड़ा मत—पीछा नहीं कर पायेगा। और मारने का तो तुझे फोकट में ही मार देंगे।"
"बचके कहाँ जायेगी। चल घोड़े, उड़ाता चल!"
उसने घोड़े की पसीने से तर पीठ पर चाबुक पटका।
वास्का चिल्ला पड़ा :
"दौड़ाओ! पूरा हेडक्वार्टर फ़ौजों के मुआयने पर निकला है! और उस कैप्टन और उसकी रेल पर हम थूकते हैं। दौड़ाओ, येगोरिच!.. दौड़ मेरे घोड़े!"
छकड़ा मोर्चा बाँधे लोगों के पास से दौड़ रहा था। लोग घुटनों के बल उठते और छकड़े पर खड़े आदमी को चुपचाप नज़रों से विदा करते और फिर हाथों में रायफलें थामकर पास से गुजरने वाली रेल का इन्तज़ार करने लगते ताकि उस पर गोलीबारी कर सकें।
बख़्तरबन्द रेल गड़गड़ाती गोलियाँ बरसाती सामने से दौड़ी आ रही थी।
वास्का ने आँखें मूँद लीं।
"निशाना ऊँचा ले रहे हैं," ज्नोबोव बोला, "देखा, हम उसके बाहर हैं। वे लगता है पगले हो गये, कुछ भी तो नहीं देखते!"
"रत्ती भर भी," वास्का ज़ोर से चिल्लाया और संटी उठाकर तड़ातड़ घोड़े को मारने लगा।
भीमकाय वेर्शीनिन खड़ा कह रहा था, उसकी भौंहें तर चेहरे पर फड़फड़ा रही थी :
"नाक मत कटवाना, साथियो!"
"धूल चटा दो!" वास्का चिल्ला रहा था।

छकड़ा खड़खड़ा रहा था, पानी का पीपा पहियों से टकरा रहा था, हिचकोलों के कारण गद्दी के नीचे से फूस निकलकर ज़मीन पर बिखर रहा था। झाड़ियों में बैठे लोग सैनिकों की तरह नहीं बल्कि सीधे-सादे ढंग से उत्तर दे रहे थे :

"देख लेंगे!.."

और इस उत्तर में विश्वास और अपनेपन की झलक महसूस हो रही थी और ज्नोबोव तक उछलकर घुटनों के बल बैठ गया और रायफल हिलाते हुए चिल्लाया :

"दौड़ाता चल, यार, मरना है तो मर जायेंगे!"

फिर से बख़्तरबन्द रेल सामने से दौड़ी आ रही थी, पर अब वह डरावनी नहीं लगती थी और वास्का घूँसा हिला-हिलाकर धमकी दे रहा था :

"अभी दिखाते हैं तुम्हें!"

मौन अलावों की रोशनियों के बीच रेल के सलेटी डिब्बे गड़गड़ाहट करते अँधेरे में तेज़ी से आगे-पीछे दौड़ रहे थे।

और छकड़े पर खड़ा घने बालोंवाला व्यक्ति आदेश दे रहा था। किसान लोग लट्ठों को तटबन्ध पर ला रहे थे और धीरे-धीरे उन्हें अपने आगे-आगे ठेलते हुए रेंग रहे थे। बख़्तरबन्द रेल आकर सीधी मार करती।

लट्ठे लाशों की तरह लग रहे थे और लाशें लट्ठों जैसी–टहनियाँ और हाथ चटखकर टूट रहे थे, पेड़ों और लोगों के तन युवा और स्वस्थ थे।

लोहे की तरह काला और भारी आकाश लटका था और इंजन की कर्कश सीटी से गुंजारित था।

लोग भगवान का नाम लेते, रायफलों में गोलियाँ भरते और लट्ठों को धकेलते। लट्ठों से राल की बू आ रही थी और लोगों से पसीने की।

फर वृक्ष भालों की तरह थे और पास आती रेल के बख़्तर से टकराकर चट से टूट जाते।

वास्का छकड़े पर हँसी से लोट-पोट हो रहा था :

"हरामजादी पानी नहीं पी रही। हम तेरी गुद्दी दबोच लेंगे, फ़िक्र मत कर। बचके जायेगी नहीं। हमने तेरे लिये चीनी की बलि यूँ ही नहीं चढ़ायी!"

ज्नोबोव हिसाब लगा रहा था :

"कल उनके पास पानी ख़त्म हो जायेगा। कर लेंगे कब्ज़ा। बात पक्की है।"

वेर्शीनिन बोला :

"शहर की मदद को भी जाना चाहिये।"

लोग हवा से पके फलों की तरह टपाटप गिर रहे थे और जीवन में अन्तिम बार मरने से पहले ज़मीन का चुम्बन कर रहे थे।

हाथ अब नहीं टिक रहे थे, देह अब ऐसे गिर रही थी कि चोट नहीं लगती थी–ज़मीन को दया आ रही थी। पहले दर्जनों गिर रहे थे। वनांचल के पीछे, छँटे

जंगल में लुगाइयाँ धीरे-धीरे रो रही थीं। फिर सैकड़ों गिरने लगे और रोने की आवाज़ बढ़ने लगी। उन्हें उठाकर ले जानेवाला कोई न था और लाशें लट्ठे लाने में अड़चन डाल रही थीं।

देहाती लोग चढ़े आ रहे थे। बख़्तरबन्द रेल अथक चबाये जा रही थी और मानो निर्जन अलावों के धुएँ में भटककर वह कांटेवाले की गुमटी और नदिया पर बनी लकड़ी की पुलिया के बीच अपने कदम खोती जा रही थी। फिर वह रुक गयी।

तब, वेर्शीनिन की पुकार : "चढ़ जाओ! सा-थि-यो!.." से काफ़ी पहले ही लोगों ने चढ़ाई कर दी।

फौलाद की दीवारों से निकलकर सीसे और ताँबे के टुकड़े शरीरों पर बरस रहे थे, छाती को आर-पार बींध रहे थे और उसे सदा के लिये मौत के हार में पिरो रहे थे।

लोग चीत्कार कर रहे थे :

"ओ-आ-आ-ओ!!"

छाती पर, पेट पर घास रेंग रही थी। झाड़ियों की टहनियों में चेहरे अटक रहे थे, दाढ़ियाँ उलझकर उखड़ रही थीं, उनके पसीने से नम बालों से होंठ बाहर निकले जा रहे थे :

"ओ-आ-आ-ओ-ओ!!"

अलाव पीठ के पीछे रह गये थे और यहीं पास में काले कोठरियों जैसे डिब्बे खड़े थे और डर के मारे फौलादी दीवारों के पीछे दुबके लोगों तक पहुँचने की कोई राह नहीं थी।

छापेमार ने पहियों के पास बम फेंका। वह प्रत्येक के सीने में प्रतिध्वनि करके फट गया।

देहाती लोग पीछे हट गये।

पौ फट रही थी।

जब सुबह की रोशनी में उन्होंने लाशें देखीं तो वे ऐसे चीख पड़े मानो किसी ने उनकी पीठ की चमड़ी उधेड़ दी हो और उन्होंने फिर से डिब्बों पर चढ़ाई कर दी।

वेर्शीनिन बूट उतारकर नंगे पाँव चल रहा था। ज्नोबोव अकसर बैठ-बैठक, लगभग हाथ-पाँव के बल, सावधानी से और न जाने क्यों, झाड़ियों से बचता हुआ रेंग रहा था। वास्का ओकोरोक गदगद होकर वेर्शीनिन को देखता हुआ चिल्ला रहा था :

"अरे, निकीता येगोरोविच, तुम तो असली वीर हो!"

वास्का का चेहरा हँसमुख था बस आँखों में आँसू चमक रहे थे।

बख़्तरबन्द रेल सीटी बजा रही थी।

"कोई इसका मुँह तो बन्द करो!" ओकोरोक चीखकर बोला और अचानक घुटनों से उठा और छाती को थामकर रूठे बच्चों की तरह बारीक आवाज़ में बोला : "हे भगवान... मुझे भी!..'

वह गिर पड़ा।

छापेमार वास्का की ओर देखे बिना ऊँचे, पीले विशाल क़ब्र जैसे तटबन्ध पर चढ़ते जा रहे थे।

हमेशा की तरह कहीं जाने की हड़बड़ी में वास्का का शरीर छटपटा रहा था और उसने दम तोड़ दिया।

छापेमार पीछे हट गये।

प्रातः पेकलेवानोव वहाँ पहुँचा। उसके बैग में पर्चे भरे थे और उसके चश्मे का एक शीशा आधा टूटा हुआ था।

27

पसीने से तर सिपाही बाल्टियाँ खड़काते हुए झिरियों के पास लगी मशीनगनों को ठण्डा कर रहे थे। उनके खरोंचों से ढके हाथ सहमे-सहमे जल्दबाजी में मानो शर्मनाक हरकतें कर रहे थे।

रेलगाड़ी में सिहरन भरी कँपकँपी दौड़ रही थी और वह टायफस के बड़बड़ाते रोगी की तरह तपी थी।

गहरे किरमिजी अंधकार के थक्के कैप्टन नेजेलासोव के सिर में भर रहे थे। शरीर को झिंझोड़ती दहकती कँपकँपी कनपटियों से दौड़कर दिल के पास जमा हो रही थी।

"कमीने!" कैप्टन चिल्ला रहा था।

न जाने कैसे उसके हाथ में कैवेलरी कारबाइन आ गयी, उसका बोल्ट बेहद ऊष्म और मुलायम लग रहा था। नेजेलासोव दरवाज़ों से उसके कुन्दे को टकराते हुए एक डिब्बे से दूसरे में दौड़ता फिर रहा था।

"कमीने!" वह चीख-चीखकर कह रहा था। "कमीने!"

उसे बुरा लग रहा था कि ऐसा कोई शब्द न सूझ रहा था जो आदेश जैसा लगे और गालियाँ उसे सर्वाधिक उचित, याद करने में सर्वाधिक आसान लग रही थी।

छापेमार रेल पर चढ़ाई कर रहे थे।

मशीनगनों की झिर्रियों से जुड़े पीले ऊन जैसी दूरस्थ झाड़ियों में कुबड़ी पीठें दौड़ती दिखायी दे रही थीं और उनकी बगलों में तख्तियों जैसी रायफलें झिलमिलातीं। झाड़ियों के पीछे वन और सदा की तरह, बेहद मोटे स्तनों जैसी घनी हरी पहाड़ियाँ थीं। पर छाल के टुकड़ों की तरह झाड़ियों में इधर-उधर दौड़ती पीठें विराट पहाड़ियों से भी अधिक भयावह थीं। और सिपाही इस भय को महसूस कर रहे थे और ताकि झाड़ियों से युद्ध का नाद न सुनाई दे, वे मशीनगनों से उसे डुबो रहे थे। मशीनगन झाड़ियों पर गोलियों की अनवरत बौछार किये जा रही थी और उसकी किसी से भी तुलना

नहीं की जा सकती थी। कैप्टन नेजेलासोव कई बार अपने कम्पार्टमेण्ट के पास से दौड़ता गुजरा। उसमें घुसते हुए न जाने क्यों उसे डर लगता था, दरवाज़े से कोल्चाक की तस्वीर, यूरोपीय युद्धक्षेत्र का मानचित्र और राखदानी का काम देनेवाली ढलवाँ लोहे की देवमूर्ति दिखायी दे रहे थे। कैप्टन को लग रहा था कि कम्पार्टमेण्ट में घुसकर वह किसी कोने में सिर दुबकाकर रो पड़ेगा और कहीं पिनपिनाते इस पिल्ले की तरह और बाहर न निकल पायेगा।

देहाती चढ़ाई कर रहे थे।

यह मानते हुए शर्म आती थी, पर उसे नहीं पता था कि कितनी बार चढ़ाई हुई और सिपाहियों से पूछा नहीं जा सकता था—उनकी आँखों में इतना आक्रोश भरा था। ये आँखें रायफलों के बोल्टों और मशीनगनों के कारतूसों की पेटियों पर टिकी थीं और उन्हें वहाँ से हटवाकर अदंडित नहीं रहा जा सकता था—जान से मार डालेंगे। कैप्टन उनके बीच दौड़ रहा था और पिंडलियों पर बूटों से टकराती कारबाइन सरकंडे की छड़ी की तरह हल्की लग रही थी। बख़्तरबन्द रेल रात में घुसने लगी थी और अंधकार इस्पात के भारी डिब्बों को अनिच्छा के साथ अपने आगोश में लपेट रहा था। कभी-कभी कैप्टन को लगता कि उसे जंगल में हवा की सरसराहट सुनाई दे रही है... सिपाही मुँह फुलाये बन्दूकों और मशीनगनों से अंधकार पर गोलियाँ बरसा रहे थे। मशीनगनों मानो प्रचण्ड क्रन्दन करती विराट देह को छलनी कर रही थीं। कोई सफ़ेद से बालोंवाला सिपाही लालटेन में मिट्टी का तेल भर रहा था। मिट्टी का तेल कबसे उसके घुटनों पर बह रहा था और उसके पास रुककर कैप्टन को सेबों की हल्की-सी महक आयी।

"पिल्ले को... पानी पिलाना है!" नेजेलासोव जल्दी-जल्दी बोला।

सफ़ेद-सा बालोंवाला झट से बत्तख की चोंच की तरह होंठ निकालकर उसे बुलाने लगा :

"पुच... पुच... पुच..."

दूसरा, पतली, पर बेहद छोटी बाँहोंवाला बूट उतारे बैठा था, पायताबे को हाथ में उठाये वह बड़ी देर तक सूँघता रहा और बड़े शान्त स्वर में कैप्टन से बोला :

"मिट्टी का तेल है, जनाब। हमारे कस्बे में मिट्टी का तल एक केरेन्का* फी पौण्ड के भाव से बिकता है..."

...वे ढेरों थे, ढेरों... और पता नहीं क्यों सबको मरने, बख़्तरबन्द रेल के पास पीले जुड़े ऊन जैसी झाड़ियों में पड़े रहने की ज़रूरत थी।

अलाव जल गये। वे मोमबत्तियों की तरह शान्त, हल्के-से हिलती लौ के साथ जल रहे थे और यह नहीं दिखायी दे रहा था कि कौन उनमें लकड़ी डाल रहा है। पहाड़ियाँ जल रही थीं।

---

* केरेन्का—1917 में केरेन्स्की की अन्तरिम सरकार द्वारा चलाया गया नोट।

"पत्थर नहीं जलता!.."
"जलता है!.."
"जलता है!.."
फिर से चढ़ाई हो गयी।
कोई रेल की ओर दौड़ रहा है और गिर रहा है। वापस लौटकर फिर से दौड़ रहा है।

"चढ़ाई कर रहे हैं?"
बेकार की बात।
वे—जो झाड़ियों में लेटे हैं, कुछ लेटकर, खड़े होंगे, भागेंगे और फिर से चढ़ाई करेंगे।
"...भाग खड़े हुए!.."
गरजती नालों के पास से होते हुए मशीनगनों को भेदकर भारी चिंघाड़ पत्थर की तरह डिब्बों में आकर पड़ी।
"हो-हो-ऊ-हो-हो!.."
और पतला-सा चीत्कार भी :
"हाय-हाय!"
पिचके गालोंवाला सिपाही बोला :
"वहाँ, जंगल में... लुगाइयाँ इनके लिये रो रही है!.."
और वह बेंच पर ढह गया।
गोली उसके कान में लगी और सिर के दूसरी ओर मुट्ठी जितना बड़ा छेद बनाकर बाहर निकली।
"अँधेरे में सब साफ़ क्यों दिखायी दे रहा है?" नेजेलासोव बोला। "वहाँ अलाव है और यहाँ शायद अँधेरा है। और धुआँ : वे धुएँ से हमें बाहर निकालना चाहते हैं, महसूस कर रहे हैं?"
"अँधेरे में जलाव जल रहे हैं और उनके पीछे से लुगाइयाँ दहाड़ रही हैं। क्या पता ये पहाड़ियाँ दहाड़ रही हों?
"बकवास!.. पहाड़ियाँ जल रही हैं!.."
"नहीं, यह भी बकवास है, यह अलाव जल रहे हैं!.."
मशीनगन चालक की बगल जल गयी और वह बच्चे की तरह रो पड़ा।
बूढ़े, पादरी जैसे दाढ़ीवाले वालंटियर ने उसे रिवाल्वर से गोली मार दी।
कैप्टन चिल्लाना चाहता था पर न जाने क्यों उसने मुँह बन्द कर लिया और बस अपनी क़ागज़ जैसी सूखी पतली पलकों को छूकर रह गया। अरे कैप्टन की तो शहर में मंगेतर है... वह अब...
कारबाइन भारी होती जा रही थी पर पता नहीं क्यों उसे अपने साथ-साथ लिये

घूमना ज़रूरी था।
कैप्टन नेजेलासोव की गोरी मुलायम चमड़ी थी और उस पर रेशम पर कढ़े फूलों की तरह—आँखें थीं।
रात गुजरती जा रही थी। शीघ्र ही सूरज उग जायेगा। मंगेतर किताब पढ़ रही है। मंगेतर किताब पढ़ते-पढ़ते सो गयी। औरत की पलकें नींद से नम है...
सफ़ेद-से बालोंवाला सिपाही मशीनगन के पास सो रहा था और वह नींद में गोलियाँ चला रहा था। हालाँकि यह भी हो सकता है कि गोली उसकी नहीं बल्कि पड़ोसी की मशीनगन चला रही थी। या पड़ोसी की मशीनगन सो रही थी और पड़ोसी चिल्ला रहा था :
"उधर!.. उधर!.."
और ऐसी रात को कैसी किताब पढ़ी जा सकती है?
गले से ठोड़ी की ओर दर्द दौड़ा आ रहा था मानो कील से कोई खाल खरोंच रहा हो। और तभी नेजलेसोव को अपने चेहरे के पास गन्दे लम्बे नाखूनोंवाले पतले हाथ हिलते नज़र आये।
फिर वह इसके बारे में भूल गया। इस रात वह बहुत कुछ भूल गया... कुछ तो भूलना ज़रूरी था, नहीं तो सारा बोझ उठाना भारी लग रहा था... भारी...
और अचानक निःस्तब्धता छा गयी...
वहाँ, डिब्बों की दहलीज के बाहर, झाड़ियों में।
सो लेना चाहिये। लगता है, सुबह हो गयी, क्या पता शाम हो गयी हो। सारे दिनों को नहीं याद रखना चाहिये...
वहाँ, पहाड़ियों में गोलीबारी नहीं हो रही है। तटबन्ध के पास शान्त खून में लथपथ लोग लेटे हैं। बेशक लेटना उनके लिये आराम देह नहीं है।
और यहाँ आँखों में अँधेरा उतर आया। कैप्टन अंधा हो गया।
"यह निःस्तब्धता के कारण हुआ है..."
आँखें और आत्मा दोनों ही अन्धी हो गयीं। यह सोचकर खुशी तक सी हुई।
पर तभी सबको महसूस हुआ, शुरू में हल्के-हल्के और फिर मानो आग की तरह—निःस्तब्धता को नहीं सहा जा सकता।
सफ़ेद-से बालों वाला सिपाही हाथ उठाकर दरवाज़े की ओर दौड़ा।
अंधकार! अंधकार में उसके उठे हाथ नहीं दिखायी दे रहे थे।
और कैप्टन ने फौरन महसूस किया कि अब सातों डिब्बों से लोग दरवाज़ों की ओर दौड़ पड़े हैं। रेत पर मुकाबला करना आसान है। और जान बचाने के लिये भागा भी जा सकता है... इस्पात के डिब्बों में धुएँ से लोगों का दम घुट रहा था... उनका दम घुट रहा है!
पल भर को मतली आयी। मतली न केवल पेट में, बल्कि टाँगों में, हाथों में और

कन्धे में भी भरी थी। पर कन्धा अचानक ढीला पड़ गया और कैप्टन ने पाँव तले घास को महसूस किया और उसके घुटने मुड़ गये।

कैप्टन ने अपने सामने देखी दाढ़ीवाली क़मीज़, संगीन पर लटका स्कंध स्ट्रैट और मांस की बोटी...

...उसके, कैप्टन नेजेलासोव के, मांस की बोटी...

"सूअर के मांस के कटलेट... रेस्तराँ 'ओलिंपिया'... मेक्सिकन नीग्रो बैरा... पत्ता... पतझड़...

"तेरा शुक्र है, रूस... दुनिया... सारी स्लाव जाति... नीरवता के लिये... सारी दुनिया में नीरवता छायी है..."

"मा ऽऽ र, काट, तोड़..."

रेल तटबन्ध पर नहीं हैं। मतलब रात है। उसने हाथ से टटोला—पसीने से तर आदमी के बाल। कटे कान का टुकड़ा, कील से फटे मोटे ऊनी कपड़े जैसा...

...झाड़ी हाथ में है। झाड़ी की टहनी आराम से तोड़ी जा सकती है और मुँह तक में डाली जा सकती है। यह कान थोड़ी ही है।

कन्धे पर कारबाइन है! मतलब रेल से बाहर निकल आया?

नेजेलासोव खुश हो गया। वह याद नहीं कर पा रहा था कि ट्यूनिक के ऊपर कारतूसों की पेटी आयी कहाँ से।

उसमें कुछ विश्वास जागा।

वह हँस पड़ा, हो सकता है, ठहाका लगाया हो।

झाड़ियों से गर्म खून की कसैली बू आ रही थी। पहाड़ियों से काली, कँटीली हवा आ रही थी, वह लम्बी-लम्बी गीली टहनियों को हिला रही थी। क्या पता टहनियाँ खून से गीली हों...

पिल्ले को बगल में दबाये ओबाब रेंगता हुआ आगे चला गया। उसकी बिरजिस के पाँयचे छकड़े के पहियों जैसे थे।

सफ़ेद-से बालोंवाले ने तनकर धीमे स्वर में पूछा :

"चलने का आदेश देंगे?"

"भाड़ में जा!"

कत्थई लबादेवाली शरणार्थिन कान में फुसफुसायी :

"आ रहे हैं! आ रहे हैं!.."

कैप्टन नेजेलासोव को खुद भी मालूम था कि आ रहे हैं। उसे आरामदेह जगह पर पोजीशन लेनी चाहिये। वह रेंगकर टीले पर चढ़ गया, कारबाइन उठायी और गोली चला दी।

पर पता चला कि एक हाथ नदारद है। एक हाथ से तकलीफ होती है। पर घुटने का सहारा लिया जा सकता है। घुटने से मक्खी नहीं दिखायी देती... गाड़ी में

गोली क्यों नहीं चलायी, पर यहाँ...

यहाँ अकेला है पर वे रेंग रहे हैं... देखो तो कितने सारे हैं—दाढ़ीवाले, हरामजादे, ज़मीन पर पड़ रहे हैं, नहीं तो...

इसी तरह कैप्टन नेजेलासोव तब तक अँधेरे पर जल्दी-जल्दी गोलियाँ चलाता रहा जब तक सारे कारतूस खत्म न हो गये।

फिर उसने कारबाइन रखी, टीले से रेंगकर झाड़ी में आया और घास में मुँह छिपाकर मर गया।

फेन

28

काले खेतों में सोरघम की घनी फसल लहलहा रही है।

ताँबे का चीनी अजदाह जंगल में पीले झंकारते चक्कों को पटक रहा है। और चक्कों में चौकोर सलेटी डिब्बे टंकारते, गड़गड़ाते लुढ़क रहे हैं...

अजदाह के पीले शल्कों पर हैं—धुआँ, राख, चिंगारियाँ...

फौलाद, फौलाद से टकराकर टंकार रहा है, कुट रहा है!..

धुआँ। चिंगारियाँ। सोरघम। लहलहाते खेत।

शायद चीनी अजदाह पहाड़ियों से आया है या शायद जंगल से।

पीले पत्ते, पीला आकाश, पीला तटबन्ध।

सोरघम!.. खेत!..

कम्पार्टमेण्ट के दरवाज़े के पास लोमड़मुखी बुड्ढा वारण्ट अफ़सर ओबाब की बेहद चौड़ी नीली बिरजिस को पहनकर देखता हुआ बच्चों की तरह उद्धत स्वर में चिल्ला रहा है :

"क्या बला है!.. पतलून नहीं पूरा लहँगा है पर घुटने रुंड-मुंड हैं : गंजी टांट की तरह!.."

मेज पर राख है। खिड़कियों से धुआँ घुस रहा है।

खिड़कियाँ खुली हैं। दरवाज़े खुले हैं। सन्दूक खुले हैं।

ढलवाँ लोहे का चीनी देवता फ़र्श पर पड़ा है, थूक से ढका और उसके होंठों पर कातर मुस्कान है। बड़ा अजीब है।

तटबन्ध के पीछे से दूसरा देवता पहाड़ियों से रेंगकर आ रहा है, पीला, ढलवाँ चक्कों को टंकारता...

चिकने सोरघम, काले लगते हैं!

नज़र आदमी की तुष्टि और सन्तुष्टि से चिकनी है।
"ओ-हो-हो!.."
"स्सालों का काम तमाम!"
"हो गया ऽऽ!"
इंजन से लोग चिपक गये, फौलाद पर अपने गर्म मदहोश बदन रगड़ रहे हैं। एक लाल क़मीज़वाला घूँसा दिखा रहा है :
"हम तुझे दिखा देंगे!"
किसे? कौन?
पता नहीं!
पर धमकी हमेशा देनी चाहिये! देनी चाहिये!
लाल क़मीज़, सलेटी बरानकोट पर लाल फीता।
फीता!
"हो-हो-हो-हो!.."
"खींच, गवरीला ऽऽ!.."
"आ-आ-आ!.."
फीता।
बख़्तरबन्द रेल 'पोल्यारनी' नं. 14-69 लाल ध्वज फहराती। फीता!..
पहाड़ियों से आये ललौहें अजदाह पर—ललौहे पर फीता है!.. ललौहे पर!
अभी पहिया यहाँ था—एक मिनट बाद दो मील दूर है, दो मील। पटरियाँ चुप हैं, घनघना नहीं रहीं, भयभीत हैं... चुप हैं।
"आहा!.."
नीले फ्रांसीसी गेटरोंवाला छरहरा सिपाही, झोले के साथ।
"इर्तीश के किनारे खरबूज़ा ठीक से नहीं उगता... ज़्यादातर सूरजमुखी और तरबूज होते हैं। और लोग न बुरे हैं, न भले... पता नहीं, कैसे लोग हैं।"
"लोगों के बारे में कौन जानता है?"
"खुद भगवान ने मुँह मोड़ लिया..."
"ओ-हो!.."
"कहे है भाड़ में जाओ!.."
"ओ-हो!.."
कोल्चाक की तस्वीर संडास में, फ़र्श पर पड़ी है। आदेश-पत्र फ़र्श पर है, अख़बार फ़र्श पर...
लोगों का ध्यान फ़र्श पर नहीं जाता, चलते हैं तो उसे महसूस नहीं करते...
"आ-आ-आ!.."
'पोल्यारनी' पर लाल झण्ड फहरा रहा है...

आहा!
अकड़कर, विशाल रेल हवा में तैर रही है, उस पर है लाल कपड़े का टुकड़ा। रक्तिम, जीवित, चीखता : ओ-ओ-ओ!..
पेकलेवानोव का चश्मा फुदककर नाक पर चढ़ने का प्रयास कर रहा है, खुद उसका शरीर भी और शब्द भी फुदककर कहीं कूदने की ताक में है।
"अमरीका में भी—बस दो-एक दिन की बात है!"
ज्नोबोव चिल्लाया :
"पता है... मैंने खुद अमरीकी बुर्जुआ पर प्रचार किया था!.."
"पट्टी पढ़ा दी!.."
"साथियो, इंग्लैण्ड में भी!"

उठो, अभिशप्तो...

"औ-औ-औ!.."
चश्मा फुदककर नाक पर चढ़ गया। आँखों ने देखा : धुआँ, तम्बाकू, फ़र्श पर मशीनगनें, रायफलें, दानों की तरह बिखरे कारतूस, देहातियों के बाल, चिकनी, मदहोश आँखें।
"साथियो, क्रान्तिकारी समिति का उद्देश्य!.."
"पता है हमें!.."
"बस-बस... मैं खुद गला फाड़ना चाहता हूँ!.."

बुलबुल, बुलबुल, चिड़िया रानी,
निकली तू कितनी सयानी!..

पलंग पर वेर्शीनिन है, वह गहरी और संयत साँस ले रहा है, बस अन्दर उसके आग दहक रही है—उसकी साँस से कम्पार्टमेण्ट में घुटन है हालाँकि दरवाज़े भी खुले पड़े हैं। मिट्टी की, भारी, किसान की हवा भरी है। पास में लुगाई है। कहाँ से आयी—अपनी छातियों को आगे किये वह इठला रही है। नास्त्या। पत्नी!
ज्नोबोव चिल्लाया :
"ढूँढ लिया? जवान यह चोखा है!.."

अरे, ताँगे मेरे अमरीकी...

. . . .

लगी तम्बाकू को आग
राजा गया भाग...

दरवाज़े के बारह कोई नशे में रो रहा है :

"वास्का को तो... हरामजादों ने, वास्का को मार डाला... पाँच का पेट चीरकर मैं वास्का का बदला लूँगा और चीनी का भी... हरामजादे..."

"अरे मार गोली... कुत्ते हैं..."

"मैं उनसे... वास्का का बदला लेकर रहूँगा!.."

29

रात को फिर पत्नी आयी, हाँफ-हाँफकर शान्त हो गयी। चाँदनी में उसके सफ़ेद दाँत चमक रहे थे—ठण्डे बदन को शीतलता प्रदान करते और बदन भी दाँतों की तरह ही था, पर गर्म और फड़कता।

शब्द वह पहलेवाले, बच्चों जैसे बोल रही थी और वह भी बच्चों की तरह थी और हाथों में शक्ति भी अपनी नहीं, परायी थी—माटी की।

और पाँवों में भी यही थी...

"ठक-ठका-ठक!.. छुक!... छुक!.."

बख़्तरबन्द रेल शहर की ओर, सागर की ओर जा रही थी।

लोग भी जा रहे थे।

शायद वही, या क्या पता उससे भी आगे...

उन्हें और भी आगे जाना चाहिये, वे लोग जो ठहरे...

मैं कहता हूँ, मैं।

रात को हम में हैवान पैदा होता है, हैवान!!

मैं जानता हूँ—और खुश होता हूँ... मुझे विश्वास है...

भूमि महक रही है—फौलाद को बींधकर आ रही है महक हालाँकि दरवाज़े खुले हैं, दिल खुले हैं। वह शरत् की घास, जड़ी-बूटियों की भीनी, आह्लाद और आशीशदायी सुगन्ध से महक रही थी।

सदय, रात्रिकालीन वन मानव के सम्मुख आते हैं, काँपते हैं और आह्लादित होते हैं—वह स्वामी है।

मैं जानता हूँ!

मुझे विश्वास है!

मानव काँपता है—वह भी विराट और अतिसुन्दर वृक्ष का पत्ता है। आकाश उसका है, धरती उसकी है और वह—धरती और आकाश है।

अंधकार घना और नील है, आत्मा घनी और नील है, धरती आह्लादित और मदहोश है।

अच्छा है, कितना अच्छा—सबमें विश्वास करना, सब जानना है और सबसे प्यार करना।

सब ऐसा ही होना चाहिये और ऐसा ही होगा—सदा और प्रत्येक हृदय में!

"ओ-ओ-ओ!"

"सेम्योन, स्तेपान!.. ओ, शैतान!.."

"बोल!.."

चिंघाड़ इन लोगों की घनी है—वे फौलादी पोशाकों में हैं, शायद खुश तो हैं इस परिधान से, फौलादी पत्ते मुड़ रहे हैं, विराट इंजन काँप रहा है और अंधकार को तैलीय नाद चीर रहा है :

"ऊ-ओ-ऊ-आ... ऊ-ऊ-ऊ!.."

बख़्तरबन्द रेल 'पोल्यारनी'...

सारी लाइन जानती है, शहर जानता है, सारा रूस... बायकाल और ओब वालों को भी पता चल गया होगा...

आहा! स्टेशन।

अँधेरे से जापानी अफ़सर निकला और सधी, परायी चाल से चलते हुए बख़्तरबन्द रेल के पास आया। उसकी पीठ पीछे अँधेरे में छिपी शक्ति का आभास हो रहा था और शायद इसीलिये हर्ष, कुछ-कुछ ठण्ड और डर की सी अनुभूति हो रही थी।

ज्नोबोव उसकी ओर गया। पहले बिखरे, घने बालोंवाले ज्नोबोव जैसों की भीड़ थी और फिर उनमें से एक निकला।

जापानी अफ़सर ने तपाक से हाथ मिलाया और जान-बूझकर उच्चारण बिगाड़कर रूसी में बोला :

"हाम—तटश्थ हैं!"

और आवाज़ ऊँची करके, ज़ोर-ज़ोर से रौब के साथ जापानी में बोलने लगा। उसके स्वर में तिरस्कार और विचित्र-सी उकताहट का भाव था। और ज्नोबोव बोला :

"तटस्थता—ठीक है, तुम कितने लोग हो?.."

"बीश हजाल..." जापानी बोला और सैनिक ढंग से मुड़कर फिर से सरासर पराया, फालतू बनकर चला गया।

ज्नोबोव भी कुछ देर खड़ा रहकर मुड़ गया और फुसफुसाकर मन-ही-मन बोला :

"और हम—करोड़ों हैं, हरामजादे!.."

पर छापेमारों को उसने बताया :

"डर रहे हैं। कहे हैं, तटस्थ हैं और अपने टापुओं पर जाना चाहते हैं चावल की खेती करने... हमारी बला से तू चाहे तो भाड़ में चला जा!"

और उसने गुस्से में अपनी हथेली पर थूका :

ऊपर से हरामजादा हाथ मिलाता है!"

"बात एक ही हो सकती—सबको फ़ाँसी के तख़्ते पर चढ़ा दो!" छापेमार इस निष्कर्ष पर पहुँचे।

लड़कियों जैसे गुलाबी चेहरेवाले एक रोते फ़ौजी अफ़सर को पकड़कर ला रहे थे। रो भी वह लड़कियों की तरह—आँखों और होंठों से रहा था।

हाथ पर गन्दी खाली बोरी लटकाये एक लंगड़ा किसान अफ़सर के पास आया और खाली हाथ से उसने अफ़सर की नाक पर घूँसा जड़ दिया।

''चें-चें मत कर!..''

तब सन्तरी मानो कुछ याद करके लपका और घुमाकर, जैसे अभ्यास के समय, अफ़सर के मोढ़ों के बीच संगीन भोंक दी।

स्टेशन। पीली लालटेन, पीले चेहरे और काली ज़मीन। रात।

कम्पार्टमेण्ट में पलंग पर औरत है। पत्नी। पास में कपड़ों की काली ढेरी।

वेर्शीनिन उठा और दफ़्तर में गया।

मोटे बाबू से उसने कहा :

''लिख!..''

बाबू नशे में धुत्त था और वह समझा नहीं :

''क्या?''

खुद वेर्शीनिन को भी नहीं पता था कि क्या लिखवाना है। कुछ देर खड़े रहकर उसने सोचा। कुछ तो करना चाहिये, किसी को, कैसे ही सही...

''लिख...''

और नशे में धुत्त बाबू ने अपने जैसी मोटी लिखावट में लिखा :

''आदेश। यह हुक्म है...''

''रहने दे,'' वेर्शीनिन बोला। ''कोई ज़रूरत नहीं, छोरे।''

बाबू राजी था और वह दुबली मेज पर मोटा सिर रखकर सो गया।

नीले गेटरोंवाला छरहरा सिपाही बता रहा था :

''ढेरों देस और तरह-तरह के ढेरों लोग मैं देख चुका हूँ...''

ज्नोबोव की मूँछें सुनहरी थीं और आँखें सुनहरी—पिपासा और वात्सल्य से भरी। वे पूछ रही थीं :

''तू कहाँ से आया?''

सिपाही मजेदार किस्सा सुना रहा था, कोई उसकी बातों पर विश्वास नहीं कर रहा था और उसे खुद भी उन पर विश्वास न था पर सबको अच्छा लग रहा था।

मशीनगन की गोलियों के पट्टे फ़र्श पर पड़े थे। कारतूस दानों की तरह बिखरे थे और मशीनगनों पर छापेमारों की पतलूनें सूख रही थीं। नालों पर सूखा ख़ून, सुर्ख रेशम के गले कपड़े जैसा लग रहा था।

''हाँ तो एक बार तुर्किस्तान के देस में फारस का शाह सफर कर रहा था, रास्ते में उसे इंग्लैण्ड की रानी मिली...''

30

शान्त शहर ने उनका स्वागत किया।

बाहरी गुमटी के चौकीदार ने ही उन्हें भयभीत स्वर में बताया था :

''किसी विद्रोही की खबर नहीं है। क्या पता हुआ भी हो, हमारा काम तो रेलवे का है। तनखा कम है, और...''

दाढ़ी उसकी सड़े गोबर जैसी सफ़ेद-सी थी और उसके बदन से दड़बे की बू आती थी।

स्टेशर पर कमाण्डेण्ट के कमरे में फ़ौजी अफ़सर कन्धों से स्ट्रैप उतारते भयभीत दौड़ रहे थे। प्लेटफार्म के पास ट्रकों के ड्राइवर हर्षोल्लास में चिल्ला रहे थे। डिपो से मजदूर आ रहे थे।

वेर्शीनिन के पास पेकलेवानोव खटर-पटर कर रहा था।

''हमें शुरुआत करनी पड़ेगी, निकीता येगोरिच।''

डिब्बों से मशीनगनों और रायफलों के साथ छापेमार कूद रहे थे। लगभग वे सभी टोपियों के बिना थे और आँखें उनकी नशे से चुंधी थीं।

''कुछ नहीं हैं?..''

''लगा मशीनगन...''

''मोटर ला इधर!..''

ट्रक आ रहे थे। कमाण्डेण्ट के कमरे में टूटे काँच की झंकार और रिवाल्वर की गोलियाँ गूँज रही थीं। पीले चेहरोंवाली कोई मिसें प्रथम श्रेणी की कैंटीन में फटा लाल झण्डा लगा रही थीं।

मज़दूर 'हुर्रा' चिल्ला रहे थे। ज्नोबोव कुछ चिल्ला रहा था। पेकलेवानोव ट्रक में बैठा था और चश्मे के शीशों से दिखती उसकी आँखों में धुँधली मुस्कान थी।

छकड़े पर मृतकों को लादकर लाया गया।

सिर पर गुलाबी रूमालवाली कोई बुढ़िया रो रही थी। गिरफ़्तार पादरी को ले जाया जा रहा था। पादरी हँसते हुए कुछ बता रहा था और सन्तरी ठहाके लगा रहे थे।

मुंडी मूँछोंवाला अमरीकी झट से स्लीपरों के ढेर पर चढ़ा और उसने एक के बाद एक कई बार अपने कोडक कैमरे का बटन दबाया।

जनरल स्पास्की के हेडक्वार्टर में किसी को कोई ख़बर न थी।

भव्य केश सज्जावाली युवतियाँ टाइपराइटरों पर ठक-ठक रही थीं।

पीली पट्टियोंवाली पतलूनें पहने फ़ौजी अफ़सर जीनों और वायलिन की तरह गुंजारते

गलियारों में दौड़ रहे थे। बाहरवाले कमरे में पिंजरे में कनारी चहक रही थी और लकड़ी के तख़्त पर चौकीदार सो रहा था।

फौरन नुक्कड़ से ट्रक प्रकट हुए। फाटक में उमड़ती हुई भीड़ हुंकारी। ट्रामें घण्टियाँ बजाने लगीं, मोटरों के हार्न बजने लगे और छापेमार दौड़कर जीनों पर चढ़ने लगे।

फ़र्श पर फिर से क़ागज़, टूटे टाइपराइटर और शायद मारे गये लोग पड़े थे।

सफ़ेद-से बालों और गुलाबी कानोंवाले जनरल को पकड़कर जीने से ले गये। उसे आख़िरी पैड़ी पर मार दिया गया और उस तख़्त के पास घसीटकर डाल दिया गया जहाँ चौकीदार ऊँघ रहा था।

हाथ से पेट थामे छापेमार जीने पर दौड़ रहा था। उसके चेहरे का रंग धूसर था, वह आधा जीना भी न पार कर पाया था कि ज़ोर से चीखा और अचानक सिकुड़ गया।

औरत की चीख सुनाई दी।

पिंजरे में कनारी और भी ज़ोर से चहक रही थी।

अफ़सरों के झुण्ड को तहख़ाने में ले जाया गया। उनमें से एक ने भी जीने के पास पड़ी जनरल की लाश पर गौर न किया। नीले गेटरोंवाले सिपाही ने भावुक होकर सोचा कि वीर की लाश को लाल अस्तरवाले बरानकोट से ढक देते तो कितना अच्छा होता।

पर वीर तो सोरघम के खेतों में गड़े थे...

नीले गेटरोंवाले सिपाही तहखाने के दरवाज़े का पहरा दे रहा था जहाँ गिरफ़्तार अफ़सर क़ैद थे।

उसके हाथ में इंग्लिश बम था—उसे हुक्म मिला था : "अगर कुछ हो जाये तो बम फेंक देना उधर—भाड़ में जायें ये।"

तहखाने के दरवाज़े में छोटी-सी खिड़की का नीली चौकोर दिखायी दे रहा था और उसके नीचे नम मिचमिचाती आँखवाला घने बालों से ढका चौकोर जबड़ा था। दरवाज़े के पीछे से अक्सर प्रार्थना जैसी अस्फुट बड़बड़ सुनाई दे रही थी...

सिपाही थका-थका सोच रहा था : "जब बम फेकूँगा तो वह खिड़की से हटेगा या नहीं हटेगा?.."

ट्रामें घण्टियाँ नहीं बजा रही थीं। फुटपाथ पर भीड़ कोलाहल नहीं कर रही थीं। तूफान की साँस की तरह पीली और घनी तपिश शहर को क्लान्त कर रही थी। खाड़ी के तट पर पहाड़ियों की चट्टानों की तरह निश्चल और निरानन्द घर खड़े थे।

और खाड़ी में, हरित-नील जल में स्वच्छन्द डोलता जापानी विध्वंसक मूक खड़ा था।

हेडक्वार्टर के बाहरवाले कमरे में कनारी का सुरीला कण्ठ गूँज रहा था और हमेशा की तरह कहीं से रोने की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

क्रान्ति मुख्यालय का मोटा सचिव एक गाल से मुस्कराता हुआ बेंच पर बैठा लिख रहा था हालांकि मेजें सब खाली थीं।

धीमे स्वर में उत्तेजित वार्तालाप करते चार छापेमार दौड़ते गुजरे। गीले चमड़े और अलकतरे की बू आयी...

क्रान्ति मुख्यालय का सचिव मुहर ढूँढ रहा था पर मुहर के साथ वेर्शीनिन चला गया था। सचिव ने दवात उठायी और किसी को आवाज़ देना चाहता था...

...दूर, नगर के आँचल पर फायर हुआ। फायर की आवाज़ तेज़ थी, यह रायफल चलने की आवाज़ नहीं थी—अंग-अंग को हिला देनेवाला विशाल, भारी धमाका था...

फिर धीरे-धीरे मुख्य सड़कों तक सभी सड़कें मशीनगनों, रायफलों, ट्रामों के मन को आह्लादित करते शोर से मुखरित हो गयीं... जहाजों की गोदी चिंघाड़ उठी...

विद्रोह शुरू हो गया था।

और दो घण्टे बाद सागर की ओर से गहरी हरी ऊष्म और नम हवा बहने लगी।

...नकली मखमल की चौड़ी शलवारनुमा पतलूनें और चीनी गाढ़े की नीली क़मीज़ें पहने खनिक गुजर रहे थे। उनके हड़ियल चेहरे धूसर, काई जैसे बालों से ढके थे। उनकी गोल-गोल, पत्थरों को देखने की आदी आँखें चमक रही थीं...

घुटनों से नीचे, पिंडलियों तक लटके हाथोंवाले जेया की झीलों से आये मछेरे गुजर रहे थे। वे बर्बोट मछली की खाल की पतलूनें पहने थे और मछली की गन्ध से भरे उनके बाल वसन्त की घास की तरह लम्बे और घने थे...

हाँ, और सिखोते-आलीन पर्वतमाला से आये चीनियों जैसे नाक-नक्शेवाले चरवाहे अपने पुरखों की लम्बी नालोंवाले बन्दूकें उठाये अपने सधे, दृढ़ कदमों को रखते जा रहे थे।

और भी थे—खोरा नदी के तट से पतले होंठोंवाले, सागर की हवाओं के आदी चौड़ी छातियोंवाले सेंट ओल्गा की खाड़ी के मछेरे जिनका मुख्य भूमि के नरकटों में दम घुटने लगता था...

और भी बहुतेरे थे—साँवले चेहरेवाले मैदानी किसान पशुओं के थके झुण्ड की तरह मिलाकर तालबद्ध कदम रखते...

आगे-आगे मोटर में वेर्शीनिन पत्नी के साथ चल रहा था। पत्नी की चटकीले कपड़ों में लिपटी बलिष्ठ और विशाल देह दमक रही थी। फटे होंठों से खून रिस रहा था और पोशाक के नीचे से गोल-मटोल फूला पेट उभरा हुआ था। वे जड़ बैठे थे, इधर-उधर नज़रें नहीं दौड़ा रहे थे और बस पहाड़ियों जैसी ही सागर, चट्टानों और समुद्री वनस्पति की गन्धयुक्त तेज़ हवा कपड़ों को फड़फड़ा रही थी...

स्तम्भ पर बिजली के खम्भे का सहारा लिये खड़ा अमेरिकी संवाददाता अपनी छोटी-सी नोटबुक पर पेन्सिल चला रहा था। वह साफ़-सुथरा, चिकना-चुपड़ा था, वह चूहे की तरह, हड़बड़ी में प्रदर्शन को देख रहा था।

और सामने, सड़क के उस पार, अस्पताली चोगे जैसा बरानकोट, नीले गेटर और अंग्रेज़ी बूट पहने छरहरा सिपाही खड़ा था। वह गुजरते लोगों के सिरों के ऊपर से अमेरिकी को देख रहा था (प्रदर्शनों का वह आदी हो गया था, उनसे थक चुका था) और अमेरिकी को अपनी स्मृति में जकड़ने का प्रयास कर रहा था। पर वह पानी में मछली की तरह चिकना, फिसलन भरा और दुर्ग्राह्य था।

1922